भूमिका

प्रिय पाठकवृन्द !

आप लोगों से निवेदन करने में आता है, कि इस पुस्तक के छपवाने का मुख्य कारण यह है कि आप लोग इसको जयणायुत पढ़ेंगे तो सम्यक्त्व चारित्रादि का बहुधा लाभ उठावेंगे। श्रीवीतरागदेव का निर्मल मार्ग रागद्वेष रहित है, संसार का रस्ता अलग और मुक्ति का रस्ता अलग है। असंयती जीवों का जीवना वान्छै सो राग, मरणा वान्छै वो द्वेष, और संसारमयी समुद्र से तिरना वान्छै सो श्रीवीतरागदेव का धर्म है। जिन आज्ञा में धर्म आज्ञा बाहर अधर्म है ऐसा सरधना उसका नाम सम्यक्त्व है, जिस कर्त्तव्य में जिन आज्ञा नहीं है उस कर्त्तव्य से कदापि धर्म नहीं हो सकता है।

जब कोई कहे, ऐसा समझते हो तो फिर द्रव्य खर्च कर पुस्तकें क्यों छपाई ? उसका जवाब यह है कि हम श्रावक लोग देसव्रती हैं, सर्वव्रती नहीं हैं, हमारे जो सावद्य कार्य के त्याग हैं वे व्रत हैं जिसके त्याग नहीं वे अव्रत हैं, श्रावक तो अनेक कुकर्म, हिंसा, झूंठ, चोरी, स्त्री संग, परिग्रहादि अनेक तरह के सावद्य कार्य करता है लेकिन धर्म कदापि नहीं समझता है। पुस्तक छापना, छपवाना, द्रव्य खर्च करना आदि जो जो जिन आज्ञा बाहर के कार्य हैं वे सब सावद्य हैं; उससे एकान्त पाप कर्म ही उपार्जन होता है, इसलिये ये सब सांसारिक व्यवहार हैं, धर्म तो जयणायुत ज्ञान चरचा सीखने, सिखलाने और अनुमोदना करने से होता है। इसलिए पाठकों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक में कोई गलती किसी जगह रही हो तो उसे गुणीजन शुद्ध रीति से जयणायुत पढ़ें पढ़ावेंगे।

विशेष विनय यह है कि कृपाकर इस पुस्तक को उघाड़े तथा दीपक के चान्दने में न वांचें।

आपका हितेच्छु

श्रावक धनसुखदास हीरालाल आंचलिया।

विषय अनुक्रमणिका

विषय.	पृष्ठ.

॥ वन्दे जिनवरम् ॥

अणुकम्पा भीखुचारित्र ।

अ णु क म्पा ।

॥ दोहा ॥

पोते हणे हणावै नहीं, परजीवांरा प्राण ।
हणे तिणने भलो जाणे नहीं, ए नव कोटी पचपाण ॥ १ ॥
अभयदान दया कही, श्री जिण आगम मांहि ।
तोपिण ध्यंध उठावियो, जैनी नाम धराय ॥ २ ॥
त्यां अभयदान नहीं उलख्यो, दयारी पबर न कांय ।
भोलां लोगां आगलें, कूड़ा चोचल गाय ॥ ३ ॥
कहै साध बचावै जीवने, औरांने कहै तुं बचाय ।
भलो जाण बचीयां थकां, पिणपूछयां पलटे जाय ॥ ४ ॥

ढाल पहिली ।

(चतुर नर छोडो कुगुरुनो संग ॥ ए देशी)

इण साधांरा भेप में जी, बोले एहवी वाय । में पीयरछां छकायनाजी, जीव बचायां जाय ॥ चतुरनर ॥ समझो ज्ञान विचार ॥ १ ॥ एहवी करे परूपणा, पिण बोले बंध न होय । पलट जाय पूछयां थकां, ते भोलाने पबर न कोय ॥ च० ॥ २ ॥

पेट दुखे सो श्रावकांजी, जुदा हुवे जीव काय । साध आया तिण अवसरेंजी, हाथ फेरयां सुख थाय ॥ च० ॥ ३ ॥ साध पधारया देषने जी, गिरसत बोल्या वाय । थें हाथ फेरो पेट ऊपरें, सो श्रावक जीव्या जाय ॥ च० ॥ ४ ॥ जद कहे हाथ न फेरणोजी, साधांने कलपे नाय । थे कहेता जीव बचावणा, अबे बोलोने बदलो काय ॥ च० ॥ ५ ॥ गोसालानें वीर बचावीयोजी, तिण में कहो छो धर्म । सो श्रावक नहीं बचावीया, ज्यांरी सरधारो निकल्यो भर्म ॥ च० ॥ ६ ॥ गोसालार कारणेजी, लबध फोरी जगनाथ । सो श्रावक मरता देषनें, थे कांय न फेरो हाथ ॥ च० ॥७॥ धर्म कहो भगवंतने, तो पोते कांय छोडी रीत । सो श्रावक नहीं बचावीया, त्यांरी कुण मानसी परतीत ॥ च० ॥ ८ ॥ गोसालाने बचाविया में, धर्म कहो साक्षात । सो श्रावक मरता देषने, थे काय न फेरो हाथ ॥ च० ॥ ९ ॥ इम कह्यां जाबन ऊपजे, जब कूडी करे बकवाय । हिवे साध कहे तुमे सांभलोजी, गोसालारो न्याय ॥ च० ॥ १० ॥ साधांने लबध न फोरणीजी, सूत्र भगोती मांय । पिण मोह कर्मवस रागथी, तिलसुं लियो गोसालो बचाय ॥ च० ॥ ११ ॥ छलेस्या हुंती जद वीर में जी, हुंता आठाई कर्म । छद्मस्थ चूका तिण समेजी, मूरष थापे धर्म ॥ च० ॥ १२ ॥ छद्मस्थ चूक परयो तिकोजी, मूढे आणे बोल । पिण निरवद्य कोय म जाणज्योजी, अकल हियारी षोल ॥ च० ॥ १३ ॥ ज्यूं आणंद श्रावक ने घरेंजी, गोतम बोल्या कूर । परिया छद्मस्थ चूकं में, सुध हुये गया वीर हजूर ॥ च० ॥ १४ ॥ इम अवसउदे मोह आवियोजी, नहीं टालशक्या जगनाथ । एतो न्याय न जाणियोजी, ज्यारे मांहे

मूल मिथ्यात ॥ च० ॥ १५ ॥ गोसालाने नहीं बचावता, तो घटतो अछेरो एक । निश्चे हुणहार टले नहीं, थे समझो आण विवेक ॥ च० ॥ १६ ॥ गोसालाने बचावियो तो, वधीयो घणो मिथ्यात । लोहीठाण कियो भगवंतने, वले दोय साधारी घात ॥ च० ॥ १७ ॥ गोसालानें बचावीया में, धर्म जाणे जो स्वाम । दोय साध बचावत आपणा, बले करता उहिज काम ॥ च० ॥ १८ ॥ गोशाला नें बचाविया में, धर्म जाणे जिणराय । तो दोय साध न राख्या आपणा, उ किण विध मिलसी न्याय ॥ च० ॥ १९ ॥ जगत ने मरता देषनेजी, आडा न दीधा हाथ । धर्म हुतो तो आघो न काढता, एतो तिरण तारण जगनाथ ॥ च०॥२०॥ एहवो विवरो साध बतावीयोजी, सूत्र भगोती मांय । कोई कुबुद्धी करे कदागरोजी, सुबुधीरे आवै दाय ॥ च० ॥ २१ ॥ कहे साधांरा मुख आगलें, पंषी परियों महालाथी आय । तो मेहलां ठिकाणे हाथसुं, माहरे दया रहे घटमांय ॥ च० ॥ २२ ॥ तपसी श्रावक उपासरेजी, काउसग दीधो ठाय । त्यांने मृगी आय हेठो परथोजी, गावर भाजी जीव जाय ॥ च० ॥ २३ ॥ कोई गिरसत आयने इम कहेजी, थें मोटा छो मुनिराज । बेहठो न कीधो एहने, उ मरे छै गावर भाज ॥ च० ॥ २४ ॥ जुदतो कहे में साधछांजी, श्रावक बैठो करां केम । माहरे काम कांई गिरसतसुंजी, बोले पाधरा एम ॥ च० ॥ २५ ॥ श्रावक बैठो करे नहीं, पंषी मेले मालारे मांह । देषो पूरो अंधारो एहवोजी, ए चोडे भूला जाह ॥ च० ॥ २६ ॥ पंषी मालामांहे मेलतांजी संके नहीं मनमांय । श्रावकने बैठो कीयामें, धर्म न सरधे कांय ॥ च० ॥ २७ ॥ इतरी समझ पड़े नहीं, त्यामें समकित पावै केम ।

छकिया मोह मिथ्यातमें, बोले मतवाला जेम ॥ च० ॥ २८ ॥ कहे साधाने ऊंदर छुडावणोजी, मिनकी वांसे जाय । श्रावक बेठो करे नहीं, उ किण विध मिलसी न्याय ॥ च० ॥ २९ ॥ मूसादिकने बचावताजी, मिनकीने दुःख थाय । श्रावकने बेठो कियाजी, नही किणरे अंतराय ॥ च० ॥ ३० ॥ मूसादिकरे कारणेजी, मिनकी नसाडे डराय । श्रावक मरे भुष आगले, बेठो न करे हाथ संभाय ॥ च० ॥ ३१ ॥ आ परतक्ष वात मिले नहीजी, तावडा छाहडी जेम । ज्यां श्रीजिण मारग उलष्यो, त्यांरे हिरदे वेसे केम ॥ च० ॥ ३२ ॥ कहे लाय लागे तो ढांढा पोलने, साध काढे उघाडे दुवार । श्रावकने बेठो करे नही, आ सरधा करे पुवार ॥ च० ॥ ३३ ॥ ढांढादिकने पोलताजी, पप घणी छे तांहि । सो श्रावक हाथ फेरयां बचे, त्यांरी कांय न आणे मनमांहि ॥ च० ॥ ३४ ॥ कहै ढांढा पोल बचावसां, श्रावकरे न फेरां हाथ । एह अज्ञानी जीवरी, कोई मूरख माने वात ॥ च० ॥ ३५ ॥ कहे गाडा हेठे आवे डावरो तो, साधाने लेणो उठाय । श्रावकने बेठो करे नहीं, उ ऊंधो पंथ इण न्याय ॥ च० ॥ ३६ ॥ रित वरसाला रे समेजी, जीव घणा छे तांहि । लटाग जायाने कातराजी, पडियां मारगमांहि ॥ च० ॥ ३७ ॥ साधू वारे नीकल्याजी, जोयर मूके पाय । लारे ढांढा देष्या आवतां, पण जीवाने न ले उठाय ॥ च० ॥ ३८ ॥ जो बालक लेवे उठायनेजी, जीवाने न ले उठाय । तो उणरी सरधा रे लेषे, उणरे दया नही घटमांय ॥ च० ॥ ३९ ॥ जो बालक लेवे उठायने, उर जीव देषी ले नांहि । इण सरधारे करजो पारषां, केई रपे परो फंदमांहि ॥ च० ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

वंछे मरणो जीवणो, तो धर्मतणो नहि अंस ।
ए अणकंपा कीधां थकां, वधे कर्मनो वंस ॥ १ ॥
मोह अणकंपा जो करे, तिणमें रागने द्वेष ।
भोग वधे इंद्रियातणो, अंतर ऊंडो देख ॥ २ ॥
दया अणकंपा आदरी, तिण आतम आणी ठाय ।
मरता देखी जगतने, सोच फिकर नहि काय ॥ ३ ॥
कष्ट सह्या उपद्रवथी, पाल्या वरत रसाल ।
मोह अणकंपा श्रावकां, त्यांपण दीधी टाल ॥ ४ ॥
काचा था ते चल गया, होय गया चकचूर ।
सैंठा रह्या चलिया नहीं, त्यानें वीर वखाण्या सूर ॥ ५ ॥

ढाल बीजी ।

(जीव मारे ते धर्म आछो नहीं ॥ ए देशी ॥)

चंपानगरी ना वाणीया, ज्यांज भरि समुंद्र जायरे । हिवे तिण अवसर एक देवता, त्यांने उपसर्ग दीधो आय रे । जीव मोह अणकंपा न आणीये ॥ १ ॥ मिनका स्याल खांधे बेहसाणियां, गले पहेरी छे रुंडमाल रे । लोहीराधसुं लिप्यो शरीरने, हाथें खडग दीसे विकराल रे ॥ जी० ॥ २ ॥ लोग धडधड लागा धूजवा, उर देव रह्या मन ध्यायरे । अरणक श्रावक डिगीया नहीं, तिण काउसग दीधो ठाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ तिण

साधारी अणसण कीयो, धर्मध्यान रह्यो चित्त ध्याय रे । सगलां ने जाण्या डुबता, मोहकुरणा न आणी काय रे ॥ जी० ॥ ४ ॥ अरणकने डगाववा, देव विधविध बोले वायरे । तुं धरम न छोडसी, तारी जाज डुबाउं जलमांयरे ॥ जी० ॥ ५ ॥ उंची उपाड नीची नांखने, करसुं सगलां री घात रे । काली बोली अमावसरा जाण्या, मानरे तूं अरणक वातरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरशण म्हारा चरतने, इणरो कीधो विघन न थाय रे । हुंतो श्रावक छुं भगवानरो, मोने न सके देव दिगायरे ॥ जी० ॥ ७ ॥ लोग विलविल करता देखने, अरणकरो न विगरयो नूर रे । मोहकुरण न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूररे ॥ जी० ॥८॥ देव धिन धिन अरणकने कहे, तुंतो जीवादिकनो जाणरे । सुधर्मा सभामधे ताहरा, इन्द्र कीधा घणा वखाणरे ॥ जी० ॥ ९ ॥ अरणक श्रावकना गुण देखने, एतो आया देवांरी दोयरे । दोय कुंडलरी जोडी आपने, देव आयो जिण दिस जायरे ॥ जी० ॥ १० ॥ नमीराय रिषी चारित लियो, तेतो बाग में उतरयो आयरे । इन्द्र आयो तिखने परषवा, तेतो किणविध बोले वायरे ॥ जी० ॥ ११ ॥ थारी अगन करी मिथला बलै, एकतास्युं साहमो जोयरे । अंतेउर बलतां मेलसी, आतो वात सिरे नहीं तोयरे ॥ जी० ॥ १२ ॥ दुष वपरायो सारा लोक में, विलषा देख पुत्र रतनरे । जो तूं दया पालणने ऊठिउ, तो तूं करने थांरा जतनरे ॥ जी० ॥ १३ ॥ नमी कहेवसुं जीवुं सुषे, म्हारी पल पल सफली जातरे । आतो मिथलानगरी दाझतां, म्हारो बले नहीं तिलमातरे ॥ जी० ॥ १४ ॥ म्हारे हरष नहीं मिथला रह्यां, बलीया नहीं सोग लिगाररे । मतो सावज व्याण त्यागीतिका, रहीं बली नचावे अणगाररे ॥जी०॥ १५॥

नमीराय रिषि आणी नहीं, मोहअणकंपारी वातरे । समभव राखे मुगतें गया, करी आठ कर्मोरी घातरे ॥ जी० ॥ १६ ॥ उतो केशव केरो बंधवो, उतो नामे गजसुकमालरे । तिण दिष्या लेई काउसग कियो, सोमल आयो तिण कालरे ॥ जी० ॥ १७ ॥ माथे पाल बांधी माटी तणी, मांहि घाल्या लाल अंगाररे । कष्ट सह्यो वेदना अतिघणी, नेम करुणान आणी लिगाररे ॥जी०॥१८॥ श्री नेम जिणेसर जाणता, होसी गजसुकुमालरी घातरे । पहिला अणकंपा आणी नहीं, उर साधन मेल्या साथरे ॥ जी० ॥ १९ ॥ श्री वीरजिणंद चोवीशमा, जिणकलपी मोटा अणगाररे । ज्यांने देव मिनष त्रिजंचना, उपसर्ग ऊपना अपाररे ॥ जी० ॥ २० ॥ संगम देवता भगवान ने, दुष दांधा अनेक प्रकाररे । अनारज लोका वीरने, स्वानादिक दीधा लगायरे ॥ जी० ॥ २१ ॥ चोसठ इन्द्र महोछव में आविया, दिष्यारे दिन भेला होयरे । पिण कष्ट पड्यो श्री वीरने, न आया उपसर्ग टालण कोयरे ॥ जी० ॥ २२ ॥ दुख देता देखी भगवानने, अलगा न कीधा आयरे ॥ समादिष्टीदेव हुंता घणा, पण छोडावणारी न काढी वायरे ॥ जी० ॥ २३ ॥ देवां जाणयो श्री वर्द्धमानरे, उदै आया दिसे छे कर्मरे ॥ अणकंपा आणी विचमें पड्यां, उतो जिण भाण्यो नहीं धर्मरे ॥ जी० ॥ २४ ॥ धर्म हुंतो तो आघो न काढवां, वले वीरने दुषीया जाणरे । परिसा देण आया तेहने, देव अलगा करता ताणरे ॥ जी० ॥ २५ ॥ आतो मछ गलागल मंड रही, सारा दीप समुद्रमांहि रे । भगवंत कहता जो इंद्रने, तो थोहरा में देता मिटायरे ॥ जी० ॥ २६ ॥ पडती जाणे अंतराय तो, अचित पवाडत पूररे । एहवी शक्ति घणी छे इंद्रनी, तिणथी

कर्म न होवै दूररे ॥ जी० ॥ २७ ॥ चुलणी पियाने पोसा मधे, देव दीधा छे दुप आयरे । कुण कुण हवाल तिणमें किया, ते सांभलज़ो चित्त लायरे ॥ जी० ॥ २८ ॥ तीन बेटारा नवसला कीया, तिणरा मूढढा आगे लायरे । तेल उकाल नें मांहि तल्या वलथलतासुं छटकायेर ॥ जी० ॥ ॥ २६ ॥ समपरिणामे वेदना खमी, जांणे आपणा संच्या कर्मरे । करुणा न आणी अंग जातरी, तिण छोड्यो नहिं ज़िणधर्मरे ॥ जी० ॥ ३० ॥ माति मारणारो कह्यो नहीं, तेतो सावज जाणी वायरे । करुणा न आणी मरतां देखने, सेठो रह्यो धर्म ध्यान मांयरे ॥ जी० ॥ ३१ ॥ देव कहे तुं धर्म न छोडसी, थारे देवगुरु सम छे मायरे । तिणने मारूं विध आगली, आरा मुंहडा आगे लायरे ॥ जी० ॥ ३२ ॥ जद तुं आरतध्यान ध्यायने, पडसी माठी गत में जायरे । इम सुणने चूलणी पीया चल गयो, माने राषणरो करे उपाय रे ॥ जी० ॥ ३३ ॥ उतो पुरष अनारज कहे जिसो, जालराषुं ज्युं न करे घातरे । उतो भद्रा वचावण उठिउ, इणरे थांभो आयो हाथरे ॥ जी० ॥ ३४ ॥ अणकंपा आणी जणणीतणी, तो भागा वरतने नेमरे । देखो मोह अणकंपा एहवी, तिण में धर्म कहीजे केमरे ॥ जी० ॥ ३५ ॥ चूलणी पीयाने स्वरादेवना, चूलसतकने सक डालरे । यां च्यारांरा मारया दीकरा, देव तलीयो तेल उकालरे ॥ जी० ॥ ३६ ॥ जो बेटाने मरता देखने, नाणी मोहअणकंपा एमरे । उथ्यो मात त्रियादिक राखवा, तो भागा वरतने नेमरे ॥ जी० ॥ ३७ ॥ मात त्रियादिकने राषतां, भागा वरतने वांधिया कर्मरे । तो साध जाय विचमें पड्यां, त्याने किण विध होसी धर्मरे ॥ जी० ॥ ३८ ॥ चेडाने कूण करी वारता,

निरावलिका भगोती साखरे । मानव मुवा दोय संग्राममें, एक कोडने एंसी लाखरे ॥ जी० ॥ ३६ ॥ भगवंत अणकंपा आणी नहीं, पोते न गया न मेल्या साधरे । याने पहिला पण वरज्या नहीं, तेतो जीवारी जाण विराधरे ॥ जी० ॥ ४० ॥ एमां तो दया अणकंपा जाणता, तो वीर विष्टी ले जायरे । सघलारे साता उपजावता, एतो थोरामें देता मिटायरे ॥ जी० ॥ ४१ ॥ कूणक भगत भगवानरो, चेडो बारे वरतधाररे । इन्द्रभीर आया ते समकिती, ते किणविध लोपता काररे ॥ जी० ॥ ४२ ॥ ज्ञानदर्शन चारित्र मांहिलो, किणरे वधतो जाणे उपायरे । करे अणकंपा तव जीवरी, वीर वीगर बुलाया जायरे ॥ जी० ॥ ४३ ॥ समंद्पाल सुखामें झिल रह्यो, संसार विषे सुख लागरे । तिण चोरने मरतो देखने, उपनो उतकृष्टो परम वैरागरे ॥ जी० ॥ ४४ ॥ चारित्र लिया कर्म काटवा, जाणे मोक्षतणो उपायरे । करुणा न आणी चोररी, छुडावणरी न काढी वायरे ॥ जी० ॥ ४५ ॥ साध श्रावकनी एक रीत छे, तुमे जुवो सूतररो न्यायरे । देखो अंतरमांहे विचारने, कूडी कांय करो बकवायरे ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

अणकंपानें आदरी, कीजो घणा जतंन ।
जिणवरना धर्म मांहिलों, समकित पाय रतंन ॥ १ ॥

गाय भैंस आक थोरनो, ए च्याररूं ही दुध ।
ज्युं अणकंपा जाणजो, मन में आणी सूध ॥ २ ॥

आक दूध पीतां थकां, जुदा हुवे जीवकाय ।
ज्युं सावज अणकंपा कियां, पाप कर्म बंधाय ॥ ३ ॥
भोलें हीमत भूलजो, अणकंपारे नाम ।
कीजो अंतर पारिषा, ज्युं सीजे आतम काम ॥ ४ ॥
अणकंपा ने आगन्या, तीर्थंकर नी होय ।
सावज निरवज उलखे, तेतो विरला कोय ॥ ५ ॥

ढाल त्रीजी ।

(धिग धिग छै नागश्री ब्राह्मणीने ॥ ए देशी)

मेघकुमर हाथीरा भव में, जिणभाषी दया दिल आणी । ऊंचो पग राख्यो सुसलो न मार्यो, आ करणी श्री वीर वखाणी । आ अणुकंपा जिन आगन्या में ॥ १ ॥ कष्ट सह्यो तिण पाप सुं डरते, मन दिढ सेंठी राखी तिण काया । वलता जीव दावानल देखी, सुंढसुं गिर गिरवा रे न लाया ॥ आ० जि० ॥ २ ॥ परत संसार कियो तिण ठामे, ऊपनो श्रेणिकरे घर आई । भगवंत आगल दीक्षा लीधी, पहेला अधेन गिनाता मांई ॥ आ० जि० ॥ ३ ॥ मांडलो एक जोजनरो कीधो, घणा जीव वचीआ तिहां आई । तिण वचियांरो धर्म न चाल्यो, समकित आया विना समज न कांई ॥ आ० जि० ॥ ४ ॥ नेमकुमर परणीजण चाल्या, पसु पंखी देख दया दिल आणी । इसडो काम सिरे नहीं मुझने, मारे काज मरे वहु प्राणी ॥ आ० जि० ॥ ५ ॥ परणीजणसु परणाम फिरीरिया, राजमतीने ऊभी छिटकाई । कर्मतणे बंधसु

नेम डरिया, तोडी आठ भवांरी सगाई ॥ आ० जि० ॥ ६ ॥ आपसुं मरता जीव जाणीने, कडवा तुंबारो कीधो आहारो। कीड्यारी अणकंपा आणी, धिन धिन धर्म रुचि अणगारो ॥ आ० जि० ॥ ७ ॥ फोरवी लब्धि अणकंपा आणी, गोसालाने वीर बचायो। छलेस्या छद्मस्थज हुंता, जद मोह कर्म वस रागज आयो ॥ आ० जि० ॥ ८ ॥ गोसालो असंयती कुपात्र तिणने, साज शरीरनो दीधो। धर्म जाणतां तो जगत दुखी थो, वले वीर उ काम कदे न कीधो ॥ आ० जि० ॥ ९ ॥ तेजोलेश्या मेली गोसाले बाल्यां, दोए साध भस्म करी काया। लब्धधारी साधु हुंता घणा, मोटा पुरुष त्यांने क्युं न बचाया ॥ आ० जि० ॥ १० ॥ जिण रिषिए अणकंपा कीधी, रेणादेवी साहमो तिण जोयो। सेलपजष हेठो उतारयो, देवी आय तिण पडग में पोयो ॥ आ० जि० ॥ ११ ॥ भगता हिरणगमेषी सुलसा, अणकंपा आणी विलपी जाणी। छ बेटा देवकीरा जाया, सुलसारे घरे मेल्या आणी ॥ आ० जि० ॥ १२ ॥ जगनरें पाडे हरकेसी आया, असणादिक त्यांने नहीं दीधो। जब देवता अणकंपा कीधी, रुद्रवमंता ब्राह्मण कीधो ॥ आ० जि० ॥ १३ ॥ मेघकुमर गरभमांहे हुंता, सुखरे तांही किया अनेक उपायो। धारणीराणी अणकंपा आणी, मनगमता असणादिक पायो ॥ आ० जि० ॥ १४ ॥ किसनजी नेम वांदण ने जातां, एक पुरुष ने दुखिउ जाणी। साज दीयो अणकंपा कीधी, एक ईंट उठाय उणरे घर आणी ॥ आ० जि० ॥ १५ ॥ दुखिया दोरा दलिद्री देखी, अणकंपा उणरी किण आणी। गाजर मूलादिक सचित पपावे, वले पावे काचो अणगल पाणी ॥ आ० जि० ॥ १६ ॥ आपसुं

मरता जीव जाणीने, टल जाय साध संकोची काया । आप हणे नहीं पाप सुं डरता, अणकंपा आण मेले नहीं छाया ॥ आ० जि० ॥ १७ ॥ ऊपाडी जो मेले छाया, असंयतीरी वेयावच्च लागे । आ अणकंपा साध करे तो, त्यांरा पांचू ही महाव्रत भागे ॥ आ० जि० ॥ १८ ॥ सो साध विपमकाल उनाले, पांणी विना होय जुदां जीव कायां । अणकंपा आणी असुध वहिरावे, छकायरा पीहर साध वचाया ॥ आ० जि० ॥ १९ ॥ गजसुकमालने नेमरी आग्या, कावसग कीयो मसाणांम जाई । सोमल आय पीरा सिर ठविया, सीस न धुणो दया दिल आई ॥ आ० जि० ॥ २० ॥ व्याध अनेक कोढादिक सुणने, तिण ऊपर वैद चलाई ने आवे । अणकंपा आणी साजो कीधो, गोली चूरण दे रोग गमावे ॥ आ० जि० ॥ २१ ॥ लवधधारी रा पेलादिक थी, सोलही रोग सरीरसुं जावे । वले जाणे इण रोगसुं साध मरसी, अणकंपा आणी नहीं रोग गमावे ॥ आ० जि० ॥ २२ ॥ जो अणकंपा साधु करे तो, उपदेश दे वैराग चढावे । चोपे चित पेलो हाथ जोडे तो, च्यारू ही आहाररा त्याग करावे ॥ आ० जि० ॥ २३ ॥ गिरसत भूलो ऊजार वन में, अटवीने वले ऊजर जावै । अणकंपा जाणी साध मारग वतावे, तो चार महिनारो चारत जावे ॥ आ० जि० ॥ २४ ॥ अटवीमे वले अत्यत दुषी देखी, चारुही सरणा साध धरावे । मारग पूछे तो मुंनज साझें, वोले तो भिन भिन धर्म सुणावे ॥ आ० जि० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

दया दया सहुको कहे, ते दया धर्म छै ठीक ।
दया उंलपने पालसी, त्यांने मुगत नजीक ॥ १ ॥
दया तो पहिलो वरत छै, साध श्रावक करो धर्म ।
पाप रुके ज्यां सुं आवतां, नवा न लागे कर्म ॥ २ ॥
छकाय हणे हणावे नहीं, हणतां भलान जाणे ताय ।
मन वचने काया करी, ए दया कही जिणराय ॥ ३ ॥
दया चोखे चित पालियां, तिरे घोर रुद्र संसार ।
आहीज दया प्ररूपतां, भले जीव उतरे पार ॥ ४ ॥
पिण एक नाम दया लोकी करो, तिणरा भेद अनेक ।
त्यां में भेषधारी भूला घणा, सुणजो आण विवेक ॥ ५ ॥

ढाल चोथी ।

दरवेलाय लागी भावे लाय लागी, दरव छै कठोने भावे कूवो । ए भेद न जाणे मूल मिथ्याती, संसार ने मुगतरो मारग जूवो । भेष धरने भूलांरो निरणो कीजो ॥ १ ॥ कोई दरवेलाय वलताने राखे, दरवे कूवे पडताने काल्ह बचायो । एतो उपकार कियो इण भवरो, विवेक विकल त्यांने खबर न कायो ॥ भे० ॥ २ ॥ घट में ज्ञान घालिने पाप पचखावे, तिण परतो राख्यो भवकूवा मायो । भावे लायसु वलताने काढे रिखेसर, तेपिण गहिलां भेद न पायो ॥ भे० ॥ ३ ॥ सूने चित्त सूतर वांचे मिथ्याती, दरवने

भावरा नहीं निवेडा । परवार सहित कुपंथ में पडिया, त्यां नरकासु सनमुप दिया डेरा ॥ भे० ॥ ४ ॥ गिरसत ने उपद् देइने, अनेक उपाय कर जीव बचायो । ए संसार तणो उपकार किया में, मुगतरो मारग मूढ बतायो ॥ भे० ॥ ५ ॥ करे जंतर मंतर भाडा भपाटा, सरपादिकरो जैर देवे उतारी । काढे डाकण साकण भूत जपादिक, तिणमांहे धरम कहे सांगधारी ॥ भे० ॥६॥ एहवा किरत बसावज जाणी, त्रिविधे त्रिविधे साधां त्यागज कीधो । भेषधारी लोकांसुं मिलने अज्ञानी, जीव जीवावणरो सरणो लीधो ॥ भे० ॥ ७ ॥ ए जीव बचावणो मुखसु कहे पिण, काम पड्यां बोले फिरती वाणो । भोला ने भरम में पाड विगोवा, ते पण डुबे छै कर कर ताणो ॥ भे० ॥ ८ ॥ कीडी मांकादिक लटागजायां, ढांढारा पग हेठे चीथ्या जावे । भेषधारी कहै में जीव बचावां, तो चुण चुण जीवांने कांय नै उठावे ॥ भे० ॥९॥ जो आयो चोमासो उपदेश देवे तो, दस वीस जीवां ने दोरा समभावे । जो उदम करे च्यार महिनारे मांहे, तो लाखां गमे जीव तेहिज बचावे ॥ भे० ॥ १० ॥ सो घररे आंतरे कोई लेवे संथारो, तो तुरन्त आलस छोड देवण जावे । सो पगलां गयां जीव लाखां बचे छै, त्यां जीवांने जाय क्युं न जीवावे ॥ भे० ॥ ११ ॥ घर छोडतो जाणे सो कोसां ऊपरे, तो सांग पहिरावण सतावसुं जावै । एक कोस गया जीव कोडा बचे छे, त्यां जीवने जाय क्युं नही बचावे ॥ भे० ॥ १२ ॥ जबतो कहे माहरो कलप नही छे, मैंतो संसारसुं हुवा न्यारा । कबही कहै में जीव जीवाया, ए वाणी न बोले इकणधारा ॥ भे० ॥ १३ ॥ साधुतो आपणा वरत राखणने, त्रिविधे त्रिविधे जीव नहीं

संतावै । संसारमांहि जीव पचरह्या छे, तिणसुंतो साध हुवा निरदावे ॥ भे० ॥ १४ ॥ जीवणो मरणो त्यांरो नचावे, समझता देषे तो साध समझावै । ज्ञानादिक गुण घटमांहि घाले, मुगत नगरने संत पहुंचावे ॥ भे० ॥ १५ ॥ गिरसतरा पग हेठ जीव आवे, तो भेषधारी कहे में तुरत बतावां । तेपण जीव बचावण काजें, सरवही जीवांरो जीवणो चावां ॥ भे० ॥ १६ ॥ अव्रती जीवांरो जीवणो चावे, तिण धरमरो परमारथ नहि पायो । सरधा अगियानीरी पग पग अटके, ते न्याय सुणजो भवियण चित ल्यायो ॥ भे० ॥ १७ ॥ गिरसतरे तेल जाये मूणफूटां, कीड्यांरां दरमांहि रेला आवे । विचमें जीव आवे तिणसुं वहतां, तेल चुहो चुहो अगनमें जावे ॥ भे० ॥ १८ ॥ जो अगन ऊठे तो लाय लागे छे, त्रस थावर जीव मारया जावे ॥ गिरसतरा पग हेठे जीव बतावे, तो तेल ढुले ते वासण क्युं न बतावे ॥ भे० ॥ १९ ॥ ए पगसुं मरता जीव बतावे, तेलसु मरता जीव नही बतावे ॥ आ पोटी सरधा ऊघाडी दीसे, पण अभ्यंतर अंधारो नजर न आवे ॥ भे० ॥ २० ॥ भेषधारी विहार करतां मारगमें, त्यांने श्रावक साहमां मिलीया आयो ॥ मारग छोडने ऊजर पडिया, त्रस थावर जीवांने चीथतां जायो ॥ भे० ॥ २१ ॥ श्रावकां ने ऊजाडमें पडिया जाणे, त्रस थावर जीवांने मरता देषे ॥ गिरसतरा पग हेठे जीव बतावे, तो मारग बतावणा इण लेषे ॥ भे० ॥ २२ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे अज्ञानी, ठाले बादल अंबर जिम गाजे । श्रावक उजारमें मारग पूछे, जद मुन साजे बोलता काय लाजे ॥ भे० ॥ २३ ॥ एक पग हेठे जीव बतावे, त्यांमें थोडासां जीवांने बचता जाणे ।

श्रावका ने उजारसुं मारग घाल्यां, घणा जीव वचे त्रस थावर भाणो ॥ भे० ॥ २४ ॥ थोडी दूर वतायां थोडो धरम हुवे तो, घणी दूर वतायां घणो धर्म जाणो । घणी दूररो नाम लियां वक ऊठे, ते घोटी सरधाए एह नाणो ॥ भे० ॥ २५ ॥ कोई आंधो पुरुष गामांतर जातां, आंप विना जीव किणविध जोवे । कीडी मांकादिक चींथतो जावे, त्रस थावर जीवारां घमसाण होवे ॥ भे० ॥ २६ ॥ भेपधारी सहेजे साथेही जातां, आंधारा पगसुं मरता जीवांने देखे । ए पग पग जीवांने नही वतावे, तो खोटी सरधा जाणजो इण लेखे ॥ भे० ॥ २७ ॥ त्यांने वताय वतायने जीव वचावणा, पुंज पुंज ने करणा दूरो । इण धर्म करसुं तो पोतेही लाजे, तो बीजो कुण मानसी उमत कुरो ॥ भे० ॥ २८ ॥ इल्यांसुं लीयासहित आटो छे, गिरसतरें ढुलें मारग मायो । आतपती रेत उनालारी तिणमें, पडत प्रमाण होय जुदा जीव कायो ॥ भे० ॥ २९ ॥ गिरसत नहि देपे आटो ढुलतो ते भेप धरयांरी निजरां आवे । ए पग हेठे जीव वतावे अज्ञानी, तो आटो ढुलता जीव क्यु नहीं वतावे ॥ भे० ॥ ३० ॥ इत्यादि गरिसतरे अनेक उपधसुं, त्रस थावर जीव मूवा अने मरसी । एने पग हेठे जीव वतावे, त्यांने सघलीही ठोड वतावणा पडसी ॥ आ० ॥ ३१ ॥ किणहीक ठोरे जीव वचावे, किणहीक ठोर शंका मन आणे । समझ पड्या विण सरधा परूपे, पीपल वांधी मूरख जिम ताणे ॥ आ० ॥ ३२ ॥ पग पग जाव अटक ता देपे, कदा सरव आरे हुवा अज्ञानी भूलो । कूर कपट करी मत कुसले रापणने, विण वुधवंत वात न माने मूलो ॥ आ० ॥ ३३ ॥ गिरसतरो न वंछणो जीवणो मरणो, वांछ जाव तायां

लागे पाप करमो । रागद्वेषरहित रहिणो निरदावे, एहवो निकेवल श्री जिणधरमो ॥ आ० ॥ ३४ ॥ समोसरण एक जोजन मांडलामें, नर नारयांनां वृंद आवे ने जावे । अरिहंत आगल वाणी सुणवा, भगवंत भिन भिन धर्म सुणावे ॥ आ० ॥ ३५ ॥ चार कोसमांही त्रस थावर होता, मरगया जीव उराणे आया । नर नारयांरा पगसुं विना उपयोगें, प " भगवंत कठेही न दीसे बताया ॥ आ० ॥ ३६ ॥ नंदण मिणहार डेडको हुयने, वीर वांदण जातां मारग मायो । तिणने चीथ मारयो सेणकने बछेरे, वीर साध रांहसा मेल क्युं न बचायो ॥ आ० ॥ ३७ ॥ गिरसतरा पग हेठे जीव आवे तो, साधमने बचावणो कठे ही न चाल्यो । भारी करमां लोकांने भिसट करणनें, उपिण धांचो कुधरां वाल्यो ॥ आ० ॥ ३८ ॥ साधांरो नाम तो अलगो मेली, श्रावकांरी चरचा मुख ल्यावे । साध साधसुं मरता जीव बतावे, ज्युं श्रावक श्रावकने जीव बतावे ॥ आ० ॥ ३९ ॥ सिद्धांतरा वल विना बोले अज्ञानी श्रावकांरे संभोग साधां ज्युं बतायो । ए गालांरा गोला मुखसुं चलावे, ते न्याय सुणजो भवियण चित ल्यायो ॥ आ० ॥ ४० ॥ साधसुं मरता जीव देखीनें, संभोगी साधु दपी जो नहीं बतावे । तो अरिहंतरी आगन्या लोपावे, पाप लागने विराधक थावे ॥ आ० ॥ ४१ ॥ साधु तो साधुने जीव बतावे, तो पोतारो पाप टालणरे काजे । श्रावक श्रावकने जीव नहीं बतावे, तो किसो पाप लागे किसो व्रत भाजे ॥ आ० ॥ ४२ ॥ श्रावक श्रावकने न बतायां पाप लागे कहे, उ भेष धारयां मत काढ्यो कूरो । श्रावकां रे संभोग साधां ज्युं होवे तो, पग पग बांध जाय पापरो पूरो ॥ आ० ॥ ४३ ॥ पाट बाजोटादिक साध यारे मेली,

ठरडे मातरादिक कारज जावै। लारे उर साधु त्यांने भीजता देपे, जो ए नला आवे तो प्राछत आवे ॥ आ० ॥ ४४ ॥ गरढा गिलाण साधु त्यांने भीजता देपे, जो उलें न श्री जिण आज्ञा वारे। महा मोहणी करमतणो बंध पाडै, एहलोक ने परलोक दोनों विगारे ॥ आ० ॥ ४५ ॥ आहार पाणी साधु वेहारीने आणे, संभोगी साधुने वांट देवारीरीतो। आप आण्यो जोइ धकोलेवे, तो अदत्त लागेने जाय परतीतो ॥ आ० ॥ ४६ ॥ इत्यादिक सांधा साधांरे अनेक बोलांरो, संभोगी साधां सुं न कीयां अटके मोपो। यांहीज पोलांरो श्रावक श्रावकांरे, न करे तो मूल न लागे दोपो ॥ आ० ॥ ४७ ॥ श्रावकांरे संभोग साधां ज्युं होवे, तो श्रावक श्रावकने पिण इणविध करणो। ए सरधारो निरणो न काढे अज्ञानी, त्यां विटल थई लियो लोकांरो सरणो ॥ आ० ॥ ४८ ॥ जो ए श्रावक श्रावकरा नहीं करे तो, भेष धरयां रे लेपे भागल जाणो। सरावकां रे संभोग साधां ज्यूं परूपे, तेपर गया मूरप उलटी ताणो ॥ आ० ॥ ४९ ॥ श्रावकांरे संभोग तो श्रावकांसुं छे, वले मिथ्यात्वीसुं रापै भेलापो। त्यांरा संभोग तो अव्रत में छे, तिकै त्याग कियां सुं टलसी पापो ॥ आ० ॥ ५० ॥ त्यांसुं सरीरादिकरो संभोग टालीने, ज्ञानादिकरो रापे मेलापो। उपदेश देई निरदावे रहणो, पेलो समझीने टाले तो टलसे पापो ॥ आ० ॥ ५१ ॥ लाय लागी जो गिरसत देपे, तो तुरत बुझावे छकायने मारी। एसा वजकिर तव लोक करे छे, तिणमांही धर्म कहे सांगधारी ॥ आ० ॥ ५२ ॥ कहे अगन पाणी छकाय मुई त्यांरा, थोडोसो पाप कहे हुवे कानी। उर जीव वच्या त्यांरो धरम बतावे, लाय

बुझावणांरी करे सानो ॥ आ० ॥ ५३ ॥ ए धरमने पापरो मिसर परूप, तोटा विचे लाभ घणो बतावे । त्यां भेषधारयांरी परतीत आवे, तो लाय बुझावण दोड्या दोड्या जावे ॥ आ० ॥५४॥ एहवी दया बतावे लोकांने, छकायरा पीहर नाव धरावे । मिसर धरम कहे तेउकायने मारयां, पिण परसण पूछें आरो जावन आवे ॥ आ० ॥ ५५ ॥ छकाय जीवांरी हिंसा कीधां, उर जीव बचे त्यांरो कहे छे धर्मो । ए सरधा सुण सुणने बुधवंता, पोटा नाणा जिम काढिउ भरमो ॥ आ० ॥ ५६ ॥ कोई नित नित पांचशो जीवांने मारे, कोई करे कसाई अनारज करमो । जो मिसर धरम हुवे अगन बुझायां, तो इणने ही मारयां हुवे मिसर धरमो ॥ आ० ॥ ५७ ॥ लायसुं बलता जीव जाणीने, छकाय हणीने लाय बुझाई । जो कसाईसुं मरता जीवांने देखी, कोई जीव बचावण हणे कसाई ॥ आ० ॥ ५८ ॥ जो लाय बुझांया जीव बचे तो, कसाईने मारयां बचे घणा प्राणो । लाय बुझायां कसाईनें मारयां, दोयांरो लेखो सरीषो जाणो ॥ आ०॥५६॥ वले सिंघ सरपादिक चीता बघेरा, दुष्टी जीव करे परघातां । जो मिसर धरम छे लाय बुझायां, तो यांनेही मारयां घणोर साता ॥ आ० ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

मळ गलागल लोकमें, सबला ते निबलाने पाय ।
तिणमें धरम परूपियो, कुगुरां कुबध चलाय ॥ १ ॥
मूला जमीकंद पबारीयां, कहेछे मिसर धर्म ।
आ सरधा पाखंडीरी आदरयां, जाडा बंधसी कर्म ॥ २ ॥

मूला पवायां पाणी पावियां, सचतादिक दरब अनेक ।
पाधां पवाड्यां भलो जाणियां, थांती नारी विध एक ॥ ३ ॥

एतो न्याय न जाणियो, उजर पडिया अजाण ।
करण जोग विगराविया, ए मिथ्यादिष्टी अनाण ॥ ४ ॥

कुहेत लगावे जीवने, हिंसा धर्म भापंत ।
हवे सात दृष्टांत साधु कहे, ते सुणजो कर षंत ॥ ५ ॥

मूला पांणी अगननो, चोथो होकारो जाण ।
त्रसजीव कलेवरतणो, सातमो भिनप वपाण ॥ ६ ॥

त्यांमें तीन दिष्टंत करडा कह्या, ते जाणे अज्ञानी विरुद्ध ।
समदृष्टि जिणधर्म उलख्यो, ते न्यायसुं जाणे शुद्ध ॥ ७ ॥

केशीकुमर दिष्टंत करडा कह्या, तो छोडी परदेशी रूढ ।
न्याय मेल हुवो समकिती, झगरो झाले ते मूढ ॥ ८ ॥

जिणरी वुध छे निरमली, ते लेसी न्याय विचार ।
सुणे भारी करमा जीवरा, तो लखाने छे त्यार ॥ ९ ॥

हवे सात दिष्टंत धुरसुं चले, आगे घणो विस्तार ।
भिन्न भिन्न अवियण सांभलो, अंतर आंष उघार ॥१०॥

ढाल पांचमी ।

(वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी)

मूलां पवायां मिसर कहे, लगावे हो पोटा दिष्टांत एह । पाप लागो मूलांतणो, धरम हुवो हो पाधां वचियां तेह । भवियण जिण धर्म उलषो ॥ १ ॥ कहे कूवा वाव पिणाविया, हिंसा हुई हो तिणरा लागा कर्म । लोक पिये कुसले रह्या, साता पामी हो तणरो हुवो धर्म ॥ भ० ॥ २ ॥ इम कहे मिसर परूपतां, नहीं शंके हो करता बकवाय । इण सरधारो परसण पूछियां, जावन आवे हो जब लोक लगाय ॥ भ० ॥ ३ ॥ हवे सात दिष्टंतरी थापना, त्यांरी सुणजो हो विवरासुध बात । निरणो कीजो घट भीतरे, बुधवंता हो छोड़ने पषपात ॥ भ० ॥ ४ ॥ सो मनषांने मरता राखिया, मूला गाजर हो जमीकंद पवाय । वले मरता राषथां सो मानवी, काचो पाणी हो त्याने अणगल पाय ॥ भ० ॥ ५ ॥ पोह माह महिने ठारी पडे, तिण काले हो बाजै सीतल वाय । अचेत पड्यां सो मानवी मरतां, राष्यां हो त्यांने अगन लगाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ पेट दूषे तलफल करे, जीव दोरा हो करे हाय विराय । साता वपराई सो जणा, मरता राष्यां हो त्यांने होकोपाय ॥ भ० ॥ ७ ॥ सो जण दुरभष काल में, अन विना हो मरे ऊजर मांय । कोई एक मारे त्रसकायने, सो जिणाने हो मरता राष्या जिमाय ॥ भ० ॥ ८ ॥ किणहिक काले अन बिना, सो जणारा हो जुदा हुवे जीवकाय । सेजे कलेवर सूवो परियो, कुसले राष्या हो त्याने एह पत्राय ॥ भ० ॥ ६ ॥

वले मरतां देषी सो रोगला, ममाई चीण हो तेतो साजा न थाय । कोई ममाई करे एक मिनपरी, सो जिणारे हो साता कीधी बचाय ॥ भ० ॥ १० ॥ जमीकंद खवायां पाणी दीयां, त्यांमें थापे हो पापने धर्म दोय । तो अगन लगाय हो कोपावियां, इत्यादिक हो सगलें मीसर होय ॥ भ० ॥ ११ ॥ जो धरम कहे बचिया थको, हिंसा तिणरा हो लागा जाणे कर्म । तो सातेंई सारिषा लेखवे, कहे देणो हो सगले पापने धर्म ॥ भ० ॥ १२ ॥ जो साता में मिश्र कहे नहीं, तो किम आवे हो इण बोल्यांरी परतीत । आप थापे आप उथापे, तो कुण माने हो आ सरधा विपरीत ॥ भ० ॥ १३ ॥ जो सातों ही में मिसर कहिये, तो नहीं लागे हो गमती लोकां में बात । मिलती कह्यांविण तेहनी, कुण करे हो कूडांरी पषपात ॥ भ० ॥ १४ ॥ एक दोय बोलांमें मिसर कहे, सगला में हो कहतां लाजे मूढ । एवो उलटो पंथ कुगुरा झालिया, त्यांरे केडे हो बूडे कर कर रूढ ॥ भ० ॥ १५ ॥ सो सो मिनष सगलें बच्या, थोडीं घणी हो हुई सगले घात । जो धरम बरोबर न लेषवे, तो उथप गई हो मूला पाणींरी बात ॥ भ० ॥ १६ ॥ बात उथपती जाणने, कदा कहे दे हो सगलें पापने धर्म । पिण समदिष्टी सरधे नहीं, एतो काढ्यो हो पोटी सरधारो भर्म ॥ भ० ॥ १७ ॥ असंजतीरो मरणो जीवणो, वंछा कीधां हो निसचै रागने धेष । उ धरम नहीं जिण भाषीयो, सांसो हुवे तो हो अंग उपंग देष ॥ भ० ॥ १८ ॥ काचतणा देषी मिणकला, अणसमज्या हो जाणे रतन अमोल । ते निजरे पड्यां समझानीने, करादिधां हो त्यांरो कोड्यां मोल ॥ भ० ॥ १९ ॥ मूला खवायां मिसर कहे, आ सरधा हो काच मिणियां समाण ।

तो पिण झाली रतन अमोल ज्यूं, न्याय न सूजे हो चाला करमांरा जाण ॥ भ० ॥ २० ॥ जीव मारे झूठ बोलनें, चोरी करने हो परजीव बचाय । वले करे अकारज एहवो, मरता राख्या हो मैथुन सेवाय ॥ भ० ॥ २१ ॥ धन दे राषे परप्राणने, क्रोधादिक हो कहो अठारेइ सेवाय । एहीज कामां पोते करी, परजीवां ने हो भरतां राषे ताह ॥ भ० ॥ २२ ॥ हिंसा करी जीव राषियां, तिण में होसि हो धरम ने पाप दोय । तो इम अठारे ही जाणज्यो, ए चरचा में हो विरला समझे कोय ॥ भ० ॥ २३ ॥ जो एकण में मिसर कहे, सतरां में हो भाषा बोले उर । ऊंधी सरधारो न्याय मिले नहीं, जब उलटो होकर ऊठे जोर ॥ भ० ॥२४॥ जीव मारी जीव रापणा, सूतरमें हो नहीं भगवंत वेण । ऊंधो पंथ कुगुरा चलावियो, शुद्ध न सूझे हो फूटा अंतर नेण ॥ भ० ॥२५॥ कोई जीवता मिनष त्रिजंचना, होम करे हो जुधजीपण संग्राम । एकतो उ पाप मोटको, जीव होम्यां हो दूजो सावज काम ॥ भ० ॥ २६ ॥ कोई नाहर कसाईने मारने, मरता रष्या हो घणा जीव अनेक । जो गिणे दोयांने सारषा, त्यांरी विगरी हो सरधा चात विवेक ॥ भ० ॥ २७ ॥ पहिलां कहतां हो जीव बचावणा, तिण लेपे हो बोल्या सुधन काय । जीव बचियांरो धर्म गिणे नहीं, पिण थापे हो पिण में फिर जाय ॥ भ० ॥ २८ ॥ देवल धजा तेहनी पेरे, फिरता बोले हो न रहे एकणठाम । त्यांने पापंडी जिण कह्या, जगरो जाल्यो हो नहीं चरचारो काम ॥ भ० ॥ २९ ॥ जो एकण में अधर्म कहे, दूजा में हो कहे धर्म ने पाप । ए लेपो कियां तो लड़ पड़े, त्यांरा घट में हो पोटी सरधारी थाप ॥ भ० ॥ ३० ॥ वले सरणो लेई सेणकतणो,

सावज बोले हो तिणरी पवर न कांय। जोरीदावै पेलांने वरजीयां तिणमांहे हो जिणधर्म बताय ॥ भ० ॥ ३१ ॥ कहे सेणक परहो वजावीयां, हीणोमती हो फेरी नगर में आंण । जिण मोद हे ते धर्म जाणीयो, एहवो भाषे हो मिथ्या वले मरषादिष्टी अजाण ॥ भ० ॥ ३२ ॥ राय सेणकथो समकिती, धर्म विना हो किम करसी ए काम । इम कही कही भोलालोकने, फन्द में नाषे हो सेणकरो ले नाम ॥ भ० ॥ ३३ ॥ सेणकने करे मुख आगले । आमीसांमी हो मांडे पांचा ताण । आप छांदे उटंका मेलता, कुण पाले हो श्री जिणवरयाण ॥ भ० ॥ ३४ ॥ समदिष्टी तणो कोई नाम ले, भरमाव हो अणसमझां अजांण । ते सक्रइन्द समदिष्टी देवता, जिणभगता हो एका अवतारी जाण ॥ भ० ॥ ३५ ॥ ते भीर आया कोणकतणी, जुध कीधो हो तिण सावज जाण । एक क्रोड असीलाष ऊपरे, मनपांरा हो कीधा घमसाण ॥ भ० ॥ ३६ ॥ सेणकराय परहो फेरावियो, एतो जाणो हो मोटां राजांरी रीत । भगवंत न सरायो तेहने, तो किम आवे हो तिणरी परतीत ॥ भ० ॥ ३७ ॥ परहो फेरयो हणोमती, इतरीछे हो सूतर में वात । कोई धरम कहे सेणकतणे, तेतो बोले हो चोडे झूठ मिथ्यात ॥ भ० ॥ ३८ ॥ लोकां सुं मिलती बात जाणनें, कर रह्या हो कूडी बकवाय । मिश्र कहे ते पण अटकलां, साच हुवे हो सूत्र में देवै बताय ॥ भ० ॥ ३९ ॥ एतो पुत्रादिक जाया परणियां, उछवादिक हो उरी सीतला जाण । एहवे कारण कोई ऊपनें, श्रेणकराजा हो फेरी नगर में आण ॥ भ० ॥ ४० ॥ तेतो रुकीया नहीं क्रम आवता, नहीं कटीया हो तिणरा आगला कर्म । वले नरक जातो

रह्यो नहीं, न सीपायो हो भगवंत उ धर्म ॥ भ० ॥ ४१ ॥ भगवंते मोटा मोटा राजवी, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय । साध श्रावक धर्म बताविया, न सीपायो हो पड हो फेरणो काय ॥ भ० ॥ ४२ ॥ तो सेणक सीध्यो किण आगले, भगवंत ने हो पूछयां साजैमून । वले न जणावे आमना, आग्या विना हो करणी जाणजो चुन ॥ भ० ॥ ४३ ॥ वासुदेव चक्रवर्त्ति मोटका, त्यांरी वरते हो तीन छ पंडमें आण । जो परहो फेरायां मुगत मिले, तो कुण काढे हो आघो जिनधर्म जाण ॥ भ० ॥ ४४ ॥ कैइ विसनवाला मिनख ने, विसनसातु हो विना मन दे छुडाय । जो इणविध जिनधरम नीपजे, तो छ पंडमें हो वरजै आण फिराय ॥ भ० ॥ ४५ ॥ फलफूलादिक अनंतकायने, हिंस्यादिक हो अठारे पाप जाणी । जोर दावे पइलां नेंमने कीयो, धर्म हुवेतो हो फेरे छ पंडमें आण ॥ भ० ॥ ४६ ॥ वले तीर्थंकर घरमें थकां, त्यांमें हुता हो तीन ज्ञान वसेष । वले हाल हुकम थो घणुं, त्यां न फेरो हो पडहो सूतर देप ॥ भ० ॥ ४७ ॥ वलदेवादिक मोटा राजवी, घर छोडी हो कीया पापरा पचपांण । सेणक जिम परहों न फेरियो, जोरी दावे हो न वरताई आण ॥भ०॥४८॥ भ्रमदत्त चक्रव्रत तेहने, चितमुनी हो समभावण आय । साध श्रावकरो धर्म कह्यो, परहारी हो न कही आमना कांय ॥ भ० ॥ ४९ ॥ वीसां भेद रुके कर्म आवता, बारे भेदे हो कटे आगलां कर्म । ए मोक्षरो मारग पाधरो, छोडामेला हो सगलां पापंड धर्म ॥ भ० ॥ ५० ॥ दोय वेश्या कसाईवाडे गई, करता देपी हो जीवारा संघार । दोनूं जण्या मतो करी, मरता राण्या हो जीव दोय हजार ॥ भ० ॥ ५१ ॥ एक गेहणो देई आपणो

तिण छुंडाया हो जीव एक हजार। दूजी छुडाया इण विधे, एक दोयसुं हो चोथो आश्रव सेवाय॥ भ०॥ ५२॥ एकणने पाषंडी मिसर कहै, दुजीनें हो पाप किणविध होय। जीव बरोबर वचावियां, फेर पडसी हो तेतो पापमें जोय॥ भ०॥ ५३॥ एकण सेवायो आश्रव पांचमो, तो उण दूजी हो चोथो आश्रव सेवाय। फेर परचो तो इण पापमें, धर्म हुसी हो तेतो सरीषो थाय॥ भ०॥ ५४॥ एकणने धर्म कहेतां लाजे नही, दूजीने हो कहितां आवे संक। जब लोकांसुं करे लगावणी, एहवा जांणी हो चोडे कुगरां डंक॥ भ०॥ ५५॥ एक वेश्या सावज कामो करी, सेंहसनाणो हो ले वली घरमांय। दूजी कतव करी आपणो, मरता राष्या हो सेंहस जीव छुडाय॥ भ०॥ ५६॥ धन आण्यो पोटा कतव करी, तिणरे लागा हो दोनूं विधकर्म। तो दूजी छुडाया तेहने, उण लेषे हो हुवो पापने धर्म॥ भ०॥ ५७॥ पाप गिणे मही पुंनमें, जीव वचिया हो तिणरो ना गिणे धर्म। पोते सरधारी पवर पोतें नही, तांण तांण हो बांधे भारी कर्म॥ भ०॥ ५८॥ इण परसणरो जाबन ऊपजै, चरचामें हो अटके ठामठाम। तोपण निरणो करे नही, बक ऊठे हो जीवांरो ले नाम॥ भ०॥ ५९॥ जीव जीवे काल अनादरे, मरे तिणरी हो परज्यां पलटी जांण। संवर निरजरा तो न्यारा कह्या, ते ले जावे हो जीवने निरवांण॥ भ०॥ ६०॥ पिरथी पाणी अगन वायरो, विनसपती हो छठी त्रसकाय। मोलसु छुडावे तेहने, धर्म हुसी हो तेतो सगलामें थाय॥ भ०॥ ६१॥ त्रसकाय छुडायामें धर्म कहे, पांच कायमें हो बोले नही निसंक। भरममें पाड्या लोकने, त्यां लगाया हो

मिथ्यातरा डंक ॥ भ० ॥ ६२ ॥ त्रिविधे त्रिविधे छकाय हणवी नही, एहवी छे हो भगवंतरी नाय । मोललियां धर्म कहे मोचरो, ए फंद मांड्यो कुगुरा कुवध चलाय ॥ भ० ॥ ६३ ॥ देवगुरु धरम रतन तीनुं, सूतरमें हो जिण भाष्या अमोल । मोल लीयां नही नीपजे, साची सरधां हो आंध हीयारी पोल ॥ भ० ॥ ६४ ॥ ज्ञान दरसण चारित्रने तप, मोच जावा हो मारग छे चार । त्याने भिनभिन उलख आदरे, साध पाले हो ते पामे भवपार ॥ भ० ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

अणकंपा ए लोकनी, करमतणो बंध होय ।
ज्ञान दरशण चारित्र तप विना, धर्म म जाणो कोय ॥ १ ॥

जे अणकंपा साधु करे, तो नवां न बंधे कर्म ।
तिण मांहिली श्रावक करे, तो तिणने पिण होसी धर्म ॥२॥

साध श्रावक दोनांतणी, एक अणकंपा जाण ।
अमृत सहुने सारखो, तिणरी म करो ताण ॥ ३ ॥

वरजी अणकंपा साधने, सूतररी दे साप ।
चित लगाई सांभलो, श्री वीर गया छे भाप ॥ ४ ॥

ढाल छट्ठी।

(हवे सांभलजो नर नारए०)

डांभ पुंजादिकनी डोरी, अर्थीया करे हैलाने सोरी। सीत ताप करीने दुषीया, साता वांछे जाणे हुआ सुषीया ॥ १ ॥ उणरी अणकंपा आणे, छोडे छोडावे भलो जाणे। जिणने चोमासी प्राछित आवै, धरम जाणे तो समकित जावै ॥ २ ॥ इम बधे बंधावे हुवे राजी, ज्यांरो संजम जाव भाजी। एतो सावज कारज जाणो, त्यांरा साध किया पचक्पाणो ॥ ३ ॥ जीवणो मरणो नही चावै, साधु क्यांने बंधावै छुडावै। त्यांरी लागी मुगतसुं ताली, तिके किणरी करे रखवाली ॥ ४ ॥ गिरसतरे लागी लायो, घरबारे निकलीयो न जायो। बलता जीव बिल बिल बोलै, साधु जाय किवार न षोलै ॥ ५ ॥ दरवे भावे लाय लागी, जिणथी कोयक हुवे वैरागी। ऊणरी अणकंपा आवै, उपदेस देइ समझावै ॥ ६ ॥ जनम मरणरी लायथी काढे, उणरो काम सिराडे चाढे। पकरावै ज्ञानादिक दोरी, तिणथी कर्म आठ दे तोंरी ॥ ७ ॥ अणकंपा कीया डंड आवै, परमारथ विरला पावै। निसीरेथ बारमे उदेस, जिण भाष्यो दयारो रेस ॥ ८ ॥ छोडै साधहै सूतरमें चाल्यो, एतो अरथ अणहुतो घाल्यो। भोलाने कुगरां बहकाया, कूडाकूडा अरथ लगाया ॥ ९ ॥ सिंघ बाघादिक मंजारी, हिंसक जीव देषै आचारी। उणनें मार कह्यां हिंस्या लागै, पहिलो हीज महाव्रत भागै ॥ १० ॥ मत मार कहे उणरो रागी, तीजै करणहिंसादिक लागी। सुघडांग छे तिणरो साषी, श्री वीर गया छे भाषी ॥ ११ ॥ गिरसतरो सरीर ममता में,

साधु बेठा सुमतामें । रह्या धर्म शुकलध्यान ध्याई, मुवा गया फिकर नही कांई ॥ १२ ॥ ए लोगा परलोगा, जीवणो मरणो कामभोगा । एतो पांचोही छे अतिचारो, वांछणा नही धर्म लिगारो ॥ १३ ॥ आपणो वंछे तोही पापो । परनु कुण घाले संतापो । घणो जीवणो वंछे अज्ञानी, समभाव राषे ते सुज्ञानी ॥ १४ ॥ वायरो विरषा सीत तापो, रह्या न रह्यो चावे तो पापो । राज विरोध रैवे ते सुकालो, उपद्रव जावे तत्कालो ॥ १५ ॥ सात बोलांरो उ विसतारो । ते ए उलषिया अणगारो । घटमांहि जो समता आवे, हुवो न हुवो एको नहि चावे ॥ १६ ॥ एकणरे देई चपेटी, एकणरो उपद्रव मेटी । उतो रागद्वेषरो चालो, दसमीकालिक संभालो ॥ १७ ॥ साधु बेठा नावामांहि आई, नावडीए नाव चलाई । नावा फूटी मांहे आवे पाणी, साधु देषी लोगां नही जाणी ॥ १८ ॥ आप डुबे अनेरा प्राणी, अणकंपा किणरी नहि आणी । बतावे तो विरतांमें भंगो, जिणरो साषी आचारंगो ॥ १९ ॥ सानीकर साध बतावै, लोग कुसले षेमे घर आवै । डुबा पण साध न चावै, रह्या चावे तो तुरत बतावे ॥ २० ॥ मनो साज रह्या ते संतो, ते करे संसारनो अंतो । परणांमज राषे सेठा, धमध्यानमें रह्या बेठा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

दुषिया देषी तावडे, जो नहिं मेले छाय ।
साध श्रावक न गिणे तेहने, ए अणतीरथिनी वाय ॥ १ ॥
मरयां मरायां भलो जाणिया, तीनुं करणां पाप ।
देषण वाला ने कहै, षोटो कुगर संताप ॥ २ ॥

करमा करने जीवडा, उपजै ने मर जाय।
असंयमजी तव तेवनो, साध न करे उपाय ॥ ३ ॥

देव मांहो मांहे विणसतां, अलगा करे देआय।
एम कहै तिण ऊपरे, सीधे बतावै न्याय ॥ ४ ॥

ढाल सातमी।

नाडो भरियो हो डेडक माछला, मांहि नीलण फूलणरो पूरहो ॥ भविकजन ॥ लटपुरा आद जलोकसु, त्रस थावर भरिया अरूड हो ॥ भ० ॥ करजो पारष जिनधर्मरी ॥ १ ॥ सुलया धानतणो ढिगलो पड्यो, मांहे लटने ईल्यां अथागहो ॥ भ० ॥ सुल सुलियां ईडां अति घणां, तेतो करवल करे तिण मांय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ २ ॥ एक गाडो भरिया जमीकन्द सुं, तिण में जीव घणा अनंत हो ॥ भ० ॥ च्यार पर्याये चार प्राण हे, पारचा कष्ट कह्यो भगवंत हो ॥ भ० ॥ क० ॥ ३ ॥ काचा पाणीतणा माटा भरया, घणा जीव छै अणगल नीर हो ॥ भ० ॥ नीलण फुलण आद लटां घणी, जिण में अनन्त बताया वीर हो ॥ भ० ॥ क० ॥ ४ ॥ पात भीनो ऊकरडी लटां घणी, गिडोलाने गदीया जाण हो ॥ भ० ॥ टरवल टरवल कर रह्या, यांने करमां नांष्या आण हो ॥ भ० ॥ क० ॥ ५ ॥ कोईक जायगा में ऊंदर घणा फिरे, आमाने सामा अथाग हो ॥ भ० ॥ थोडोसो खरको सांभले, तो जाय दिसोदिस भागहो ॥ भ० ॥ क० ॥ ६ ॥

गुल षांड आदि मिष्टान में, जीव चिहुंदिस दोड्या जाय हो ॥ भ० ॥ मांषीने मांका फिर रह्या, तेतो हुबको करे मांहो मांहे हो ॥ भ० ॥ क० ॥ ७ ॥ नाडो देषी ने आवे भैंसीयां, धांन ढुको है वकरो आय हो ॥ भ० ॥ गाडे आयो बलद पाधरो, माटे आय ऊभी छे गाय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पंषी चुग ऊकरडी ऊपरें, ऊंदर पासे मिनकी जाय हो ॥ भ० ॥ मांखी ने मकोडो पकड ले, साधु किणने वचावे छुडाय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ ९ ॥ भेस्यां होकल्यां नाडां मांहिली, तो सघलांरे साता थाय हो ॥ भ० ॥ बकराने अलगो कियां थकां, ईंडादिक जीव बच जाय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ १० ॥ थोडासा वलदांने हांकणे, तो न मरे अनंतीकाय हो ॥ भ० ॥ पाणीपुंहरा किणविध न मरे, तो नेडी नहीं आणदे गाय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ ११ ॥ लट गीडोलादिक कुशले रहे, तो ते पंखीने दिये उठाय हो ॥ भ० ॥ मनकी धांकल ऊंदर बचायले, तो ऊंदर घर सोगन थाय हो ॥ भ० ॥ क० ॥१२॥ थोडे सो मकोडो आघो पाछो कायां, माषी नाठी उड जाय हो ॥ भ० ॥ साधां रे सगला सारखा, ते न पडे विच में जाय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ १३ ॥ मिनकी धाकल उंदर बचायले, माषी राषे मांकाने धकाय हो ॥ भ० ॥ उर मरता देष राषे नहीं, यांमें चूक पड्यो ते बताय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ १४ ॥ साधु पीयरवाजे छकायरा । एक छुडावै त्रस काय हो ॥ भ० ॥ पांच काय मरती देषे राषे नहीं, ते पीयर किणविध थाय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ १५ ॥ रजोहरणो लेईने ऊठीया, जोरी दावै देवे छुडाय हो ॥ भ० ॥ ज्ञान दरसण चारित तप मांहिलो, यांरे बधीयो ते मोह बताय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ १६ ॥ ज्ञान

दरसण चारित तपविना, उर मुकतरो नहीं है उपाय हो ॥भ०॥ छोडा मेल्या उपगार संसाररा, जिणथी सीधगत किणविध थाय हो ॥ भ० ॥ क० ॥ १७ ॥ जितरा उपगार संसाररा, तेतो सगलाही सावज जाण हो ॥ भ० ॥ श्री जिण धर्म मांहि आवै नहीं, ते कूंडी म करो ताण हो ॥ भ० ॥ क० ॥ १८ ॥ अज्ञानीरो ज्ञानी कियां थकां, हुवे निश्चे पैलारो उद्धार हो ॥ भ० ॥ कीधो मिथ्यातीरो समकिती, तेतो उतारया भवपार हो ॥भ०॥क०॥१६॥ कीधो असंयतीरो संयती, तेतो मुकतरा दलाल हो ॥ भ० ॥ तपसी कर पार उतारीउ, ते मेट्या सरव हवाल हो ॥ भ० ॥ क० ॥ २० ॥ ज्ञान दरसण चारित तपतणो, करे कोई उपगार हो ॥ भ० ॥ आप तिरे पेला उद्धरे, दोनारो षेवो पार हो ॥ भ० ॥ क० ॥ २१ ॥ ए च्यार उपगार छै मोटकाजी, तिणमें निश्चे जाणो धर्म हो ॥ भ० ॥ सेष रह्या काम संसार रा, तिणथी बांधतां जाणो कर्म हो ॥ भ० ॥ क० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

भेषधारी भूला थका, त्यांरे दया नहीं घटमांय ।
हिंसा धर्म प्ररूपियो, विना सूतररे न्याय ॥ १ ॥

दया दया मुख सुं कहे, पिण दयारी षवर न कांय ।
भालोन पाड्या भरममें, ते हणे जीव छकाय ॥ २ ॥

हिंसा धर्म परूपता, फिरता बोलै वैण ।
आप डूबै अनेरा डबोवने, त्यारां फूटां अंतर नैण ॥ ३ ॥

हिंसा धर्म परूपियो, तिणसुं हूआ जीव अनेक ।
ते षोटी सरधा परगट करूं, समझो आण विवेक ॥ ४ ॥

ढाल आठमी ।

श्रावकने मांहो मांहे छकाय पुवावै, उही छकाय मारीने जीमावै । ए जीव हिंसारो राज पोटो, तिणमांही धर्म अनारज बतावै ॥ यां हिंस्या धर्म्यांरो निरणो कीजो ॥ १ ॥ छकाय जीवांरो तो घमसाण कीधो, जीमाय कीयो उणने कर्मासु भारी । दोनुंकानी जोयां दीसे देवालो, तिणमांहे धर्म कहे भेषधारी ॥ यां० ॥ २ ॥ छकाय जीवांने तो पाधा पचाया, अरिहंत भगवंत पाप बतावै । ए वचन उथापीने मिसर परूपै, तिण दुष्टीने दिल दया ही न आवे ॥ यां० ॥ ३ ॥ रांकाने मार धीगाने पोषै, आतो वात दीसै घणी घेरी । इणमांही दुष्टी धरम परूपै, तो रांक जीवारा उठ्या वैरी ॥ यां० ॥ ४ ॥ पाछल भव पाप उपाया तिणसुं, हुवा एकंदरी पुन परवारी । तिण रांक जीवारे असुभ उदैसु, लोंकासहित लागु उठ्या भेषधारी ॥ यां० ॥ ५ ॥ कुपातर दान में पुन परूपै, तिणसुं लोक हणे जीवाने विशेषो । कुगुरु एहवा चाला चलावै, तिके भिसट हुवा लेई साधुरो भेषो ॥ यां० ॥ ६ ॥ पूछे तो कहे मेह मूनज साझां, सानीकर जीव मरावण लागा । हेठलो ऊपरो पेच अगा होवै, त्यांने वरत विहूणा कहीजे नागा ॥ यां० ॥ ७ ॥ कोई मालीरे उडे भूषो आय ऊभो, गाजर मूला षपाय पपावै । एकंत पाप उघारो दीसे, तिणमांहे मूरष धरम बतावै ॥ यां० ॥ ८ ॥

बैंगण वालोलादिक अनेक नीलोती, कोई रांधी पोषे परप्राणी। तिण मांहें दुष्टी धरम बतावै, तो दुरगत जावारा एह नाणी ॥ यां० ॥ ६ ॥ परच आघरणी ने भात वरोटी, अनेक आरम्भ कर न्यात जिमावे। ए सरव संसार तणा किरतव छै, तिण मांहे मूरष धरम बतावै ॥ यां० ॥ १० ॥ भेषधारी श्रावकने सुपातर थापै, तिणने नेत जीमाया कहै मोचरो धर्मो। उणने सूतर ससतर ज्यूं परगमीया, हिंसादि ढाय बांधे मूढ कर्मो ॥ यां० ॥ ११ ॥ केई वीस पचीस श्रावक नेतरिया, घरें जाय घरकांने धंधे लगावै। कोई मूंग दले कोई गोहू पीसे, कोई अगन सिंधुकीने चूलो धुकावै ॥ यां० ॥ १२ ॥ कोई लूणपाणी घाले आटो गिलोवै, कोई आंदण देई उरे चोपा दालो। कोई रोटी तवे नाषे पीरां मेले, कोई तरकारी रांध लेवै ततकालो ॥ यां० ॥ १३ ॥ छकाय जीवांरी हिंसा करने, अनेक चीजां रांधी कीधी रसालों। पछे दातण करायने भाणे बेसाणे, बाजोट देई मेले ऊपर थालो ॥ यां० ॥ १४ ॥ पछे भोजन पुरसीने भेला बैठा, आप आपतणा पेट सगलांई भरिया। भेषधारयां सहित श्रावको नें पूछीजें, यांमें कुण कुण डुबाने कुण कुण तरिया ॥ यां० ॥ १५ ॥ जद जीमणवाला ने तो पाप बतावै, हिंसा करनवाला ने कहै पापी। जीमावणवाला ने धर्म कहे छै, आ सरधा भेषधारयां थापी ॥ यां० ॥ १६ ॥ जीमणवालारे ने हिंस्यावालांरी, पापरी उतपत किण सुं चाली। वले छकायरा जीव मूवा त्यांरो, नेत जीमावणवालो दलाली ॥ यां० ॥ १७ ॥ इण पाप दलाली में धर्म परूपे, पर गया मोह मिथ्यात अंधेरे। ते प्रत्येक हिंस्याधरमी अनारज,

कोई बुड गया त्यां कुगुरांरे केडे ॥ यां० ॥ १८ ॥ श्रावक ने नेत जीमावे तिणमें, धरम कहै मूढ विना विचारो। मूपती बांधीने मीठा बोलै, पिण जीभ वहे ज्यूं तीषी तरवारो ॥ यां ॥ १६ ॥ किणी जीव हणया त्यांने संका आवै, तो तुरंत हणे सुण कुगुरांरी वाणी। पहिली हिंस्या कीयां पछे धरम बतावै, तो कुगुरु वाणी जेहवी वेहती घाणी ॥ यां० ॥ २० ॥ किणि रांक भिष्यारी ने दान उदकीयो, उदकीयो दान श्रावक ने दिरावे। धनवंत धरमरो लेवण लागा, तोरां करे हाथे कठासुं आवे ॥ यां० ॥ २१ ॥ लाडु षोपरा रोकड नाणो, सानीकर सामगरी में दिरावे। कुगुरु एहवा चाला चलावे, पेट भरचा जाणे पातरे आवे ॥ यां० ॥२२॥ गाय सुपी हुवा गरभ सुपी व्है, कूवे पाणी व्है तो अवाडे आवे। इण दिसटंते पेटकाजे भेषधारी, आपतणी सामग्री में दरावे ॥ यां० ॥ २३ ॥ जद देवणवाला ने तो धरम कहे छै, लेवणवाला ने कहै पापज होवे। तो धरम करण ने मूढ अज्ञानी सरव सामग्री ने कांय डबोवे ॥ यां० ॥ २४ ॥ सरव सामग्री में पाप लगायां, ते पिण हुसी निश्चे पापा सुं भोंरी। साची सरधानें ऊंधा बोले, तो विकलांने गुरु मिलियां भेषधारी ॥ यां० ॥ २५ ॥ धरम करे उरां पाप लगाई, उ धरम कदें मत जाणजो पुरो। भारी करमां लोकांरे असुभ उदेसुं, भेष धरयां उ मत काढ्यो कूरो ॥ यां० ॥ २६ ॥ कुपातर दानरी चरचा करतां, पढमाधारी श्रावक ने मुप आणे। भोलां लोकां ने भिष्ट करण ने, ते पिण भेद मिथ्याती न जाणे ॥ यां० ॥ २७ ॥ पढमाधारी श्रावक वैहरी ने आणे, तिणनें तो एकांत पाप बतावै। दातार ने तो धरम कहे पिण, परसण पूछयांरो जाब न आवे ॥ यां० ॥ २८ ॥

पढमाधारी श्रावक ने पाप लगायो, ते दातार ने धर्म हुसी किण लेषे । इणइ वरत सेवायो ने दान दियो छै, तिण किरतव साहमो अज्ञानी न देषे ॥ यां० ॥ २६ ॥ पढमा पढमाकर रह्या मूरष, ते पढमा तो छे श्रीजिणजीरो धर्मो । पढमा आदरतां आगार रह्यो त्यांसुं, सेवां सेवायांसुं बांधसी कर्मो ॥ यां० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

जीव दयारे ऊपरें, मूलगाती न दिसटंत ।
आगे विसतार करै जेतो, ते सुणजो मन कर पंत ॥ १ ॥

ढाल नवमी ।

(सहेल्यां हे वांदो रूडा साधुनें ॥ ए देशी)

एक चोर चोरे धन पारको, चोरावे हो तेतो दूजो आगे वाण । तीजो कोई करे अणुमोदणा, यां तीनांरा हो षोटा किरतव जाण । भवजीवा तुंमे जिण धर्म उलषो ॥ १ ॥ एक जीव हणे त्रसकायना, हणावे हो दूजो परना प्राण । तीजो पण भलो जाणे मारीयां, ए तीनुंही हो जीव हिंसक जाण ॥ भ० ॥२॥ एक कुसील सेवे हरष्यो थको, सेवावे हो तेतो दूजो करण जोय । तीजो पण भलो जाणे सेवीयां, यां तीनारे हो कर्मतणो बंध होय ॥ भ० ॥ ३ ॥ यां सगलाईने सतगुरु मिल्या, प्रतिबोध्या हो आण्या मारग ठाय । हिवे किण किण जीवांने साधां उद्धरथा, तिणरो सुणजो विवरासुध न्याय ॥ भ० ॥ ४ ॥ चोर हिंसकने

कुसीलीया, यांरेताई हो साधां दियो उपदेस । त्यांने सावद्रा निरवद कियो, एहवो छे हो जिण दया धर्म रेश ॥ भ० ॥ ५ ॥ ज्ञान दरसण चारित्र तपतणो, साधां कीधो हो तिणथी उपगार । एतो तरण तारण हुवा तेहना, उतारया हो त्यांने संसारथी पार ॥ भ० ॥ ६ ॥ चोर तीनों ही समज्या थका, धन रह्यो हो धणीरो कुशले षेम । हिंसक तीनुंही प्रतिबोधिया, जीव बचीया हो किया मारणरा नेम ॥ भ० ॥ ७ ॥ सील आदरीउ तेहनी, *सतरी हो परी कुवामांही जाय । यांरो पाप धर्म नहीं साधने, रह्या मूवा हो तीनुंई वरत मांय ॥ भ० ॥ ८ ॥ धननो धणी राजी हुवो धन रह्यो, जीव बचीया हो तेपिण हरषित थाय । साधू तिरण तारण ही तेहना, नारीने पिण हो नहीं डचोई आय ॥ भ० ॥ ९ ॥ केई मूढ मिथ्याति इम कहै, जीव बचीया हो धन रह्यो तिणरो धर्म । तो उणरी सरधारे लेषे, असतरी हो मुई तिणरा लागा कर्म ॥ भ० ॥ १० ॥ जीव जीवे ते दया नहीं, मरे ते हो हिंसामति जाण । मारणवाला नें हिंसा कही, नहीं मारे हो तेतो दया गुण पाण ॥ भ० ॥ ११ ॥ सरद्रह तलाव फोडणतणा, सुसलेई हो मेट्या आवता कर्म । सरद्रह तलाव भरियां रह्या, तिणमांहे हो नहीं जिणजीरो धर्म ॥ भ० ॥ १२ ॥ नींब आंबादिक वृत्तना, किण ही कीधा हो वाढणरा नेम । वोई व्रत घटी तिण जीवरे, वृष उभा हो रह्या तिणरो धर्म केम ॥ भ० ॥ १३ ॥ लाडु घेवर आद एक दान ने, पावा छोड्या हो आतम आणी तिण ठाय । तो वैराग वध्यो उण जीवरे, लाडु रह्या हो तिणरो धर्म न थाय ॥ भ० ॥ १४ ॥ दव देवो गांव जलायवो, इत्यादिक हो सावज कारज अनेक । साधु

सरव छोड़वै समझायनें, सघलांरी हो विध जाणो तुमे एक ॥ भ० ॥ १५ ॥ केईक अज्ञानी इम कहे, छकाय काजें हो देयाछां धर्म उपदेश । एकण जीवने समझावीयां, मिट जावे हो घणां जीवांरो कलेस ॥ भ० ॥ १६ ॥ छकाय घरे साता हुवे, एहवो भाषे हो अणतीरथी धर्म । त्यां भेद न पायो जिणधर्मरो, तेतो भूला हो उदै आया अशुभ कर्म ॥ भ० ॥ १७ ॥ हिवे साध कहै तुमे सांभलो, छकायरे हो साता किणविध थाय । शुभ अशुभ बांध्यां ते भोगवे, नहीं पाम्यो हो त्यां मुगत उपाय ॥ भ० ॥ १८ ॥ इणवा सुंसकीया छकायना, तिणरे टलिया हो मैला अशुभ कर्म पाप । ज्ञानी जाणे साता हुई तेहने, मिट गया हो जनम मरण संताप ॥ भ० ॥ १९ ॥ साधु तिरण तारण हुवा तेहना, सिद्धगत में हो मेल्या अविचल ठाम । छकाय लारे झिलती रही, नहीं सीज्यां हो त्यांरा आतम काम ॥ भ० ॥ २० ॥ आगे अरिहंत अनंता हुवा, कहेतां कहेतां हो नहीं आवे त्यारो पार । आप तिरया उर तारिया, छकायरें हो साता न हुई लिगार ॥ भ० ॥ २१ ॥ एक पोते बच्यो मरवाथकी, दुजे कीधो हो तिणरो जावणरो उपाय । तीजो पण भलो जाणे जीवीयां, यां तीनां में हो सिद्धगत कुंण जाय ॥ भ० ॥ २२ ॥ कुसलें रह्यो तिणरेई व्रत घटी नहीं, तो दूजाने हो तुमे जाणजो एम । भलो जाणयो तिणरे विरत न नीपनो, ए तीनुंही हो सिधगत जासी केम ॥ भ० ॥ २३ ॥ जीवीयां जीवायां भलो जाणीयां, ए तीनुंई हो करण सरीखा जाण । केई चतुर होसी ते समझसी, अणसमझ्या हो करसी ताणा ताण ॥ भ० ॥ २४ ॥ छकाय रो वंछे मरणो जीवणो, तेतो रहसी हो संसार मंझार । ज्ञान

दरसण चारित तप भला, आदरीयां हो आदरायां पेत्रे पार ॥ भ० ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ साधारा आचार ॥

॥ दोहा ॥

पहिलां अरिहंतने नमुं, ज्यां सारया आतम काम ।
वले विसेषे वीरने, ते सांसणनायक साम ॥ १ ॥
पिणकारज साफी आपणा, पहुता छे निरवाण ।
सिद्धांने वंदणा करूं, ज्यां मेव्या आवण जाण ॥ २ ॥
आचारज सहु सारसा, गुणरतनारी खाण ।
उपाध्याय ने सरव साधुजी, ए पांचूं पद वषाण ॥ ३ ॥
वांदीजे नित तेहने, नीचो सीस नमाय ।
गुण उलख वंदणा करो, ज्यूं भवभवरा दुःख जाय ॥ ४ ॥
सुगुरु कुगुरु दोनूंतणी, गुण विना पत्रर न काय ।
प्रथम कुगुरुने उलखो, सुणो सूतररो न्याय ॥ ५ ॥
सूतर साख दियां विना, लोक न माने बात ।
सांभलनें नर नारियां, छोडो मूल मिथ्यात ॥ ६ ॥
कुगुरु चरित अनंत छे, ते पूरा केम कहाय ।
थोड़ासा परगट करूं, ते सुणजो चित्त लाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहली ॥

(ऊंधी सरधा कोइ मत राखो.—ए देशी.)

उलपणां दोरी भव जीवां, कुगुरु चरित अनंत जी। केहतां छेह न आवे तिणरो, इम भाख्यो भगवंतजी। साधु मत जाणो इण चलगतसुं ॥ १ ॥ आधाकरमी थानकमें रहे तो, पड्यो चारितमें भेदजी। नसीतरे दसमे उदेसे, चारमास रो छेदजी ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारे ठाणा कह्या जूवाजूवा, एक विराधे कोयजी। बाल कह्यो श्री वीर जिणेसर, साध म जाणो सोयजी ॥ सा० ॥ ३ ॥ आहार सेज्याने वसतर पातर, असुध लिया नहीं संतजी। दसवीकालक छठे अधेने, भीष्ट कह्यो भगवंत जी ॥ सा० ॥ ४ ॥ अचित वसतुने मोल लिरावें, तो सुमत गुपत हुवे खंडजी। महाव्रत पांचूही भागे, तिणरो चोमासी डंडजी ॥ सा० ॥ ५ ॥ एतो भावनसीतमें चाल्या, उगणीसमें उदेसजी। सुध साधु विण कुण सुणावै, सूतरनी ऊंडी रेशजी ॥ सा० ॥ ६ ॥ पुसतक पातरा उपासरादिक, लिवरावे लेले नामजी। आछा भूंडा कही मोल बतावे, करे ग्रिसतरो कामजी ॥ सा० ॥ ७ ॥ ग्राहक नै तो कइयो कहीजै, कुगुरु बिचे दलालजी। वेचणवालो कह्यो वाणियो, तीनारो एकहवाल जी ॥ सा० ॥ ८ ॥ क्रय विक्रयमें वरतै तेतो, महादोष छे एहजी। पैंतीसमा उतराधेनमें, साधु न कह्यो तेहजी ॥ सा० ॥ ९ ॥ नितको वहिरे एकण घरको, च्यारामें एक आहारजी। दसवी कालिक तीजे अधेने, साधुनै कह्यो अणाचारजी ॥ सा० ॥ १० ॥

जो लावे नित धोवणपाणी, तिण लोप्यो सूतररो न्यायजी। वतलायां वोले नहीं सूधा, दूषण देवे छिपायजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ नहि कलपै ते वसतु वहिरे, तिणमें मोटी पोडजी। आचारांग पहिले सुतपंथे, कहि दियो भगवंत चोरजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ पहिलो वरत तो पूरो पडियो, जब आडा जडे किवारजी। कोंटा आगल होडा अटकावे, ते निश्चे नही अणगारजी ॥ सा० ॥ १३ ॥ पोते हाथे जडे उघाडे, करे जीवांरा ज्यानजी। गृहस्थ उघाडने आहार वहिरावे, जद करे अणहुंता फेनजी ॥ सा० ॥ १४ ॥ साधवीयाने जडणो चाल्यो तिणरी म करो ताणजी। यांलारे कोई साधु जडे तो, भागलरा अह नाणजी ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन करने जो जरणां वंछे, तिण नही जाणी परपीरजी। पेंतीसमा उत्तराधेनमें, वरज गया महावीरजी ॥ सा० ॥ १६ ॥ परनिंदामें रातामाता, चितमें नही संतोपजी। वीर कह्यो दशमा अंगमांहे, तिणमे तेरे दोपजी ॥ सा० ॥ १७ ॥ कहे दीष्या लेतो मो आगल लीजे, उर कने देपालजी। कुगुरु एहवा सूंद्स करावे, आचोडे उंधी चालजी ॥ सा० ॥ १८ ॥ इण वंधाथी ममता लागे, ग्रहस्थसु भेलप थायजी। नसीतरे चोथे उदेसे, दंड कह्यो जिणरायजी ॥ सा० ॥ १९ ॥ जिमणवारमें वहिरण जावे, आ साधारी नहिं रीतजी। वरज्यो आचारंग वड्तकलपमें, वले उत्तराधेन नसीतजी ॥ सा० ॥ २० ॥ आलस नही आरामें जातां, वैठी पांत विसेपजी। सरस आहार ल्यावे भर पातरा, ज्यां लज्या छोडी ले भेषजी ॥ सा० ॥ २१ ॥ चैला करणरी चलगत उंधी, चाला भहोत चलायजी। लियां फिरे ग्रहस्थने साथे, रोकड दाम दिरायजी ॥ सा० ॥ २२ ॥ विग्रके विकलने सांग पहेरावे,

भेलो करे आहारजी । सामगिरीमें जाय वंदावें, फिर फिर हुवे षवारजी ॥ सा० ॥ २३ ॥ अजोगने दीक्षा दीधी ते, भगवंतनी आज्ञा बारजी । नसीतरो डंड मूल न मानै, ते विटल हुवा विकरालजी ॥ सा० ॥ २४ ॥ विण परलेह्यां पुस्तक रापे, तो जमे ज़ीवारा जालजी । परे कुंथवा उपजे मांकड, जिण बांध्री भागी पालजी ॥ सा० ॥ २५ ॥ जावै वरस छमास नीकालियां, तो पहिलो वरत हुवे षंडजी । नित परले इणमेले तिणनें, एक मासरो डंडजी ॥ सा० ॥ २६ ॥ ग्रहस्थ साथे कहे संदेसो, तो भेलो हुवे संभोगजी । तिणने साधु किम सरधीजे, लागो जोगने रोगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ समाचार विवरासुध कही कही, सानी कर ग्रहस्त बोलायजी । कागद लिखावै करी आमना, परहाथ देवै चलायजी ॥ सा० ॥ २८ ॥ आवण जावण बेसण ऊठणरी, जायगा देवै बतायजी । इत्यादिक साधु कहे ग्रहस्थने, तो वेहुं बराबर थायजी ॥ सा० ॥ २९ ॥ ग्रहस्थने देवे लोट पातरा, पूछ्या परत विशेषजी । रजोहरणाने पूंजणी देवे, ते भिष्ट हुवा लेई भेषजी ॥ सा० ॥ ३० ॥ पूछे तो कहे परठदीया में, कूड कपट मनमांहिजी । काम पडे जब जाय उराले, न मिटी अंतरचाहिजी ॥ सा० ॥ ३१ ॥ कहे परठ्या ग्रहस्तने देइ, बोले वले अन्यायजी । कह्यो आचारांग उत्तराधेन में साधु परठे एकंत जायजी ॥ सा० ॥ ३२ ॥ कहे ग्रहस्थ सुं सदला बदलो, पंडित नाम भरायजी । पूरी पडी सगलां बरतांरी, भेष ले भूला जायजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ थोरो उपध ग्रहस्थने दीधां, वरत रहे नही एकजी । चोमासी डंडन सीतमें गुंथ्यो, निणं छोडी जिणधर्म टेकजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ विण आंकुस

जिम हाथी चालै, घोडो विगर लगामजी । एहवी चाल कुगरारी जांणो, कहेवाने साधु नामजी ॥ सा० ॥ ३५ ॥ अणकंपा नहीं छहुं षाननी गुणविण कहे अमे साधजी । आ चरचा अणुजोग दुवारमें, विरला परमारथ लाधजी ॥ सा० ॥ ३६ ॥ कह्यो आचारांग उतराधेनमें, साधु करे चालतां वातजी । उंची त्रीछी दिष्ट जावै तो हुवे छकायरी घातजी ॥ सा० ॥ ३७ ॥ सरस आहार ले बिना मरजादा, तो वधे देही री लोथजी । काच मणि परकास करे ज्युं, कुगुरु माया थोथजी ॥ सा० ॥ ३८ ॥ दबक दबक उतावला चाले, त्रस थावर मारया जायजी । इरज्या सुमत जोयाविण चाले, ते किम साधु थायजी ॥ सा० ॥ ३९ ॥ कपडामें लोपी मरजादा, लाबा पना लगायजी । इधका राषे दोय पुर उर्डे वले बोले मूसावायजी ॥ सा० ॥ ४० ॥ लष्टपुष्ट कर मांस वधारे, करे विगेरा पूरजी । माठा परिणामा नारयां निरषे, तो साधुपणाथी दूरजी ॥ सा० ॥ ४१ ॥ उपग्रहण जो अधिकां राषे, तिण मोटो कियो अन्यायजी । नसीतरे सोलमे उदेसे, चोमासी चारित जायजी ॥ सा० ॥ ४२ ॥ मूरपने गुरु एहवा मिलिया, ते लेई डुबसी लारजी । साचो मारग साधु बतावे, तो लडवाने हुवे त्यारजी ॥ सा० ॥ ४३ ॥ एहवा गुरु साचा करी माने, ते अंध अज्ञानी बालजी । फोरा पडे उतकष्टा तिणमें, तो रुले अनंतो कालजी ॥ सा० ॥ ४४ ॥ हलुकरमी जीव सुण सुण हरपे, करे भारीकर्मा धेषजी । सूतररो न्याय निंदा कर जाने, तो डुबे वले विसेषजी ॥ सा० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

भेष पहरयो भगवानरो, साधु नाम धराय ।
आचार में ढीला घणा, ते कह्यो कठां लगें जाय ॥ १ ॥

त्यांने वांदे गुरु जाणने, वले कूडी करे पषपात ।
त्यां झूठाने साचा करण खपे, त्यांरे मोटो साल मिथ्यात ॥ २ ॥

कुगुरु तणा पग वांदने, आगे डुबा जीव अनन्त ।
वले डुवेने डुबसी घणा, त्यांरो कहेतां न आवे अंत ॥ ३ ॥

साध मारग छे सांकडो, तिण में न चाले पोट ।
आगार नहीं त्यांरे पापरो, त्यां वरत कीया नवकोट ॥ ४ ॥

भेषधारी भागल घणा, त्यांसुं पले नहीं आचार ।
कुण कुण अकारज कररह्या, ते सुणजो विसतार ॥ ५ ॥

ढाल बीजी ।

(आदर जीव षिमागुण आदर ॥ ए देशी)

कुगुरुतणी चरिचा करशुं, सूतरनी देई साखजी । सुमता आण सुणो भवजीवां, श्री वीर गया छे भाखजी ॥ साध मत जाणो इण आचारें ॥ १ ॥ जोर्थे कुगुरु से ठाकर झाल्या, तो सुण सुण म करो श्रेषजी । साच झूठरो करो निवेरो, सूतर सामो देखजी ॥ सा० ॥ २ ॥ जीमणवार मांहीसुं कोई असन,

न्यावे धोवणपाणी मांडजी । पछे आपतणे घरे आण वहिरावे, ते करे भेषने भांडजी ॥ सा० ॥ ३ ॥ जाण जाणने साधु वहिरें, तिण लोप दियो आचारजी । ते प्रत्यक्ष साहमो आण्यो लेवे, त्यांने किम कहीजे अणगारजी ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए अणाचार उघारो सेवे, जे साहमो आण्यो ले आहारजी । दसमी कालिक तीजे अधेने, कोई जोवो आंख उघारजी ॥ सा० ॥ ५ ॥ साध साधवी ठले मात्रे, एकण दरवाजे जायजी । वीर वचनसुं उलटा परियां, चवडे करे अन्यायजी ॥ सा० ॥ ६ ॥ गांव नगर पुर पाटण पाडो, तिणरो होवे एक निकालजी । तिहां साध साधवी नहीं रहे भेला, आ बांधी भगवंत पालजी ॥ सा० ॥ ७ ॥ एकण दरवाजे साध साधवी, जावे नगरी बारजी । तो अप्रतीत ऊठे लोकां में, केई वरत भागे हुवे पुवारजी ॥ सा० ॥ ८ ॥ जुदो जुदो निकाल छे तो पिण, केई जावे एकण दरवाजजी । धेठा हटक न माने किणरी, वले न माणे मनमें लाजजी ॥सा० ॥९॥ एक निकाल तिहां रहिणोइ वरज्यो, तो किम जाए एकण दुवारजी । एवेहतकलपरे पहिले उदेसे, ते बुधवंत करो विचारजी ॥ सा० ॥ १० ॥ असतने घर जाय गोचरी; जो जडीयो देषे दुवारजी । तिहां सुध साधु तो फिर जाय पाछा, भागल जावे पोल किंवारजी ॥ सा० ॥ ११ ॥ केई भेषधार्यांरे एहवी सरधा, जो जडीयो देषे दुवारजी । तो धणी तणी आगन्या लईने, मांहि जावे पोल किंवारजी ॥ सा० ॥ १२ ॥ हाथसुं साध किंवार उघाडे, मांहि जावे वहिरणने आहारजी । इसडी ढीली करे परूपणा, ते विटल हुवा वकरालजी ॥ सा० ॥ १३ ॥ किंवार उघाडीने आहार वहिरणरो, मूल न सरधे पापजी । कदा

न गया तोपण गया सरिखा, आकर राषी छे थापजी ॥ सा० ॥१४॥
किंवार उघाडने वहिरणने जावे, तो हिंसा जीवांरी थायजी । ते
आवसग सूतरमांहि वरज्यो, चोथा अधेनरे मांयजी ॥सा०॥१५॥
गांव नगर बारे ऊतरीयो, कटक सथवारो तांहिजी । जो साधु रात
रहे तिण ठामे, ते नहीं जिण आज्ञा मांहिजी ॥ सा० ॥ १६ ॥
एक रात रहे कटकमें तिणने, च्यार मासरो छेदजी । एवेतकल्परे
तीजे उदेसे, ते सुण सुण मकरो पेदजी ॥ सा० ॥ १७ ॥ इसडा
दोष जाणीने सेवे, तिण छोडी जिण धर्मरी रीतजी । एहवा भिष्ट
आचारी भागल, त्यांरी कुण करसी परतीतजी ॥ सा० ॥ १८ ॥
विणकारण आंख्यां में अंजण, जो घाले आंष मंझारजी । त्यांने
साधवीयां केम सरधीजै, त्यां छोड दीयो आचारजी ॥ सा० ॥१९॥
बिण कारण जो अंजण घाले, तो श्री जिणआज्ञा बारजी ।
दसमीकालिक तीजे अधेनें, तो ऊघाडो अनाचारजी ॥सा०॥२०॥
वस्त्र पात्र पोथी पानादिक, जाय ग्रसतरे घरे मेलजी । पछी बिहार
कर दे घणी भलामण, तिण प्रवचन दीधा ठेलजी ॥सा०॥२१॥
पछे ग्रसत आंहमा सांहमा मेलतां, हिंस्या जीवांरी थायजी । तिण
हिंसासुं ग्रसतने साधु, दोनुं भारी हुवे तायजी ॥ सा० ॥ २२ ॥
भार उपरावे ग्रसत आगे, ते किम साधु थायजी । नसीतरे
बांरमे उदेसे, चोमासी चारित जायजी ॥ सा० ॥ २३ ॥
वले विणपडलेहां रहे सदा, नित ग्रसतरा घरमांयजी । उ साधपणो
रहिसी किम त्यांरो, जोवो सूतररो न्यायजी ॥ सा० ॥ २४ ॥
जो विणपडलेह्यां रहे एकणदिन, तिणने डंड कह्यो मासीकजी ।
नसीतरे दुजे उदेसे, तिहां जोय करो तहकीकजी ॥ सा० ॥ २५ ॥
मातपितादिक सगा सनेही, त्यांरा घरमें देषे खालजी । त्यांने

परिगरो साध दिरावै, आ चोडे कुगुरुरी चालजी ॥ सा० ॥ २६ ॥ सीनीकर साध दिरावे रुपीया, वरत पांचमो भागजी । वले पूछयां झूठ कपटसुं बोलै, त्यां पहिर विगारयो सांगजी ॥ सा० ॥ २७ ॥ न्यातीलाने दाम दिरावे, तिणरे मोह न मिटियो कोयजी । वले सार संभार करावे त्यांरी, ते निश्चे साध न होयजी ॥ सा० ॥ २८ ॥ अनरथरो मूल कह्यो परिगरो, ठाणांग तीजे ठाणजी । तिणरी साध करे दलाली, ते पूरा मूढ अजाणजी ॥ सा० ॥ २९ ॥ रित उन्हाले पाणी ठारे, असतरा ठाम मंझारजी । मन मानै जब पाछा सूंपै, ते श्री जिणआज्ञा बारजी ॥ सा० ॥ ३० ॥ असतरा भाजनमें साधु, जीमे असणादिक आहारजी । तिणने भिष्ट कह्यो दशमी कालिकमें, छठा अधेन मंझारजी ॥ सा० ॥ ३१ ॥ केई सांग पहिर साधवीयां वाजै, पिण घटमांहि नही विवेकजी । आहार करे जद जडे किंवाड, वले दिनमांहि वार अनेकजी ॥ सा० ॥ ३२ ॥ ठरडे मातरे गोचरी जावे, जब आडा जडे किंवारजी । वले साधा कने आवे तोही जरने, त्यारो विगर गयो आचारजी ॥ सा० ॥ ३३ ॥ साधवीयांने जडणो चाल्यो, ते सीलादिक राषण काजजी । उर काम जो जडे साधवी, तिण छोडी संजम लाजजी ॥ सा० ॥ ३४ ॥ आवसगमांहि हिंसा कही जडीयां, आलोवण पाते तांहिजी । मन करने जडणो नहि वंछे, उतराधेंन पेतीसमा मांहिजी ॥ सा० ॥ ३५ ॥ उपध आददे वहिरी आणे, कोई वासी राखे रातजी । ते जाय मेले असतरा घरमें, पछे नित ल्यावे परभातजी ॥ सा० ॥ ३६ ॥ आपरो थको असतने सुपे, उ मोटो दोष पिछाणजी । वले बीजो दोष वासी राष्यांरो, तीजो अजेणारो जाणजी ॥ सा० ॥ ३७ ॥ वले चौथे दोष पूछयां झूठ बोले, वासी राष्यो न कहे मूढजी ।

केई भेषधारी छे एहवा भागल, त्यांरे झूठ कपट छे गूढजी ॥ सा० ॥ ३८ ॥ उपद आद दे वासी राष्या, वरतांमें पडे बघारजी । कह्यो दसमी कालीक तीजे अधेने, बासी राषे तो अणाचारजी ॥ सा० ॥ ३९ ॥ कई आधाकरमी पुस्तक वहिरे, वले तेहिज लीधा मोलजी । तेपिण साहमां आण्यां वहिरे, त्यांरे मोटी जाणजो पोलजी ॥ सा० ॥ ४० ॥ कोई आप कने दिष्या ले तिणरे, सांनीकर मेलै साजजी । पुस्तक पानादिक मोल लिरावै, वले कुण कुण करे अकाजजी ॥ सा० ॥ ४१ ॥ गच्छवासी प्रमुष आगासुं, लिषावै सूतर जाणजी । पहिला मोल कराय परतरो, संचकार दिरावे आणजी ॥ सा० ॥ ४२ ॥ रूपीया मेहलावे उरतणे घर, इसडो सेंठो करे कामजी । तेपिण हाथ परत आया दिण, दिष्या दें काढै तामजी ॥ सा० ॥ ४३ ॥ पछे गच्छवासी विकलांसुं डरतां, परत लिषे दिनरातजी । जीव अनेक मरे तिण लिषतां, करे त्रसथावररी घातजी ॥ सा० ॥ ४४ ॥ इणविध साधु परत लिषावे, तिण संयम दीधो षोयजी । जे दया रहित छे एहवा दुष्टी, ते निश्चे साध न होयजी ॥ सा० ॥ ४५ ॥ छकाय हणीने परत लिषी ते, आधाकरमी जाणजी । तेहिज परत तो साधु वहिरे, तो भागलरा एहनाणजी ॥ सा० ॥ ४६ ॥ वले तेहिज परत टोलामें राषे, आधाकरमी जाणजी । जे सांमल हुवा ते सघला डुबा, तिणमें संका मत आणजी ॥ सा० ॥ ४७ ॥ आधाकरमीरा लेवाल रुले तो, उत्कृष्टो काल अनंतजी । दयारहित कह्यो तिण साधुने, भगोती में भगवंतजी ॥ सा० ॥ ४८ ॥ कोई श्रावक साध समीपे आए, हरषे वांदे पग जालजी । जद साधु हाथ दे तिणरे माथे, आचोडे कुगुरुरी चालजी ॥ सा० ॥ ४९ ॥ असतेरे

माथें हाथ देवेतो, ग्रहस्थ बरोबर जाणजी । एहवां विकलांने साधु सरधे, तेपिण विकल समानजी ॥ सा० ॥ ५० ॥ ग्रहस्थरे माथे हाथ दियो तिण, ग्रहस्थसुं कीधो संभोगजी । तिणने साधु किम सरधीजे, लागो जोगने रोगजी ॥ सा० ॥ ५१ ॥ दसविकालिक आचारांग मांही, वले जोवो सूत्र नसीतजी । ग्रहस्थ ने माथे हाथ देवे तो, आ परतप ऊंधी रीतजी ॥ सा० ॥ ५२ ॥ चेला करे ते चोरतणी परे, ठग पासीगर ज्युं तामजी । उजवक ज्युं तिणने उचकावै, ले जाय मूंडे उर गामजी ॥ सा० ॥ ५३ ॥ आछो आहार दिषावे तिणने, कपड़ादिक महीं दिषायजी । इत्यादिक लालच लोभ बतावे, भोलाने मुंढे भरमायजी ॥ सा० ॥ ५४ ॥ इणविध चेलाकर मत बांधे, ते गुणविण कोरो भेषजी । साधपणारो सांग पहिरने, भारी होवै विसेषजी ॥ सा० ॥ ५५ ॥ मुंड मुंडावो भेलो कीधो, त्यांसुं पले नहीं आचारजी । भूष त्रसापण पमणी न आवै, जद लेवे असुध पण आहार जी ॥ सा० ॥ ५६ ॥ अनल, अजोगने दिष्या दीधां, तो चारतरो हुवे षंडजी । नसीतरे उदेस इग्यारमें, चोमासीरो डंडजी ॥ सा० ॥ ५७ ॥ विवेक विकल बालक बुढाने, पहिरावे सांग सताबजी । त्यांनें जीवादिक पदारथ नवरा, जावक नावे ज़ावजी ॥ सा० ॥ ५८ ॥ सिष करणो तो निपुण बुधवालो, जीवादिक नव जाणे तांहिजी । नहींतर एकल रहणो टोलामें, उतराधेन बतीसमा मांहिजी ॥ सा० ॥ ५९ ॥ केइ दडे लीपे हाथांसूं थानक, तेपिण ढगलिया कूटजी । इसड़ो काम करे तिण साधु, पाडी भेषमांहे फूटजी ॥ सा० ॥ ६० ॥ जो दडे लिंपे थानकने साधु, तिण श्री जिणआज्ञा भंगजी । तीजा बरतरी तीजी भावना, तिहां वरज्यो दसमें अंगजी ॥ सा० ॥ ६१ ॥

छती साधवींयां छे टोला में, वले कारण न पद्यो कोयजी।
तो पिण दोय साधवीयां रहेछै,उ दोष उघाडो जोयजी ॥सा०॥६२॥
एक वितर्णी रहे दोय साधवि, ते जिण आज्ञा में नाहिजी। त्यांने
वरज्यो छे विहार सूतर में, पांचमा उदेसामांहजी ॥सा०॥६३॥
कारण विना एकली साधवी, असणादिक वैहरण जायजी। वले
ठरडे पण एकलडी जावे, ते नहि जिणआज्ञा मांयजी ॥सा०॥६४॥
वले एकलडीने रहणो वरज्यो, इत्यादिक बोल अनेकजी। वेतक-
लपरे पांचमे उदेसे, ते समझो आण विवेकजी ॥ सा० ॥ ६५ ॥
कुगुरु एहवा हीण आचारी, साधां सुं दे भिरकायजी। आपतणा
किरतव सुं डरतां, जिणमारग दियो छिपायजी ॥ सा० ॥ ६६ ॥
इसडा कुगरांने गुरु कर माने, त्यांरे अभिंतरमें अंधकारजी। गुरुमें
षोटषात्र अज्ञानी, ते चाल्या जनम बिघारजी ॥ सा० ॥ ६७ ॥
असुभ करम ज्यांरे उदय हुवा जब, इसडा गुरु मिलिया
आयजी। दग्धबीज होय जावक बूडा, पछे चिहुगत गोता
षायजी ॥ सा० ॥ ६८ ॥ इम सांभलो उत्तम नरनारी, छोडो
कुगुरुनो संगजी। सतगुरु सेवो सुध आचारी, दिन दिन चढते
रंगजी ॥ सा० ॥ ६९ ॥ आसजाय करी कुगुरु उलखावण,
संहेर पीपाड मंझारजी। समत आठारे ने वरस चौतीसे, आसोज
सुद सातम बुधवारजी ॥ सा० ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

केई भेषधारी भूलाथका, कर रह्या कूडी ताण।
इव्रत बतावै साधुरे, ते सूतर अरथ आजण ॥१॥

त्यां साधपणो नहीं उलख्यो, भूला भ्रम गिवार।
सर्व सावज त्याग्यो मुखसुं कहे, वले पापरो कहे आगार ॥२॥

आहारपाणी कपडादिक उपरे, उवे सदा रह्या मुरझाय।
एहवा भेषधारयांरे इव्रत षरी, पिण साधांरे इव्रत नहीं काय ॥३॥

च्यार गुणठाणा इव्रत कही, त्यां न दीसे व्रत लिगार।
देस व्रत गुणठाणो पांचमो, आगे सरवव्रति अणगार ॥४॥

जो सांधारे इव्रत हुवे, तो सर्वव्रति कुण होय।
त्यांरा भावभेद प्रगट करूं, ते सांभलजो सहु कोय ॥५॥

ढाल तीजी।

(आ अणकंपा जिणआगन्या में ॥ ए देशी)

चोवीसमा श्री वीरजिणेसर, निरदोष आहार आणीने षायो। सुध परिणाम उदर में उतारयो, तिणमांही मूरष पाप बतायो। इण पाषंड मतरो निरणो कीजो ॥ १ ॥ अनंत चोवीशी मुगत गई ते, आहार ल्याया था दोषण टालो। तिणमांहि पाप बतावै अज्ञानी, त्यां सगलांरे शिर दीधो आलो ॥ इ० ॥ २ ॥

सरब सावजजोगरा त्याग करीने, सरवव्रती सुध साध कहावे। तिरणतारण पुरुपारे अज्ञानी, इव्रतरो आगार बतावे ॥ इ० ॥ ३ ॥ गोतम आददे साध अनंता, साधवीयांरो छेह न पारो। सघलांरो आहार अधर्ममांहि घाल्यो, तिण आंप मीचीने कीधो अंधारो ॥ इ० ॥ ४ ॥ साधुरो जनम हुवो जिण दिनथी, कलपे ते वसत वहेरीने लावे। तेपण अरिहंतनी आगन्यासुं, तिणमांहि मूरष पाप बतावे ॥ इ० ॥ ५ ॥ वसतर पात्रा रजूहरणादिक, साधुरा उपध सूतरमांहे चाल्या। अरिहंतरी आगन्यासुं राष्या, अधर्ममांहे अज्ञानी घाल्या ॥ इ० ॥६॥ दसमीकालिक ठाणाअंगमें, प्रसन व्याकरण उवाई माह्यो। धरम उपध साधुरा वरतमें, तिणमांहि दुष्टी पाप बतायो ॥ इ० ॥ ७ ॥ किणही गृहस्थ लीलोतरी ने त्यागी, जीवे ज्यांलग आण वेरागो। साधपणो लेई इव्रत सरधे, तो विवेक विकल पायवा कांई लागी ॥ इ० ॥ ८ ॥ अधर्म जाणे नीलोतरी षाधां, तो पचखाण भागो किण लेखे। घरमें थकां जावजीव त्यागी थी, इणसाहमुं मूरष क्युं नहीं देषे ॥ इ० ॥ ९ ॥ किणही गृहस्थ जेजे वस्तु त्यागी थी, तो अधर्मरो मूल इव्रत जाणो। साधपणो लेई सेववा लागो, ते क्युं न पाले लिया पचखाणो ॥ इ० ॥ १० ॥ इव्रत सरधेने सुध न पाले, तिण भागलरे छे भारी कर्मो। मारग छोडने ऊजर परीया, साधआहार कीयामें सरधे अधर्मो ॥ इ० ॥ ११ ॥ करे वयावच चेला गुरुरी, कर्मतणी कोड तेह षपावै। तीर्थंकरगोत्र बंधे उत्कृष्टो, पिण गुरुने मूरष पाप बतावे ॥ इ० ॥ १२ ॥ दस बीस चेला परिकणामे करने, गुरुरी वेयावच करवाने आवै। तो गुरुने पाप लगाय अज्ञानी, दुरगतमांय कांय पोंचावै ॥ इ० ॥ १३ ॥ गुरुने पाप

लागे वेयावच करायां, सूत्रमांहि कठेही न चाल्यो । मूढमतीजीव भारी करमा, उपिण घोंचो अणहुतो वाल्यो ॥ इ० ॥ १४ ॥ गुरुने पापसुं भेलां कीयांमें, चेलांरा कर्म कटे किण लेषे । अभिंतर फूटीने अंध थया ते, सूतर साहमो मूढ मूल न देषै ॥ इ० ॥ १५ ॥ साध मांहोमांहि देवेने लेवै, वसतर पातर आहारने पाणी । तेपिण लीधांमें पाप बतावै, एहवी कुपातर बोले वाणी ॥ इ० ॥ १६ ॥ दातारने धर्म साधांने वहिरायां, पिण साध वहिरी हुवा पापसुं भारी । दातार तिरिया साध डबोया, आ पण सरधा कहे भेषधारी ॥ इ० ॥ १७ ॥ जो पाप लागे साधु आहार कीयांमें, तिणरे पापरो साज दियो दातारो । तिणरी आसा राखे किण लेपे, भूलारे भूलाथें मूढ गिंवारो ॥ इ० ॥ १८ ॥ साधां तो पाप आठारेही त्याग्या, चोषी छे ज्यांरी सुमतिने गुपती । दातार कने सुध जाच लियामें, पाप कठेसुं लागोरे कुमती ॥ इ० ॥ १९ ॥ गुरु दीष्या देई सिष सिषणी करे ते, निरजरारा भेदमांहे चाल्या । मोह मिथ्यातसुं भारीकरमा, ए पण परिगरामां ए घाल्या ॥ इ० ॥ २० ॥ छठे गुणठाणे परमाद कहीने, साधारे इव्रत थापे षवारी । पूछे तो कहे में सरवविरती छां, उपण झूठ बोले भेषधारी ॥ इ० ॥ २१ ॥ छठे गुणठाणे परमाद कह्यो ते, किणहीक वेला लागतो जाणो । विषे कषाय असुभ जोग आयां, पिण मूढमती करे ऊंधी ताणो ॥ इ० ॥ २२ ॥ प्रमादे व्रत कहे आहार उपधसुं, कररह्या कुबुधी कूड़ी विषवादो । आहार उपध केवली पिण आणे, कठो गयो त्यांरो परमादो ॥ इ० ॥ २३ ॥ अप्रमादी कह्या सातमे गुणठाणे, प्रमाद नहीं तिण गुण ठाणा आगे । आहार उपध उवेपिण भोगवता,

त्यां साधांने परमाद क्युं नहीं लागे ॥ इ० ॥ २४ ॥ केवली अचारे छदमस्थ आचरियो, केवली त्याग्यो ते छदमस्थ त्यागे। आहार उपध केवली ज्युं भोगवीयां, तिण साधांने परमाद किणविध लागै ॥ इ० ॥ २५ ॥ साध आहार करतां चारित्त कुसलैं सुभ परिणामांसुं कटे आगलां कर्मो । जद उंधमती कोई अवलो बोलै, घणो षात्रो ज्युं घणो होवै धर्मो ॥ इ० ॥ २६ ॥ पोहर रात तांई साध ऊंचे सबदे, धर्मकथा कहै मोटे मंढांणो । उण ऊंधमतीरी सरधारे लेषे,आधी रातमें करणो वंषाणो॥इ०॥२७॥ जेणासु साधु करे परलेहण, काटवा कर्म आतमने उद्धरणी । उण उंधमती री सरधारे लेषे, आधोही दिन परलेहण करणी ॥ इ० ॥ २८ ॥ मरजादासुं आहार साधाने करणो, मरजादासुं करणो बखाणो । मरजादासुं पडलेहण करणी, समझो रे समझो थे मूढ अयाणो ॥ इ० ॥ २९ ॥ छ कारण आहार साधांने करणो, घणो घणो षासी किण लेषे । छाईसमा उत्तराधेनमें छे, वले छठो ठाणो मूढ क्युं नही देषै॥ इ० ॥ ३० ॥ कहै धर्म हुवे साधु आहार कीयामें, तो क्यांने करे आहाररा पचषाणो । पाप जाणीने त्याग करेछे, उलटबुद्धी बोले एहवी वाणो॥इ०॥३१॥ साधु काउसगमें त्याग्यो हालवो चालवो, वले मुषसुं न बोलै निरवद वाणो । उण उलट बुद्धीरी सरधारे लेषे, ए पण पापतणा पचषाणो ॥ इ० ॥ ३२ ॥ कोई साध बोलणरा त्याग करी मुनसाजै, धर्मकथा मांडी न करे बखाणो । उण उलटबुद्धीरी सरधारे लेषे, ए पिण पापतणा पचषाणो ॥ इ० ॥ ३३ ॥ कोई साधु साधांने आहार देवणरा, त्याग करे मन उछरंग आणो । उण उलटबुद्धीरी सरधारे लेषे,एपण पापतणा पचषाणो ॥इ०॥३४॥

केई साधु साधांरी न करे वेयावच, त्याग करे मन उछरंग आणो। उण उलटबुद्धींरी सरधारे लेषे, ए पण पापतणा पचपाणो ॥ इ० ॥ ३५ ॥ साधां मूलगुणमें सरव सावज त्याग्यो, तिणसुं नवा पाप नलागे जाणो। आगलां कर्म काटण साधांरे, उतरगुण छे दसविध पचपाणो। आ सरधा श्री जिनवर भाषी ॥ ए आंकणी ॥ ३६ ॥ कोई वास बेलादिक करे संथारो, कोई साध करे नितरोनित आहारो। पापरा त्याग दोयांरे सरिषा, पण तपतणो छे भेदज न्यारो ॥ आ० ॥ ३७ ॥ जैणासुं चाल्या जैणासुं ऊभा, जैणासुं बैठा जैणासुं सूवंता। जैणासुं भोजन कियां जणासुं बोल्यां, तिण साधुने पाप न कह्यो भगवंता ॥ आ० ॥ ३८ ॥ दसमीकालिक चोथे अधेने, आठमी गाथा अरिहंत भाषी। छ बोल साधु जैणासुं कीयामें, पाप कहे भारीकरमा अन्हापी ॥ आ० ॥ ३९ ॥ निरवद गोचरी रिषेसरांरी, मोक्षरी साधन भगवंत भाषी। दसमीकालिक पांचमें अधेने, वाणुंमी गाथा बोले साषी ॥ आ० ॥ ४० ॥ सुध आहार कीयां साधु सदगत जावै, निरदोष दियां जाये सदगत दाता। दसमीकालिक पांचमे अधेने, पहिला उदेसारी छेहली गाथा ॥ आ० ॥ ४१ ॥ सात कर्म साधु ढीला पाडे, सूजतो आहार करे तिण कालो। भगोती सूतर पहिले सुतषंधे, नवमो उद्देसो जोय संभालो ॥ आ० ॥ ४२ ॥ आहार करे गुरुरी आगन्यासुं, तिण साधुने वीर कही छे मोषो। अठारमो अधेन गिनतारो जोई, सांसो काटो मेटो मनरो

धोपो ॥ आ० ॥ ४३ ॥ सवद रूप गंध रस फरसरी, साधांरे इव्रत मूल न कायो । सुगडांग अधेन अढारमें, उरूं उवाइ सुतरमायो ॥ आ० ॥ ४४ ॥ साधां रे इव्रत कहे पापंडी, तिण कुमतीरी संगत दूर निवारो । इम सांभलने उत्तम नरनारी, सरव व्रती गुरु माथे धारो ॥ आ० ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

समदृष्टि आरे पांचमे, थोरी रिधी अलप मान ।
मिथ्यादिष्टी जोडे हुसी, वहु रिद्ध वहु सनमान ॥ १ ॥

समण थोडाने मूढ घणा, पांचमे आरे चैन ।
भेष लेई साधुतणो, करसी कूडा फैन ॥ २ ॥

साधु अलप पूजा हुसी, ठणा अंगमें साप ।
असाधु महिमा अतिघणी, श्रीवीर गया छे भाष ॥ ३ ॥

कुदेव कुगुरु कुधर्ममें, घणा लोक रह्या बंध होय ।
उलपने निरणो करे, वेतो विरला जोय ॥ ४ ॥

साधमारग छे सांकडो, भोलाने पवर न काय ।
जिम दीवे परे पतंगीयो, तिम पडे पगांमें जाय ॥ ५ ॥

घणा साधुने साधवी, श्रावक श्राविका लार ।
उलटा पडी जिणधर्मथी, परसी नरक मंझार ॥ ६ ॥

महा नसीतमें मैं सुखी, गुण विणधारी भेष।
लाषां क्रोडांगमे सांवठा, नरक पडंता देष॥ ७॥

लीधा वरत न पालसी, पोटी दिष्ट अयांण।
तिणने कही छे नारकी, कोइ आपम लेज्यो ताण॥ ८॥

आगमथी अवला वहे, साधु नाम धराय।
सुधकरणीथी वेगला, ते कह्या कठालग जाय॥ ६॥

॥ ढाल चोथी ॥

(चन्द्रगुप्त राजा सुणो.–ए देशी.)

सीधा घर आयो साधुने, वले उर करावे आगेरे। एहवा उपासरा भोगवै, त्यांने वजर किरिया लागेरे। तिणने साधु किम जाणियें॥ १॥ आचारांग दूजे कह्यो महादुष्ट दोषण छे तिणमेंरे। जो वीरवचन सत्र लो करो, तों साधुपणो नहीं तिणमेंरे॥ ति०॥ २॥ साधु अरथे करावे उपासरो, छायो लिप्यो गृहस्थ वाल रागीरे। तिण थानकमें रहे तेहनें, सावज किरिया लागीरे॥ ति०॥ ३॥ तिणने भावेतो गृहस्थ कह्यो, दीयो आचारांग सापीरे। भेषधारी कह्यो सिद्धांतमें, तिणरी भगवंत काण न रापीरे॥ ति०॥ ४॥ सिज्यातर पिंड भोगवे वले, कुबुद्ध केलवे कपटीरे। धणी छोड आग्यो ले उररी, सरस आहारादिकरा

लंपटीरे ॥ ति० ॥ ५ ॥ सबलो दोषण लागे तेहने, नसीतमें डंड भारीरे । अणाचारी कह्यो दसवीकालिके, भगवंतरी सीष न धारीरे ॥ ति० ॥ ६ ॥ अणकंपा आण श्रावकतणी, द्रव दिरावण लागेरे । दूजे करणखंड हुवो व्रत पांचमो, तीजै करण पांचुही भागेरे ॥ ति० ॥ ७ ॥ गृहस्थ जीमावण री करे आमना, वले करे साधु दलालीरे । चोमासी डंड कह्यो नसीतमें, वरत भांग हुवो पालीरे ॥ ति० ॥ ८ ॥ करे वांसादिकनो बांधवो, वले कीया भीत ना चेजारे । छायो लीप्यो तेहने, कहीजे सारी कर्म सेजारे ॥ ति० ॥ ९ ॥ एहवी वसती भोगवे, ते साधु नहीं लवलेसोरे । मासिक डंड कह्यो तेहने, नसीतरे पांचमे उदेसोरे ॥ ति० ॥ १० ॥ बांधे परदापरेच कनातने, वले चंद्रवा सिरकीने टाटारे । साधु अरथे करावै ते भोगवे, ज्यांरा ज्ञानादिक गुण न्हाठारे ॥ ति० ॥ ११ ॥ थापी तो थानक भोगवै, त्यां दीया महाव्रत भांगोरे । भावे साधुपणाथी वेगला, त्यांने गुण विण जाणे सांगोरे ॥ ति० ॥ १२ ॥ काच चसमो वरज्यो ते राषीयो, वले जाणे छे दोषण थोरोरे । पांचमो वरत पूरो परयो, वले जिण आगन्यारो चोरोरे ॥ ति० ॥ १३ ॥ गृहस्थ आयो देषी मोटको, हाव भावसुं हरषत हुवारे । विछावणरी करे आमना, ते साधपणाथी जूवारे ॥ ति० ॥ १४ ॥ गृहस्थ आयो साधु तेडवा, कपडो वहिरावण लई जावैरे । इण विध वहिरे तेहमें, चारित किणविध, पावैरे ॥ ति० ॥ १५ ॥ साहमो आण्यो ले जावै तेडियो, ए दोषण दोनुंई भारीरे । यांने टाले करायत वीरना, सेव्या नहीं साध आचारीरे ॥ ति० ॥ १६ ॥ भोजणादिक में नीलोतरी, जीवांसहित कण भीनारे । एहवो वेहरे

संके नहीं, ते परभवसुं नहीं बीनारे ॥ ति० ॥ १७ ॥ एहवो अन्न पाणी भोगवै, त्यांने साधु किम थापीजैरे। जो सूतरनें साचो करो, त्यांने चोरारी पांतमें आपीजैरे ॥ ति० ॥ १८ ॥ गृहस्थना सजाय बोल थोकडा, साधु लिपे तो दोषण लागेरे। लिषायने अणमोदियां, दोय करण ऊपरला भागेरे ॥ ति० ॥ १६ ॥ पहिले करण लिष्यामें पाप छै, तो लिषायां दोषण उघारोरे। पांच महाव्रत मूलगा, त्यां सघलामें परिया बघारोरे ॥ ति० ॥ २० ॥ उपध भलावै ग्रहस्थने, उ नहीं साधु आचारोरे। प्रवचन न्याय न मानीयो, लीयो मुगतसुं मारग न्यारोरे ॥ ति० ॥ २१ ॥ गृहस्थ उपधरा करे जावता, किया वरत चकचूरोरे। सेवग हुवा संसारीया, साधुपणाथी दूरोरे ॥ ति० ॥ २२ ॥ साता पूछे पूछावे ग्रहस्थरी, इव्रत सेव्रण लागारे। अणाचारी कह्यो दसव्रीकालिकें, वले पांचूही महाव्रत भागारे ॥ ति० ॥ २३ ॥ श्रावकने वले श्राविका, करे मांहोमांहो कारजरे। साता पूछे विनोवे यावच करे, तिणमें धर्म परूपे अनारजरे ॥ ति० ॥ २४ ॥ अणाचार पूरा नहीं उलष्या, नव भांगा किणविध टालेरे। ग्रहस्थने सीपावै सेव्रना, लीधा वरत नहीं संभालेरे ॥ ति० ॥ २५ ॥ कारण परीयां लेणो कहे साधने, करे असुध वैहरणरी थापोरे। दातारने कहै निर्जरा घणी, वली थोरो बतावे पापोरे ॥ ति० ॥२६॥ एहवी ऊंधी करे परूपणा, घणा जीवांने उलटा नाषेरे। अणविचारी भाषा बोलतां, भारीकर्मा जीव न संकेरे ॥ ति० ॥ २७ ॥ भिष्ट आचाररी करे थापना, कहे कहे दूषम कालोरे। हिवडां आचार छे एहवो, घणा दोषणरो न हुवे टालोरे ॥ ति० ॥ २८ ॥ एक पोते तो पाले नहीं, वले पाले तिणसुं षेसोरे। दोष सूरष कह्या

तेहने, पहिलो आचारांग देषोरे ॥ ति० ॥ २६ ॥ पाट बाजोट आणे ग्रहस्थरा, पाछा देवणरी नहीं नीतोरे। मरजादा लोपने भोगवे, तिण छोडी जिणधर्मरी रीतोरे ॥ ति० ॥ ३० ॥ तिणने डंड कह्यो एक मासनो, नसीतरे उदेसे बीजैरे। न्याय मारग परूपतां, भारी करमा सुण सुण षीजैरे ॥ ति० ॥ ३१ ॥

॥ इति साधारा आचार सम्पूर्ण ॥
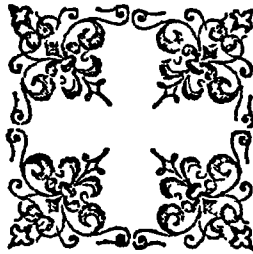
श्री भीखुचरित्र।

॥ दोहा ॥

अरिहंत सिद्धने आयरिया, उवभाया अणगार।
ए पांच पद परमेश्वरु, जपतां जय जय कार ॥ १ ॥

सासन नायक समरिये, महावीर मतिवंत।
मुक्त गया महोटा मुनि, शकल सिरे शोभंत ॥ २ ॥

पांचे पद प्रणमी करी, भाव भक्ति मन आण।
कर्म काटणरे कारणे, कहुं भीखुचरित्र बखाण ॥ ३ ॥

अरिहंतनी लेई आज्ञा, वली सुगुरु आज्ञा श्रीकार।
गुण गाऊं गुणवंतना, ते सांभलतां सुखकार ॥ ४ ॥

कहां उपना कहां जनमिया, परभव पहोता किण ठाम।
धुरसुं उत्पति त्यांरी कहुं, ते सुणजो शुद्ध परिणाम ॥ ५ ॥

ढाल पहिली।

(जाणपणों जग दोहलोरे लाल ॥ ए देशी)

तिण कालेने तिण समेरे लाल, इण दुःखम आरा मांयरे ॥ सोभागी ॥ जंबूद्विप भरतखेत्रमेरे लाल, मरुधरदेश सुखदायरे ॥ सो० ॥ भाव सुणो भीखुतणारे लाल ॥ १ ॥

हृदय शुद्ध धाररे ॥ सो० ॥ सुगुरुने समरयां थकांरे लाल, वर्त्ते जेजेकाररे ॥ सो० ॥ भा० ॥ २ ॥ गाम कंटलियो दीपतोरे लाल, कांठे करे कहायरे ॥ सो० ॥ कमद्धजराज करे तिहांरे लाल, वखतसिंघ सोहायरे ॥ सो० ॥ भा० ॥ ३ ॥ साहबलुजी सोभतारे लाल, दीपादे तस नाररे ॥ सो० ॥ तिहां भिषनजी आवी अवतरयारे लाल, सिंहसुपन दीठो श्रीकाररे ॥ सो० ॥ भा० ॥ ४ ॥ संवत सतरत्यासीसमेरे लाल, अषाढमास शुक्लपक्षमांयरे ॥ सो० ॥ तीखी तिथि तेरस सुणीरे लाल, जन्म कल्याणिक थाय रे ॥ सो० ॥ भा० ॥ ५ ॥ अनुक्रमे महोटा हुआरे लाल, एक परणया नाररे ॥ सो० ॥ पछे शील दोनुंई आदरयोरे लाल, कहे चारित्र लेस्यां लाररे ॥ सो० ॥ भा० ॥ ६ ॥ पछे वियोग पड्यो त्रीयातणोरे लाल, सगपण मलता अनेकरे ॥ सो० ॥ छता भोग छटकावियारे लाल, आयो वैराग्य विशेषरे ॥ सो० ॥ भा० ॥ ७ ॥ संवत अढार आठां वरसमेरे लाल, लीधो द्रव्यें संयमभार रे ॥ सो० ॥ गुरु किया रुगनाथजीरे लाल, पूरो उलख्यो नहीं आचाररे ॥ सो० ॥ भा० ॥ ८ ॥ काल केतो वित्यापछीरे लाल, वांच्या सूत्र सिद्धंतरे ॥ सो० ॥ ठीक पड्या पछताव्यांरे लाल, एतो न दीसे संतरे ॥ सो० ॥ भा० ॥ ९ ॥ यां थापिता थानक आदरयारे लाल, वली आधाकर्मि जाणरे ॥ सो० ॥ मूल रालिया मांहे रेवेरे लाल, यां भांगी भगवंत आणरे ॥ सो० ॥ भा० ॥ १० ॥ विवेक विकल बालक भणीरे लाल, मूंढता नहीं शंके लगाररे ॥ सो० ॥ मत बांधणरे कारणेरे लाल, यां भांगी भगवंत काररे ॥ सो० ॥ भा० ॥ ११ ॥ नित्य पिंड लाग्या बहिरवारे लाल, पोथीआंरा गंज ठामोठामरे ॥ सो० ॥ पडिलेह्यां विना पडियां

रेवेरे लाल, एहांरा किणविध सरसे कामरे॥ सो० ॥ भा० ॥ १२॥
भंड उपकरणने पातरारे लाल, वली वस्त्र उपधि अनेकरे॥ सो० ॥
अधिक राखे छे जाण जाणनेरे लाल, यां बूझे छे विना
विवेकरे ॥ सो० ॥ भा० ॥ १३ ॥ वली क्रियामा काचा घणारे
लाल, ते कह्यो कठांलगे जातरे ॥ सो० ॥ समकितरत्न जिंन
भाखियोरे लाल, यांने तेपण नाव्यो हाथरे ॥ सो० ॥ भा० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

विधसु करी विचारणा, बारंबार विशेष ।
शुद्धमारग लेणो सही, परभव सामो देख ॥ १ ॥

रखे जूठ लागे ला मोभणी, तो खप करवी बारंबार ।
सूत्र सघलां बांचवां, जेम संका न रहे लिगार ॥ २ ॥

राजनगर भणतां थकां, उघडी अभ्यंतर आंख ।
हवे चारित्र लेई शुद्ध पालणो, छोडी आतमनुं वांक ॥ ३ ॥

मैं वैराग्यें घर छोडियो, न्याती जातीरो वाण ।
इणविध जन्म पूरो कियां, मूल न होवे कल्याण ॥ ४ ॥

वीर वचन विचारतां, ए निश्चे नहीं अणगार ।
खप करी समजावुं एहने, वलि पालुं शुद्ध आचार ॥ ५ ॥

ढाल बीजी ।

(आ अणुकंपा जिन आज्ञामां.—ए देशी.)

एहवो विचार कियो तिण ठामें । गाढीबात हियामां धारी । हरनाथजी टोकरजी भारिमालजी, समजीने हुआ पुजरेलारी । भीखुचरित्र सुणो भव्यजीवां । ए आंकणी ॥ १ ॥ मरुधरदेश में आव्या तेवारे, मालिया सोजतसेर मोजार । गुरुने कहे वीरवचन संभालो, आपांमें नहीं छे शुद्धाचार ॥ भी० ॥ २ ॥ देव अरिहंत ने गुरु निग्रंथ, केवली भाष्यो धर्म तंतसार । ए तिनुंहि रत्न अमूलक जाणो, यां तिनांमें भेल म सर्हो लिगार ॥ भी० ॥ ३ ॥ उरहि वस्तुमें भेल पड्याथी, रुडी वस्तु बिगडे छे विशेषे । तो पुण्यने पापनो भेल कियाथी, सांसो हुएतो सूत्रमें देखो ॥भी०॥४॥ शुद्ध श्रद्धा पण हाथ न आइ, शुद्ध करणीथी पण अलगा पडिया । आगम न्याय हजी शुद्ध सर्हो, तो राखुं माथे गुरु धरिया ॥ भी० ॥ ५ ॥ भेषधारयां तो मूल न मान्यो, जब भाखु मनमां विचारयो एम । उतावल कियातो ए नहीं समजे, धीरे समजाय लेस्यां धरी प्रेम ॥ भी० ॥ ६ ॥ गुरुने कहे चोमासो भेलां करस्यां, चरचा करसुं दोनुं रुडी रीत । सूत्र वांचीने निरणो करस्यां, खोटी श्रद्धा छोडस्यां विपरीत ॥ भी० ॥ ७ ॥ रुगनाथजी कहे चोमासुं भेलो कियां, वली म्हारा चेलाने लेवे समजाय । भीखु कहे जडग्राजने राखो, त्यांने चरचानी खबर पडे नहीं कांय ॥ भी० ॥ ८ ॥ इणविध उपाय घणाये किया, पण चरचा न कीधी चित्त लगाय । कर्म घणाने बहुल संसारि, तेतो किण-विध आवे ठाय ॥ भी० ॥ ९ ॥ वली बीजीवार मल्या बगडीमां,

कहे थें वीरवचन वीसरीयां । निरणय करतां निश्चें न जाण्या, जब भीखु तडके तोड नीसरीया ॥ भी० ॥ १० ॥ बगडीसुं विहार कियो तिणवेला, बवाल बाजवा लागी ताम । अजयणा जाणी छत्रीमां बेठा, रुगनाथजी आया तिण ठाम ॥भी०॥११॥ वली लोक घणां आव्यां शहेरबारे, ते कहे भीखुने वारंवार । टोलो छोडी मत निकलो बारे, धीरप राखो बात विचार ॥ भी० ॥ १२ ॥ रुगनाथजी कहे बात सुणो हमारी, नहीं नभोला इण दुसमकाल । शुद्ध आचार साधु रो न चाले, हवे भीखु इणविध भाषें रसाल ॥ भी० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

भीखु वलता भाषे भलुं, मैं किम मानु थारी वात ॥
निरणो कियो सूत्र वांचीने, तिणमें संका नहीं तिलमात ॥ १ ॥
छेला दिनलगे चालशे, तीर्थ धर्म अगाध ।
में चोखो साधुपणो पालसां, अरिहंत वचन आराध ॥ २ ॥
छतरीमां बेठा थकां, मोह आण्यो साचात् ।
मनमांहि चिंता हुइ, पण गरज न सरी अंसमात ॥ ३ ॥
उदयभाण बोल्या इस्यो, आंसुपंच करो केम ।
टोलातणा धणी वाजने, आछी न लागें एम ॥ ४ ॥
किणरो एक जावे तेरे, चिंता होवे अपार ।
महारा पांच जाए परा, गणमां पडे विगाड ॥ ५ ॥

ढाल त्रीजी ।

(कामणगारी छे कामनीरे.— ए देशी.)

फेर बोल्या रुगनाथजीरे, थें जासो कतरीक दूर । आगो थारोने पीछो महारोरे, हुंलोकल गावसां पूर । चरीत्र सुणो भीखुतणुंरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ भीखु चलतां भांषे भलूंरे, जीवणो केतोएक काल । चोखो साधुपणुं पालस्यांरे, नहीं लोपा जिनवर पाल ॥ च० ॥ २ ॥ वीहार कीयो बगडी थकीरे, हुआ रुगनाथजी पण लार । चरचा करी वरलुं मधेरे, ते सांभलजो नरनार ॥ च० ॥ ३ ॥ रुगनाथजी ईशडी कहेरे, ए दुसमकाल साचात । चोखुं साधपणुं पले नहींरे, मानो हमारी बात ॥ च० ॥ ४ ॥ भीखु कहे जिन भाषिउरे, सूत्र आचारांग मांय । ढीला भागल एम भाषसीरे, हमणां शुद्ध न चलाय ॥ च० ॥ ५ ॥ बलसंघयण हीणा करीरे, पूरो न पाले आचार । आगुच जिनजी इम भाषियोरे, इम कहेसे भेषधार ॥ च० ॥ ६ ॥ साची सूत्रतणी वारतारे, मानी नहीं लगार । समजाव्या समजे नहींरे, जब खष्ट हुआ तेणिवार ॥ च० ॥ ७ ॥ भीखनजी आदेदे तिहांरे, तेरे जणा हुआ तैयार । पाछी दिक्षा लेवांभणीरे, करवा आतमनुं उद्धार ॥ च० ॥ ८ ॥ श्रावक पण तिण अवसररे, जोधाणसेर में ताम । तेरे भाइयें पोसा कियारे, तिणसुं दियो तेरापंथ नाम ॥ च० ॥ ९ ॥ पाखडपंथ दूर कियेरे, देखरह्या अरिहंत । अनेरो पथ माने नहींरे, जाणीये तेरापंथी तंत ॥ च० ॥ १० ॥

गया देश मेवाड में रे, केलवासहेर मोजार । आज्ञा लेइ अरिहंतनी रे, पचख्या पाप अढार ॥ च० ॥ ११ ॥ संवत अढार सतरो तेरेरे, आसाढ शुद पुनेम जाण । संयम लियो स्वामिजीयेरे, करी जिनवचन प्रमाण ॥ च० ॥ १२ ॥ हरनाथजी हाजर हुतारे, टोकरजी तीखा सुविनीत । परमभक्त सीख पाटवीरे, इहां राखी पूजनी परतीत ॥ च० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

चारित्र लीधो चूंपसुं, पांखडपंथ निवार ।
भवियणरे मन भावता, हुआ मोटा अणगार ॥ १ ॥

उदे उदे पूजा कही, श्रमण निग्रंथनी जाण ।
तिणसुं पूज प्रगट थया, ए जिनवचन प्रमाण ॥ २ ॥

वली वंकचूलीयामां वारता, त्रैपना पछी विचार ।
अधिक पूजा अरिहंते कही, श्रमणनिग्रंथनी श्रीकार ॥ ३ ॥

तिणसुं पूज पूजाविया, दिन दिन अधिक दयाल ।
उपकार किधा अति घणा, मट्या मोहजंजाल ॥ ४ ॥

किहां किहां विचरया स्वामीजी, किहां किहां किया उपकार ।
थोडोमुं प्रगट करुं, वे सुणजो विस्तार ॥ ५ ॥

ढाल चोथी ।

(आछे लालनी देशी छे)

हाडोति ढुंढाड, वली मरुधर देश मेवाड ॥ आ छे लाल ॥ ए चारुं देशमां आविआजी ॥ १ ॥ पाखंड उठ्या अनेक, पूजे मेल्या आणि विवेक ॥ आ० ॥ सूत्र चरचाना जोरसुंजी ॥ २ ॥ करता पर उपकार, पाछा आव्या मारवाड ॥ आ० ॥ चरम उपकार हुओ घणोजी ॥ ३ ॥ चार भायांने बायां सात, त्यां दिक्षा लीधी पुज्यरे हाथ ॥ आ० ॥ वैराग्ये घर छोडियांजी ॥ ४ ॥ चांणोद आदे देइ जाण, पीपारताइ पीछाण ॥ आ० ॥ छेला दर्शन दिया पूज्यजी ॥ ५ ॥ गाम नगर करता उपकार, आव्या सोजतसेर मोजार ॥ आ० ॥ रायचंदनी छत्रीमें उतरयाजी ॥ ६ ॥ हुकुमचन्द आछो आयो ताम, पूज्यने वांद्या सीस नाम ॥ आ० ॥ वीनति तो त्रिधसुं करीजी ॥ ७ ॥ चोमासो करो सिरियारी माय, पकीहाटें बिराजो आय ॥आ०॥ पूज्ये मानी लीधी वीनतिजी ॥८॥ बगडी कंटालिये होय, विनति घणी कीधी जोय ॥ आ० ॥ चोमासारी अरज मानी नहींजी ॥ ९ ॥ पुज्य आया सिरियारी चलाय, दियो चोमासो ठाय ॥ आ० ॥ आज्ञा लेई पकीहाटमां उतारयाजी ॥ १० ॥ भारमलजी खेतजी उदेराम, रायचन्दजी ब्रह्मचारी ताम ॥ आ० ॥ जीवो मुनि वैरागी भगजी भक्ति

मांजी ॥ ११ ॥ श्रावण मास मोजार, आवश्यक अर्थ विचार ॥ आ० ॥ लखि लखि शिष्यने बतावताजी ॥ १२ ॥ गोचरी फेरया ठाम ठाम, दर्शन देवा काम ॥ आ० ॥ श्रावण शुद पुनम लगेंजी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

उपमा तो आछी कही, श्रमण निग्रंथने श्रीकार ।
चोरासी अती दीपती, अनुयोगद्वोर मोजार ॥१॥

वली दसमा अंग अधिकारमां, कही त्रीस उपमा तंत ।
श्रमण निग्रंथने सोमती, भाषी गया भगवंत ॥२॥

वली षटदश दीधी उपमा, बहु श्रुतने श्रीकार ।
उत्तराध्ययन अध्यन इग्यारमें, वीरे कह्यो विस्तार ॥३॥

इण अनुसारे ओलखो, भीखुने भली भात ।
उपमा गुण आछा घणा, त्यारो पार न कोई पावंत ॥४॥

गुणवंत गुरुरा गुण गाविया, तीर्थंकर नामगोत्र बंधाय ।
हवे उपमा सहित गुण वरणवुं, ते सुणजो चित्त लाय ॥५॥

ढाल पांचमी।

(हरियाने रंग भरियाजी ॥ ए देशी)

आदिनाथ आदेसरजी, जिनेश्वर जगतारण गुरु। धर्म आद्य काढी अरिहंत, इण दुसमआरामां करम कट्याजी ॥ प्रगट्या आदिजिणंद ज्युं, ए अचरिज अधिक आंतरे ॥ १ ॥ साध भीखु सुखदायाजी, मन भाया भवियण जीवने ॥ ए आंकणी ॥ स्यामवरण अति सोहेजी, मन मोहे नेमजिणंद ज्यूं। ज्यारी वाणी अमिय समाण, भवियणरे मन भायाजी ॥ चित्त लायां तीरथ चारमां, मुनीगण रतनारी खाण ॥ साध० ॥ २ ॥ कालवादी आदि जाणीजी, मत आणी मारग उथापवा। कुबध्यां केलव्या कुड, पाखंड गोचा पोचाजी। कांइ ज्ञान करी गिरवामुनी, चरचा करी किया चकचूर ॥ साध० ॥ ३ ॥ संख उज्वल श्रीकारीजी, पयधारी दोनुं दीपतो। बगडे नहीं दूध लगार, ज्युं तप जप क्रिया कीधीजी। कर लीधी आतम उजली, पयदश यतिधर्म धार ॥ साध० ॥ ४ ॥ कुमुददेशनो घोडोजी, अति सोरो करे सिरदारने। नहीं आणे एर लगार, ज्युं भवियणने थें तारयाजी उतरया पार संसारथी, सुखे जासे मुगत मोजार ॥ साध० ॥ ५ ॥ सूर सिरोमणी साचोजी, नहीं काचो लडतां कटकमें। सुवनित अश्व असवार, ज्युं करमकटक दल दीधोजी। जश लीधो जाजो जगतमां, चड्या सूत्रअर्थे श्रीकार ॥ साध० ॥ ६ ॥ हाथी हथिणापुर वारोजी, बलधारी दिन दिन दीपतो। बधे शाठ वरस शुद्ध मान, ज्युं तेंयालीस वरसांलगे जाजाजी। तपता जातेज तीखा रह्या, त्यांरा पराक्रम पण परधान ॥ साध० ॥ ७ ॥ कूखन्ध

सिंघ खंध भारीजी, सरदारी गायां गणमध्ये । ठेठ भार वहे भली भांत, ज्युं गणभार ठेठ निभायाजी । चलाया तीरथ चुंपसुं, सहु साधामांहे सोहंत ॥ साध० ॥ ८ ॥ सिंह मृगादिकनुं राजाजी, अति ताजा दाढा तेजसुं । तेने जीपन जीपे कोय, ज्युं केशरीनी परे गुंज्याजी । सदा धुज्या पांखडी धाकसुं, थाने गंज शक्यो नहीं कोय ॥ साध० ॥ ९ ॥ वासुदेव बल जाणोजी, बखाण्यो वीरचरित्तमां । संख चक्र गदा धरणहार, थारा ज्ञान दर्शन चारित्र तीखाजी । नहीं फीका त्यांकर तेजसुं, पूज्ये पाखंड दिउ निवार ॥ साध० ॥ १० ॥ आखा भरतनो राजाजी, अति ताजा सेन्या सज करी । आणे वैरियांरो अंत, थे पाखंड सहु उलखाया जी । हटायां बुद्ध उत्पातसुं, तत्थ बताया तंत ॥ साध० ॥ ११ ॥ सक्रेंद्र सिरदारीजी, वज्रधारी सुरमां सोभतो । जखादिकने जीपे जाण, जिम सूत्रवज्र सरिकारीजी । बलधारी बुद्ध उतपातसुं, पूज्ये पाडी पाखंडियारी हांण ॥ साध० ॥ १२ ॥ आदित्य उग्यो आकासेंजी, विणासे तिमिर तेजसुं । अधिको करे उद्योत, ज्युं अज्ञान अंधारो मेटायोजी । बतायो मारग मोक्षरो, घणारा घटमां घाली ज्योत ॥ साध० ॥ १३ ॥ चंद सदा सुखकारीजी, परिवारि ग्रहना घणमध्ये । सोमकारी सोभंत, ज्युं चार तीरथ सुखदायाजी । मन भायां भवियण जीवने, भीखु भला जशवंत ॥साध०॥१४॥ लोक घणा आधारीजी, अति भारी धान करी भरयां । ते कोठागार कहाय, ज्युं ज्ञानादिक गुण भरियांजी । परवरियां पुज्य प्रगट थयां, आधारभूत अथाय ॥ साध० ॥ १५ ॥ सर्व वृक्षांमां अति सोहेजी, मन मोहे दीसे दीपतो, जंबु सुदर्शन जाण । ज्युं संतामां सीरदारीजी, मत भारी भीखु भरतमां, हुआ अचरिजकारी

सुजाण ॥ साध० ॥ १६ ॥ सीती नदी सिरे जाणीजी, बखाणा वीर सिद्धांतमां । पांचसो जोजन प्रवाह, ज्युं तपज्योते अति तीखाजी । नहीं फीका रह्याज फावता, सदाकाल सुखदाय ॥ साध० ॥ १७ ॥ मेरुनी उपमा आछीजी, नहीं काची कही कृपालजी । ते उंचो घणुं अत्यन्त, औषध अनेक छाजेजी । विराजे गुण त्यांमें घणा, ज्युंइ बहुश्रुत बुद्धवंत ॥ साध० ॥ १८ ॥ स्वयंभूरमण समुद्रेजी, पुरो पावराज पहोलो कह्यो । प्रभूत रतन भरपूर, ज्यूं सागर जेम गंभीरांजी । सूरवीरां गुण करी गाजता, सूत्र चरचामां सूर ॥ साध० ॥ १६ ॥ ए षट्दश उपमा आछीजी, ए साची सूत्रमां कही । बहुश्रुतने श्रीकार, इणे अनुसारे जाणोजी, पीछाणो करल्यो पारखुं, ए भीखु गुणरा भंडार ॥साध०॥२०॥ उपमा अनेक गुण छाजेजी, विराज्या गादी वीररी । पूज्य पाटलायक गुण गाय, समुद्र जेम अथागजी । जलथाग जिन भाष्यो नहीं, गुण पूरा केम कहाय ॥ साध० ॥ २१ ॥ पाटलायक शीष्य भालीजी, सुहाली प्रकृति सुन्दरु । भारीमालजी घेर गंभिर, पदवी थिर करी थापीजी । कांई आपी तेह आचारजे, जाणी सुविनित सुधीर ॥ साध० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

चरम कल्याणक हुउ घणुं, तिणरो सुणो सहु विस्तार ।
सरियारिमां स्वामिजी विराजिया, हवे भाद्रवामास मोजार ॥१॥

अल्प अशाता फेरातणी, कांइक जणाणी जाण ।
उर अधिक अशाता न उपनी, पूर्नला पुण्य प्रमाण ॥२॥

जेने पूर्व पाप प्रबल हुवे, ते रीवे घणा दिन रात।
एवी अशाता वेदनीयांरे नहीं, एपदवीधर पूज्य विख्यात ॥३॥

हवे पजोसणा देने परवडा, तीन ढंक हुवे वखाण।
नरनारी आवे घणा, सुणवा सुन्दर वाण ॥४॥

शुक्ल पक्ष सुहामणुं, मास भाद्रवो जाण।
चोथज आई चांदणी, आयु नेडो आयो पीछाण ॥५॥

सत्य योगी ने स्वामी कहे, थें आछा शीष्य सुवनित।
साज दियां थे मुज भणी, में संयम पाल्यो रुडी रीत ॥६॥

टोकरजी तीखा हूता, विनयवंत विचार।
भक्ति करी भारी घणी, सुविनीत हूआ श्रीकार ॥७॥

भारीमालजी सुं भेलप घणी, रहीज रुडी रीत।
जाणे पाछल भव तणी, लगती हुंती प्रीत ॥८॥

ए तिनारा साह्यथी, में पाल्यो संयम भार।
चित्त समाध रही घणी, रहीज एकण धार ॥९॥

उत्तराध्ययन पहेलाध्ययन में, भाष्यो वीर जिणंद।
शिष्य सुविनीत हुए सदा, तो गुरुने रेवे आणंद ॥१०॥

ढाल छट्ठी।

(पंथीडारे वात कहेने धुरछेहथीरे ॥ ए देशी.)

देवेरे देचे सीखामण स्वामजीरे, सासण चलावण कामरे। साधजरे साध श्रावकने श्रावकारे। घणा सुणता तिण ठामरे। सुणजोरे सुणजो सीख सोहामीतणीरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मुजनेरे मुझने जाणता जिणविधिरे, राखता मुज परतीतरे। तिम हिजरे तिमहिज परती राखजोरे, भारीमालजीरी एहिज रीतरे ॥ सु० ॥ २ ॥ आज्ञारे आज्ञा लोपे एहनीरे, दोप लाग्यां काढे घणवाररे। तिणनेरे तिणने साधु मत सर्दजोरे, मत गणजो तिरथ मोंजाररे ॥ सु० ॥ ३ ॥ आज्ञारे आज्ञा आराधे एहनीरे, सदा रहेवे शुभनीतरे। सेवारे सेवा भक्ति करजो एहनीरे, आ जिनमारगनी रीतरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ में पदवीरे पदवी दीधी छे एहनेरे, भारलायक जाणी भारीमालरे। संकारे संका मूल म राखजोरे, एयांमें असल साधारी चालरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ शुद्धरे शुद्ध साधाने सेवजोरे, अणाचारीसुं रहजो दूररे। आ छेलीरे छेली सीखामण धारजोरे, ज्युं करम करो चकचूररे ॥ सु० ॥ ६ ॥ उसनारे उसनाने वली पासत्थारे, कुशीलिया परमादि पींछाणरे। आपछंदारे आपछंदा आपछंडेरेवे सहिरे, तिणे भागी भगवंत आणरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ यां पांचुनेरे पांचुने प्रभु निषेधियारे, ज्ञातानिसीत्थ विसालरे। तियांरो संगरे संग परचो कररवो नहींरे, आ बांधी भगवंत पालरे ॥ सु० ॥ ८ ॥ आणंदरे आणंद श्रावके अभिग्रह लियोरे, जिनमतथी जे न्यारा जाणरे। तियांरी सेवारे सेवाभक्ति करवी नहींरे, पेला बोलायारा पच्चक्खाणरे ॥ सु० ॥ ९ ॥

वीररे वीर जिणंद वखाणिउरे, आणंद अभिग्रह श्रीकाररे । थें एहीजरें एहिज रीत आराधजोरे, जिम पामो भवजलपाररे॥सु०॥१०॥ सघलारे संघला साधने साधवीरे, राखजो हेत विशेषरे । जिण तीणनेरे जिण तिणने मत मुंढजोरे, दिक्षा देजो देख देखरे ॥ सु० ॥ ११ ॥ कोइ दोषजरे दोष लगावे गणमधेरे, वली कर्मवशे बोले कूडरे । काणजरे काण मत राखजो केहनी रे, प्रायश्चित न लीये तो करजो दूररे ॥ सु० ॥ १२ ॥ आ दीधीरे दीधी सीखामण स्वामीजीरे, एकांततारणने तामरे । उरजरे उर कारण त्यांने को नहीरे, तिणसुं सीजे निकेवल कामरे ॥ सु० ॥१३ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम वचन श्रीपूज्यना, चरमवचन चमत्कार ।
उपदेश तो आछो कह्यो, ते सांभलतां सुखकार ॥ १ ॥

शुद्ध गति जावे जेहना, जैसाइ रहे परिणाम ।
गंगा नीरपरें निरमला, चित्त रहे एकणठाम ॥ २ ॥

परमभक्ता शीष्य आदिदे, ठेठसुधी पूछयो वारंवार ।
कांइ अशाता आपरे, स्वामी कहे नहीं लिगार ॥ ३ ॥

श्री वीर मुगत बिराजिया, सोल पहोर कियो वखाण ।
इणे दुसम आराइधकर्मे, तिमहिंज भीखु जाण ॥ ४ ॥

वली उपदेशदियो किणविधें, किणविध बोल्यो वाण ।
भव्यजीवां तुमे सांभलो, चित्तने आणी ठिकाण ॥ ५ ॥

ढाल सातमी ।

(चतुरनर वात विचारो एह.--ए देशी.)

भारमलजी आदे साधांभणीरे, श्री पूज्यजी केवेछे बोलाय । चरमसीखामण माहेरीरे, सांभलजो सुखदाय । भविकरे भिखु दे उपदेश ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेंतो जावंता दीसां परभवारे, संका न दीसे कांय । मरणारो भय माहरे नहींरे, हैयडे हर्ष अथांय ॥ भ० ॥ २ ॥ में चारित्र दिउ घणा जण भणीरे, समकित पमाइ रुडी रीत । श्रावक श्राविका किया घणारे, एकंत तारणनी नीत ॥ भ० ॥ ३ ॥ में जोडां कीधी जुगतसुंरे, समजाव्यां नर नार । उणायत रही नहींरे, माहारा मनह मोजार ॥ भ० ॥ ४ ॥ थें पण रेजो निर्मलारे, मोह मत करजो लिगार । अरिहंत वचन आराधजोरे, जिम निश्चे खेवो पार ॥ भ० ॥ ५ ॥ रायचंदजी ब्रह्मचारीने इम केवेरे, तुमे छो बालक बुद्धवान । मोह मत करजो माहरोरे, राखजो रुडो ध्यान ॥ भ० ॥ ६ ॥ ब्रह्मचारी कहेवे स्वामिनेरे, आप पधारो शुभगतिमांय । पंडितमरण करो भलीरे, हुं मोह आणु किण न्याय ॥ भ० ॥ ७ ॥ वली पूज्य वाणी इणविध वदेरे, थें आराधजो आचार । इर्या भाषाने एखणारे, लोपजो मती लिगार ॥ भ० ॥ ८ ॥ भंड उपकरण लेतां मेलतांरे, जिम परठतां पुंजतां ताम । जयणा किजो जुगतसुंरे, जिम सीजे आत्म काम ॥ भ० ॥ ९ ॥ शिष्य शिष्यणी उपकरण उपररे, ममता म किजो कोय । ममता मोह कियांथकांरे, करमतणुं बंध होय ॥ भ० ॥ १० ॥ पुद्गल में ममता कोइ मत करोरे, इण

ममतासुं दुःख थाय । समता सदाइ राखजोरे, जिम जावो वेगा मुगतगढ मांय ॥ भ० ॥ ११ ॥ प्रथम भक्ता शिष्य पाटवीर, तव बोले एवी वाय । विरह पडे दर्शनतणुंरे, तव पूज्य बोल्या सुखदाय ॥ भ० ॥ १२ ॥ थें संयम आराधी सुरथसोरे, मुजथी मोटा अणगार । महा विदेहखेत्र मध्येरे, यांरा देखजो दीदार ॥ भ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सत्ययोगी कहे श्रीपूज्यने, आप जासो भंडरे मांहे ।
स्वामि कहवे सुणो साधजी, महारे भंडतणी नहीं चाह ॥ १ ॥

पुद्गलिकसुख छे पावला, में भोक्त्या अनंतीवार ।
त्यांरी वांछा मूल करुं नहीं, माहरे जावुं मुक्त मंझार ॥ २ ॥

सकाम मरण करी स्वामिजी, ए पंडितमरण पीछान ।
आलोयणा आछी करी, हुइ गया शुद्ध सुजाण ॥ ३ ॥

सदा निर्मला था स्वामिजी, पण मरणअंत विशेष ।
नरमाइ रही घणी, परभव साम्हुं देख ॥ ४ ॥

आलोयणा किणविध करे, किणविधना हुता जाण ।
वचन अमुलक वागरे, ते सुणजो चतुर सुजाण ॥ ५ ॥

ढाल आठमी।

(हवे राणी पदमावती ॥ ए देशी.)

अरिहंत सिद्धनी साखसुं, वडा शिष्य सुवनीत। वली सत्ययोगीरी साखसुं, वचन वदे रुडी रीत। सुणजो आलोयणा स्वामितणी ॥ १ ॥ ए आंकणी छे ॥ चोरासी लाख जीवायोनने, खमावुं करी खांत। राग द्वेष नहीं माहरे, ते देखी रह्या अरिहंत ॥ सु० ॥ २ ॥ शिष्य सुवनीत हुआ घणा, केई कुशिष्य अवनीत। कठण वचन कह्या तेहने, खमावुं रुडी रीत ॥सु०॥३॥ साधवियां सतियां मध्ये, कहि करडी विचार। कठण सीख दीधी हुवे, ते खमावुं बारंबार ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्रावकने वली श्राविका, केईकांने करडा देख। कठण वचन कह्या हुवे, ते खमावुं छुं विशेष ॥ सु० ॥ ५ ॥ चार तीर्थने शुद्ध चलावियां, सीख दीधी सुखदाय। करडो काठो लागो हूवे, त्यांने देजो खमाय ॥ सु० ॥ ६ ॥ में चरचा कीधी चूपसुं, घणासुं ठाम ठाम। कठण बचन कह्या जाणी तेहने, खमाऊं लेई लेई नाम ॥ सु० ॥ ७ ॥ जिनमार्गना द्वेषी छे घणा, ते कूडी करे बकबाय। खेद आण्यो हुवे किण उपरे, ते सहुने देजो खमाय ॥ सु० ॥ ८ ॥ त्रस थावर आदे जीव छै घणा, त्यांरी हिंसा लागी होय। मन वचन काया करी, मिच्छामिदुक्कडं मोय ॥ सु० ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया करी, लोभ भय वस होय। जे कांई झुठ लागो हुए, मिच्छामिदुक्कडं मोय ॥ सु० ॥ १० ॥ कोई अदत्त मुने लागो हुए, सुता जागता कोय। ममता धरी होवे मैथुनथी, ते आलोयण खातो

जोय ॥ सु० ॥ ११ ॥ शिष्य शिष्यणी वस्त्र पात्र उपरे, मूर्छा कीधी देख। मन वचन काया करी, मिच्छामिदुकडं विशेप ॥सु०॥१२॥ एहवी आलोयणा सुणी; आणे मत वैराग। तेपण कर्म खपावे आपरा, पामे सुख अथाग ॥ सु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

पांचे आश्रव मांहेलो, लागो हुए कोईवार।
व्रत सांभल्या स्वामिजी, आलोया अंतिचार ॥ १ ॥

वडा शिष्य सुवनीतरी, जुगती मलीज जोड।
लारे कांई राखी नहीं, काटवा करम कठोर ॥ २ ॥

थोडी अशाता फेरातणी, उर असाता नहीं तिणवार।
पट शिष्य सेवा साचवे, एवां पुण्य संच्या सार ॥ ३ ॥

आज्ञा उपर आदरी, भीखु भलेज भाव।
जन्म सुधारयो जुगति सुं, जाणे तिरणरो दाव ॥ ४ ॥

सखरी करी संलेषणा, अणसणनुं अधिकार।
भाव धरि भवियण सुणो, आलस अंग निवार ॥ ५ ॥

ढाल नवमी।

(आवियो रावण ॥ ए देशी)

भाद्रवा शुक्ल पंचमि प्रगटी, चोथ भक्त चउविहार ठावे। अशाता अधकी तृषातणी उपनी, तोहि सूर कायरपणुं नाहीं लावे। कर हो जीव तुं भगति भीखुतणी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पारणुं कियो पांचम प्रभातरो, औषध अल्पसुं अहार लीयो। तेपण अहार सम्रु नहीं प्रगम्यो, तिणे दिन तीन अहाररो त्याग कियो ॥ क० ॥ २ ॥ सातम आठम अहार ले अल्पसुं, ततक्षण त्याग तो करलेवे। पुद्गल स्वरूप तो पूज्य पिछाणिने, आशा वांछा सहु मेटदेवे ॥ क० ॥ ३ ॥ खरेमते कहे खेतसी खांतकर, तुरत तो त्यागरो नाहीं केणो। पूज्य कहे देह पातली पाडवी, तरस दिन तो अणसण लेणो ॥ क० ॥ ४ ॥ वीरधो शेठ तो श्रावक सनमुखे, विविध प्रकारे सुखडी आपे। पूज्य कहे इच्छा नहीं माहरे, थिर करी मोक्षसुं प्रीत थापे ॥ क० ॥ ५ ॥ भाद्रवा शुक्लपक्ष नवमीतणे दिने, पूज्य कहे आहार तो त्याग लेउं। सत्य योगी कहे मुझ हाथरो चाखिए, चरम आहार थोडो आण देउं ॥ क० ॥ ६ ॥ अल्पसो आहार लाव्या स्वामि खेतसी, चाख करत ततक्षण त्याग कीधो। एतो मन राख्युं सुविनीत शिष्यतणुं, पण इच्छासुं आहार त्यां नाहीं लीधो ॥ क० ॥ ७ ॥ दशमतणे दिन परमभगता शिष्य, कहे पूज्यजी आहार ल्यो एम भांखे। चालीस चावल दश मठेरे आसरे, वीनती मानीने तेह चाखे ॥ क० ॥ ८ ॥ इग्यारसे तो पूज्य आहार त्यागी दियो, अमल पाणीरो आगार राख्यो।

हवे मुझ आहार लेता मत जाणजो, वचन अमुलक एम भाख्यो ॥ क० ॥ ६ ॥ सनमुख पधारियां तावडो आवियो, भारस रेलो थिर कर ठायो । सक्ति इसी रही आंहार कियाविना, ए अचरिज अधिको आयो ॥ क० ॥ १० ॥ जीवण आछे अरज कीधी हाटनी, तोही पूज्य पकीहाट आय वेठा । सेण सेज्याकरि विसराम तिहां लियो, स्वामितो मनमांहे अधिक सेंठा ॥क०॥११॥ सुखे सुता देखी पूज्य परमगुरु, रिख रायचन्द आए एम बोले । कृपा तो कीजिये दरिशण दीजिये, ताम तो पूज्यजी नयन खोले ॥ क० ॥ १२ ॥ पूज्य सुं वीनवे पराक्रम हीणा पड्या, ब्रह्मचारी विनयसुं एम बोले । केसरीनीपरें वयण हीयडे धरे, ताम ते आपरो तेज तोले ॥ क० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

बोलाव्या भारीमालजी भणी, वली खेतसी सुजाण ।
याद करतां आविया, चटके उभा आण ॥१॥

अरिहंत सिद्ध प्रणमी करी, पोतेज किया पचक्खाण ।
तिन आहाररा त्याग जावजीव छे, ऊंचे स्वर बोल्या इम वाण ॥२॥

प्रथम भगताशीष्य इम कहे, केमन राख्यो अमलरो आगार ।
स्वामि कहे आगार किसो राखणो, किसी करवी देहीरी सार ॥३॥

बारस दिन वेलामध्ये, दोय घडी दिन जाण ।
करयो संथारो स्वामीजी, मनमां उजम आण ॥४॥

खबर थइ अणसणतणी, घणा आव्या दर्शन काज ।
वैराग्य वध्यो अति घणो, कहे धन धन ए मुनिराज ॥५॥

ढाल दशमी ।

(भव्यजीवां तुमे जिनधर्म ओलखो ॥ ए देशी.)

कोई कहवे संथारो सीजे स्वामीतणों, तिहांलगे मारे होका चा पाणीरा पच्चक्खाण । कोई कहे कुशीलरा त्याग छे, घणे छोड्याहो स्नान . समता आण । भव्यजीवां तुमे वांदो भीखु भावसुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ अन्न आरंभ नहीं आदरे, कोइकरे हो छकाय हणवारा त्याग । केइकरे लीलोतरी खाणी नहीं, इत्यादिक हो हुओ अत्यंत वैराग ॥ भ० ॥ २ ॥ केई धर्मतणा द्वेषी हूंता, ते पण अचारिज हो पाम्या तिणवार । अनम्या पण आवी नम्या, तिणपण जाणयों हो ए मार्ग तंतसार ॥ भ० ॥ ३ ॥ पडिकमणुं किया पछे कहे पूज्यजी, शिष्यने कहे हो विधसुं करो वखाण । शिष्य कहे वखाणरो सुं विशेष छे, पूज्य बोल्या हो पाछा अमृतवाण ॥ भ० ॥ ४ ॥ कणांइ आर्यायें अणसण लियो होवे, तिण ठामें हो जाय करो वखाण । मुझ अणसणमें उच्चरंगसुं, उपदेश देवो हो मोटे मंडाण ॥ भ० ॥ ५ ॥ वखाण कियो विस्तारसुं, सुखे सुता हो पाछली रातमांय । जेतोजी आया समायक करवाभणी, तिहां प्रणम्या हो पूज्यजीरा पाय ॥ भ० ॥ ६ ॥ गुणग्राम किया त्यां अति घणा, धन धन कहवे हो आप मोटा अणगार । पूज्य कहवे परिणाम चोखा माहरा, तिणरी संका हो मत आणजो लिगार ॥ भ० ॥ ७ ॥ आप पाणी पीवो पूज्यजी पहोर दिन हो जाजेरो आव्यां जाण । चरमशब्द चारु दाखा, अचरिजकारी हो बोल्या अमृतवाण ॥ भ० ॥ ८ ॥ साधु श्रावक सुणतां कह्यो, सुंसव्रत हो करावो सहेरमांय । सामा जावो साध

आने अठे, आरज्यां हो आवे छे चलाय ॥ भ० ॥ ९ ॥ चोथो शब्द इसडो कह्यो, धीरे बोल्या हो तिणरी विगत न कांइ ॥ भ० ॥ १० ॥ भारीमालजी स्वामी इम वीनवे, थाने होइजोसो स्वामी मरणाचार । किणहीमांहे मोह मत राखजो, आप किया हो घणा जीवांरो उद्धार ॥ भ० ॥ ११ ॥ अवधिज्ञान उपनुं न जाणियां, तिणसुं पाछो पूछयो नहीं लिगार । इहां जाणयो मन आश्चर्य में गयो, पाछो नहीं कियो इण वातरो विचार ॥ भ० ॥ १२ ॥ घणा गामांरा श्रावक श्राविका, दरसन करवा हो आव्या बहु ठाठ । चरमउछव कियो चूंपसुं, इसडो हुओ हो सिरियारी में ठाठ ॥ भ० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

पाली सुं चाल्या पाधरा, दोय साध आया तिणवार ।
रिख वेणीदासने कुशलजी, देखी अचरिच पाम्या नरनार ॥१॥

पग प्रणम्या श्री पूज्यरा, जब दियो माथे हाथ ।
साता पूछी पाछा निकल्या, पण मुखसुं न कीधी बात ॥२॥

इण दुसम आरा तेह में, अवध वागरियो नहीं जात ।
पण संयम आराध्यो स्वामीजी, तिणशुं कही अल्पसी बात ॥३॥

हुवे वैमानिक देवता, तिणने अवधि उपजे आय ।
इण वात में संका नहीं, भाषि गया जिनराय ॥४॥

इण लेखे पूज्यजी तणे, अवधिज्ञान उपनुं आय ।
निश्चे तो जाणे केवली, पण संका न दीसे कांय ॥५॥

ढाल इग्यारमी।

(रामको सुजस घणुं ॥ ए देशी)

दोई साध आया तिकेरे, बोले वे करजोड । दरशन दीठा दयालरारे, पुग्या मारा मनना कोड । भीखु भजो भावसुंरे ॥१॥ ए आंकणी छे ॥ रिख वेणीदास इम विनवेरे, थाने होजो सरणा चार । तुम सरणा मुझ भवेभवेरे, होजो वारंवार ॥ भी० ॥ २ ॥ जेशोही मारग जिनतणोरे, तेसोही जमायो आप । दिन दिन अधिका दीपियारे, टाल्या घणारा संताप ॥ भी० ॥ ३ ॥ अस्तुति अरिहंत सिद्धातणीरे, संभलावी श्रीकार । जाणे भक्ति कठेथी भीखुतणीरे, इण अवसर मोजार ॥ भी० ॥ ४ ॥ एटले आवी तिन आरजियांरे, वखतुजी जुमादाइजी जाण । अचरिज अधिक उपनुंरे, पूज्ये वात कही ते मलिआण ॥ भी० ॥ ५ ॥ चार तीर्थ भले भावसुंरे, देखे दरिशण दीदार । भक्ति करे भीखुतणीरे, जाणी अवसर सार ॥ भी० ॥ ६ ॥ बेठा हुआ जिणअवसरेरे, ध्यानाशन श्रीकार । जाणेक जिनजी विराजियारे, न जाणी अशाता लिगार ॥ भी० ॥ ७ ॥ तेरेखंडी त्यारी हुईरे, जाणे देवविमान । तंतोतंत मिल्यो इस्योरे, पूज्य बेठा छोड्या प्राण ॥ भी० ॥ ८ ॥ शुल्कपच्च सोहामणोरे, मास भादरवा मांय । तेरस तिथी दिन पाछलोरे, आसरे दोढपहोर गणाय ॥ भी० ॥ ६ ॥ प्रथम पद परमेसरूरे, त्यांरा कल्याणक पांच प्रकार । इणविध कल्याणक त्यांरा हूआरे, इण दुसमकाल मोजार ॥ भी० ॥ १० ॥ सिरियारी में स्वामिजीयेरे, चावी कीधीं ठाम ठाम । जन्म सुधार्‍यो युगतसुंरे, इहांरो लीजे नितप्रते

नाम ॥ भी० ॥ ११ ॥ साधतो भीखु सारखारे, आखा भरतेर मांय । हुआने होस वलीरे, आज न कोय देखाय ॥भी० ॥१२॥ सोधतातो पावे नहींरे, भीखु सरीखा साध । करडो काम पडसी चरचातणुंरे, तिणवेला आवसे याद ॥ भी० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

त्यालीसा वरसांलगें, कांइक जाजेरो जाण ।
संयम पाल्यो स्वामिजी, समतारस घट आण ॥१॥

दिन दिन अधिका दिपीया, तेज प्रताप पीछाण ।
जिन मार्ग बताव्यो जुक्तसुं, अखंड वरतावी आण ॥२॥

आंख्याआद इंद्रीतणो, रह्यो अधिको तेज ।
शरीर निरोगो निरमलो, दीठा उपजे हेज ॥३॥

किया चोमासा चूंपसुं, चातुर ने चालीस ।
भव्य जीवांरा भागरा, घणा मेट्या रागने रीस ॥४॥

किहां किहां चोमासा किया, किहां किहां कियो उपकार ।
नाम लेई निरणो कहुं, ते सुणजो विस्तार ॥५॥

दोनुं किया, तिहां अधिक हुओ उपकारजी ॥ सु० ॥ १० ॥ दोय चोमासा किया पुरमहरमें, तिहां उपकार जाजेरो जाणजी। सेंतालीस सतावने, ते गिण लीजो चतुरसुजाणजी ॥सु०॥११॥ अठार वरसें वरलु कियो, वांसे राजनगर विचारजी। पेंतीसे आमेट पादू सेंतीसेमें, तेपने सोजत सहर मंझारजी ॥ सु० ॥ १२ ॥ पनरे गाम में किया पूज्यजी, चुमालीस चोमासा सारजी। एतो परमभगता शिष्य पाटवी, घणा रह्या पूज्यरे लारजी ॥सु०॥१३॥

॥ दोहा ॥

आद हुआ आदिसरु, आदिनाथ अरिहंत।
तीजा आरा तेहमां, मुक्त गया मतीवंत ॥१॥

त्यां आद काढी जिन धर्मनी, जुगलियां वारो मिटाय।
संसारी ने धर्मनी, दीधी रीत बताय ॥२॥

आद काढी अरिहंत ज्यूं, भीखु भलाज साध।
इण दुसम आरामध्ये, लीआ अरिहंत वचन आराध ॥३॥

भव्य जीवरां भाग सुं, कियो गणो उद्योत।
मति श्रुतरा जोर सुं, घण घट घाली जोत ॥४॥

उपकार कीधो अति घणुं, ते पूरो केम केवाय।
पण थोडोसो प्रगट करुं, ते सुणजो चित्तलाय ॥५॥

ढाल तेरमी ।

(पूज्यजी पधारो हो नगरी सेविया ॥ ए देशी)

साध साधवी श्रावक श्राविका, ए थाप्या तीरथ चार हो ॥ महामुनिं ॥ जिन मारग जमायो मुनीवर ज़ुक्तसुं, घणुं पाखंड दियो नीवार हो ॥ महा० ॥ थे भलाने अवतरया हो भीखु भरतक्षेत्रमां ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लोकालोक नवतत्वतणा वली दया दान दीपाय हो ॥ महा० ॥ यांरा भेद यथातथ्य भाष्या, जिनवर ज्यूं दियो जमाय हो ॥ महा० ॥ थे० ॥ २ ॥ चारित्र दियो एक सोतीने आसरे, सघलाने संवेग चढाय हो ॥ महा० ॥ केई पाखंडमांहेसु खांचने, आण्या मारग मांय हो ॥ महा० ॥ थे० ॥ ३ ॥ जोडा कीधी मुनिवर ज़ुक्तसुं, सहस अणतीस आसरे गुणाय हो ॥ महा० ॥ निरखु न्याय बताव्यो निर्मलो, जाणे आप गया जिनराय हो ॥ महा० ॥ थे० ॥ ४ ॥ समकित शुद्धस्वरूप बतावियो, निजगुण परगुण न्याय हो ॥ महा० ॥ सावद्य निर्वद्य पीछाण न्यारा किया, नहीं दीसे किणमतमांय हो ॥ महा० ॥ थे० ॥ ५ ॥ हाडोती ढुंढाड वली कछ देसमें, मरुधर देश मेवाड हो ॥ महा० ॥ घणा रात दिवस रटे रामनाम ज्युं, आप इशडो कियो उपकार हो ॥महा०॥थे०॥६॥ परवंचन करे परभावना, शुद्ध मारग देवे देखाय हो ॥ महा० ॥ ज्ञाता अंग में अरिहंत भाखीयो, तीर्थंकर नाम गोत्र बंधाय हो ॥ महा० ॥ थे० ॥ ७ ॥ इण लेखे आपरे अति ओपतो, बंध्यो दिशे तीर्थं कर नाम गोत्र हो ॥ महा० ॥ धर्म आद काढी अरिहंत आदिनाथ ज्युं, कीयो अत्यंत उद्योत हो ॥महा०॥थे०॥८॥

आप इणभवे पण उत्तम थया, परभव में पण शोभाय हो ॥ महा० ॥ उत्कृष्टो अनुपम मोक्ष छे, आप पोंचसो तिणगति मांय हो ॥ महा० ॥ थे० ॥ ९ ॥ जन्म कल्याणक कंटालिये जाणजो, दिक्षा महोच्छव वगडी मोजार हो ॥ महा० ॥ चरमकल्याणिक सरियारी में शोभतो, ए तीनुंई जोड विचार हो ॥ महा० ॥ थे० ॥ १० ॥ वीर जिणंदरी गादी विराजिया, सुवनित सुधर्मा स्वाम हो ॥ महा० ॥ इणविध पूज्येर पाट प्रगट थया, भारीमालजीसामी ज्यारो नाम हो ॥महा०॥थे०॥ ११॥ ए चरित्र कियो भीखु अणगाररो, वगडी सहेर मोजार हो ॥ महा० ॥ संवत अढार साठा वरस में, फागण वद तेरस गरुवार हो ॥ महा० ॥ थे० ॥ १२ ॥ कोई अक्षर आघो पाछो आयो हुए, अधिको ओछो आयो हुए कोय हो ॥ महा० ॥ रिख वेणीदासजी कहे कर जोडीने, मिच्छामीदुक्कडं मोय हो ॥ महागुणी० ॥ थे० ॥ १३ ॥

॥ इति श्री भीखु चरित्र समाप्तः ॥

देखो अपने पूज्य वा पूर्व ऋषियों ने क्या क्या वाक्य कहे हैं, अहिंसा, सत्य, अदत्तादाननिवर्तन, ब्रह्मचर्य्य, निर्लोभतादि ही शिव मार्ग की साधना कही है। देखो विजयदेव सूरि ने क्या आत्महितोपदेश कहा है—

ढाल विजय देव सूरि कृत।

चेतोरे चेतो प्राणियां, मतिराचोरे रमणीरे संगके सेवोरे जिनवांणी ॥ ए आंकडी ॥

सुरतरुनीपरैं दोहिलोरे, लाधो नर अवतार। अहलो जन्म किम हारीये, कांई कीज्योरे मनमांहि विचार के॥ चेतोरे० ॥ १ ॥ पहली तो समकित सेवियेरे, जे छै धर्मनो मूल। संजम समकित वाहिरोरे, जिन भाष्योरे तुस खंडवा तुल्य के॥ चेतोरे० ॥ २ ॥ अरिहन्त देव आराधज्योरे, गुरु गिरवा शुद्ध साध। धर्म जिनेश्वर भाषियोरे, एसमकित सुरतरु समलाध के॥ चेतोरे० ॥ ३ ॥ तहत करीनें शरधज्योरे, जे भाष्यो जगनाथ। पांचों ही आश्रव परिहरो, जिम मिलियेरे शिव पुरनों साथ के॥ चेतोरे० ॥ ४ ॥ जीव वंछै सर्व जीवणोंरे, मरण न वंछै कोय। आपसमूं कर लेखवो, त्रस थावररे हणज्यो मत कोय के॥ चेतोरे० ॥ ५ ॥ अपजस अकीर्ति इण भवेरे, परभव दुःख अनेक। कूड कहतां पामीये, कांई आणोंरे, मन मांहि विवेक के॥ चेतोरे० ॥ ६ ॥ चोरी लेवे कोई पर तिणोंरे तिणथीं लागेछे पाप। तो धन कंचन किम चोरीये तेथी वांधेरे भव भवमें संताप के॥ चेतोरे० ॥ ७ ॥ महिला संगे दूहव्यारे, नवलख सन्नी उपजन्त। क्षणेक सुखरे कारणे

किम कीजेरे हिंसा मतिवंत के ॥ चेतोरे० ॥ ८ ॥ पुत्र कलत्र घर हाट नींरे, ममता मत कीज्यो फोक। जेह परिग्रह मांहि छै, ते तो छांडीरे गया बहुला लोक के ॥ चेतोरे० ॥ ९ ॥ अल्प दिवशनों पाहुणोंरे, सहुको इण संसार। इकदिन ऊठी जावणों, कुणजांणेरे किणही अवतार के ॥ चेतोरे० ॥ १० ॥ व्याधि जरा ज्यां लग नहींरे, तहां लग धर्म संभाल। धारा सजल घन वरसतां, कुण समरथरे बांधे वा पालके ॥ चेतोरे० ॥ ११ ॥ अंजलीनां जल नींपरेरे, चण चण छीजे छै आव। जावेते नहीं वाहुडे, जरा घालेरे जोवन में घाव के ॥ चतोरे० ॥ १२ ॥ मात पिता बन्धव बहूरे, पुत्र कलत्र परिवार। स्वारथ लग सहुको सगा, कोई परभवरे, नहीं राखण हार के ॥ चेतोरे० ॥ १३ ॥ क्रोध मान माया तजोरे, लोभ न करजो लिगार। समता रसपूरी रहो, वले दोहिलोरे मानव अवतार के ॥ चेतोरे० ॥ १४ ॥ आरम्भ थी छोडो आतमारे, पीवो संजम रस पूर। शिव रमणी वेगीवरो, इम भाषेरे विजयदेव सूरी के ॥ चेतोरे० ॥ १५ ॥ इति ॥

ढाल पार्श्वचन्द्र सूरि कृत।

दुल हो नर भव पामणों जीवने, दुल हो श्रावक कुल अवतारो। गुणवन्त गुरुनां संग छे दोहिलो ते पामीनें मत हारोर॥ प्राणी जीव दया व्रत पालो॥ गुरु सम सांभल आगम ज्ञानी थे। परमार्थ सांभलरे प्राणी जीव दया व्रत पालो ॥ १ ॥ आश्रव प्रति पच संवर बोल्यो, तेहनी रहस्य विचारो, आरम्भ आश्रव

संजम सम्वर, इमजांणी जीव म मारोरे ॥ प्राणी जी० ॥ २ ॥
जीव सहूते जीवणूं वंछे, मरणू न वंछे कोई, आपणे दुख छे
जिम छै परनें, हिये विमासी जोइरे ॥ प्राणी जी० ॥ ३ ॥
अंग उपाङ्ग शस्त्र धारा अणी सूं, नख चख छेदे भेदे कोई । जेहवी
वेदनां मनुष्यने होवे, तेहवी एकेन्द्रीनें होइरे ॥ प्राणी जी० ॥ ४ ॥
जोजरा पुरुषने बलवन्ततरुणो, देवे मुष्टि प्रहारो । जेदुख वेदै तेहवो
एकेंद्रिनें, लीधां हाथ मंझारोरे ॥ प्राणी जी० ॥ ५ ॥ समकित
विन गज भव सुसलारी, दया चोखै चित पाली । प्रति संसार कियो
तिणठामें, मेघकुंमर हुयो दुखटालीरे ॥ प्राणी जी० ॥ ६ ॥
अभयदान दानां मांहि मोटो, वलेदांन सुपात्रे दाख्यो । आगम
सांभलने जिनमत जोवो, मूलदया धर्म भाष्योरे ॥ प्राणी जी० ॥७॥
लोह शिला ज्यों तिरे महोदधि, कदा पश्चिम ऊगै
भानै । सहज अग्नि पण शीतल होवै, तोही हिंसा में धर्म म
जाणैरे ॥ प्राणी जी० ॥ ८ ॥ रवि आंथमियां दिवस विमासे,
अहिमुख अमृत जोवे । विषखायां वले जीवणूं वांछै तिम हिंसामें
धर्म न होवेरे ॥ प्राणी जी० ॥ ९ ॥ अग्नि सींचीनें कमल
वधारे, चीर धोवा न कादो आणे । जू कुगुरु प्रसंगे मूरख मानव,
जीवहणे धर्म जाणेरे ॥ प्राणी जी० ॥ १० ॥ आगम वेद
पुराण कुरान में कह्यो दया धर्म सारो । वलि जिनजीरा वचन
सांचाजाणूं तो, छक्काय जीवांनें मतमारोरे ॥ प्राणी जी० ॥ ११ ॥
अर्थ अनर्थ धर्म जांणीने, जीवहणे मन्द बुद्धि । पिण धर्मकाजे
छक्कायहणे त्यांरी, सरधा घणी छै ऊंधीरे ॥ प्राणी जी० ॥ १२ ॥
सूईरे नाके सींधड़ो पोवे, ते किम आघो पेसे । हिंसा मांही धर्म प्ररूपे,
ते सालो साल न बेसेरे ॥ प्राणी जी० ॥ १३ ॥ पिता विना पुत्र

उपन्नो, मा विन बेटो जायो। थाँ हिंसामें धर्म प्ररूपे, यो म्हने अचरिज आयोरे ॥ प्राणी जी० ॥ १४ ॥ पार्श्वचन्द्र सूरि भणे इण परे आणांसहित करुणा पाले। ते नर दुर्गति ना दुखटाले ज्ञान कला उजवालेरे ॥ प्राणी जी० ॥ १५ ॥

॥ इति ॥

अथ ढाल दूजी चाल तेहीज।

चैत्य मंदिर मांहि वृत्त्य ज ऊग्यो, अनन्त जीवानूं वासो। लोह कुहाड़ीले आपणछेदे, कांई करो दुर्गति वासोरे ॥ मुनिवर हिंसा धरम कांई भाखो ॥ १ ॥ सांच कहे तो ते नहीं माने, कूड कहे ते कीजे। असत्य भाषी नें हीणांचारी, ते गुरु कर आघा लीजेरे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ चारित्र पाली मुक्ति पहूंता, ते मारग नहीं थापो। मूढ मती होई जीव विराधो, न्याय करो एहवो पापोरे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ धरम उथापो नें हिंसा थापो, छकाय प्रांण लुटावो। धर्म तणूं छांटो नहीं मांहीं, अहलो जन्म गुमावोरे ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ वन में बावरी वावर मांडे, लोकांमें हुवे पुकारो। भगवन्त आगलि वावर मांड्यो लाखां कोड़ारो संहारोरे ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ उणांनें चाम चाहिजे ने मांस खाई जे पेटरे कारण खावे। वैं जीव वीराधिने मन पछतावे इणरो ज्याव न आवेरे ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ थे चाम न भीटो मांस न खाओ कांई तुम जीव हणाओ। थे भगवन्त मांथे दूषण घोलो

न्याय तुमे दुर्गति जावेरे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ खाजा लाडू सेव सुंहाली भर भर थाल्यां ल्यावो। थै त्यागी थे भोग लगावो कांई तुमे दुर्गति जावेरे ॥ मुनि० ॥ ८ ॥ केई श्रावक राते अन्न न खावे तुमे देवने कांई चढावो। मारग छोड कुमारग चाल्या एकरणी से दुख पावोरे ॥ मुनि० ॥ ९ ॥ भगवन्त बचन नीं प्रतीत नहीं छै तिणथी फैन करावो। देव लोक थी तो टरें जाणींजे निश्चै निगोद में जावोरे ॥ मुनि० ॥ १० ॥ देवरे कारणे छक्काय हणावो, गुरुरे कारण खावो। धर्मरे कारण हस हस ल्यावो, थे किणरे नांव छुडावोरे ॥ मुनि० ॥ ११ ॥ प्रीति पुराणी थांसूं पहली हूंती तिणसूं थांने चितराउं। मैं म्हारो मन निर्मल कीधो जिन मारग गुण गाऊंरे ॥ मुनि० ॥ १२ ॥ भावकरीने भगवन्त पूजो द्रव्यै दूर करावो। सुखे समाधे मोक्ष पधारो बहुला सुख जिम पावोरे ॥ मुनि० ॥ १३ ॥ साधू तो छक्कायनां पिहर थे कहिं कहिं कांई हणावो। अरज हमारी सांची मांनो फेर चोरासी में नहीं आवोरे ॥ मुनि० ॥ १४ ॥ पार्श्वचन्द्र कहे चारित्र लेई आरंभ थी मन टालो। बीर वचन थे सांचो परूपो सूधो संजम पालोरे ॥ मुनिवर हिंसा धरम कांई भाषो ॥ मुनि० ॥ १५ ॥

॥ इति ॥

अथ हुण्डी लूंकारि लिख्यते।
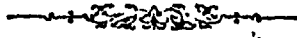
शहर जेतारण मध्ये लूंका गुजराती सरूपचन्दजी रामचदजी रा उपासरा थी हुण्डी आणी तिण में शुद्ध प्ररूपणा जाणी ने उणरे देखा देख लिखी छै।

(१) तीन ही काल का भाव केवल ज्ञानी देख्या कोई जीवने नवतत्वरे जाणपणा विना संसार समुद्र सूं तिरतो देख्यो नहीं। साख सूत्र प्रथम सूयगडांग, अध्ययन १२, गाथा १६।

(२) जीव ने अजीव रास दो कही तीसरी रास कहवे तिणने त्रिराशियो निन्नव कहीजे। सा० सू० उव्वाई, प्र० १६.

(३) जीव अजीव त्रस थावर जाणे नहीं तिणरा पचक्खाण दुपचक्खाण कह्या। सा० सू० भगवती, श० ७, उ० २.

(४) जीव अजीव ने जाणे नहीं जीव अजीव दोनां ने जाणे नहीं तिणने संजमरी ओलखना नहीं। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ४, गा० १२.

(५) सम्यक्त विना चारित्र नहीं समयक्त विना व्रत नहीं। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २८, गा० २६.

(६) ज्ञान विना दया नहीं दया चारित एक ही कह्या सा० सू० दशवैकालिक, अ० ४, गा० १०.

(७) असजती अव्रती अपचक्खाणीने सूजतो असूजतो फासु अफासु देवे तिणने एकान्त पाप कह्यो निर्जरा नथी। सा० सू० भगवती, श० ८, उ० ६.

(८) सास्वता असास्वता री खबर नहीं तिणने बोध रहित कह्यो। सा० सू० प्र० सूयगड़ांग अ० १, उ० २, गा० ४.

(९) साधु थोड़ा असाधु घणा। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ७, गा० ४८.

(१०) साधुरे सर्व थकी प्रणातिपात का त्याग छै तिणरे अपच्चक्खाणरी परिग्रह री क्रिया नहीं। सा० सू० पन्नवणा, पद २२.

(११) साधु रो आहार असावद्य कह्यो साधु रो आहार व्रत में कह्यो साधु पाप रहित छै। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ५, उ० १, गा० ९२.

(१२) भगवान् श्री महावीर स्वामी ठंडो आहार घणा दिना रो नीपणो लियो। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ८, उ० ४, गा० १३.

(१३) केवल ज्ञानी परूप्यां बिना आप आपरा परूपणा करे जिके ने किंचित मात्र जाणपणो नहीं। सा० सू० प्र० सूयगडांग, अ० १, उ० २, गा० १४.

(१४) श्रावक ने केवल ज्ञानी परूप्यां बिना दूसरा धर्म माननो नहीं। सा० सू० उव्वाई, प्रश्न २०.

(१५) समयक्ती ने धर्म केवल ज्ञानी परूप्यो माननो दूसरो माननो नहीं। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २८, गा० ३१.

(१६) केवल ज्ञानी री पाखण्डियांरी वचनां री खबर नहीं। जिकांरे घणो अक्कामरण बालमरण हांसी। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० ३६, गा० २६५.

(१७) पर वचन सूई अर्थ परमार्थ सेक थाकता रह्या सोई सर्व अनर्थ। सा० सू० उव्वाई, प्रश्न २०.

(१८) केवल्यां रो आचार सोई छद्मस्थ रो आचार, केवल्यां रो अनाचार सोई छद्मस्थ रो अनाचार। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० २, उ० ६.

(१९) वत्तव्या दोय कही—१ ससमय वत्तव्य, २ परसमय वत्तव्य। ससमय वत्तव्य की तो साधु आज्ञा देवे। परसमय वत्तव्य में सात औगुण—अनर्थ १, अहित २, असंजम भाव ३, अक्रिया ४, अनुमारग ५, उपयोग रहित ६, मिथ्यात ७। सा० सू० अनुयोगद्वार, ७ ने पूरी हुई जठे.

(२०) केवली परूपियो एकन्त धर्म कह्यो। सा० सू० प्र० सूयगड़ांग, अ० ६, गा० ७.

(२१) केवली परूपियो धर्म यथार्थ सरल शुद्ध माया कपटाई रहित। सा० सू० प्र० सूयगड़ांग, अ० ९, गा० १.

(२२) जिन करणी में किंचित मात्र हिंसा नहीं ते करणी ज्ञान री सार कही। सा० सू० प्र० सूयगडांग, अ० १, उ० ४, गा० १०.

(२३) केवल ज्ञानी भाष्यो धर्म सन्देह रहित कह्यो। सा० सू० प्र० सूयगडांग, अ० १०, गा० ३.

(२४) आपरो छान्दो रूंधे ते धर्म। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० ४, गाथा ८.

(२५) केवली परूपियो धर्म अहिंसा संजेमोत्तवो। सा० सू० दशवैकालिक, अ० १, गा० १.

(२६) अपछन्दारी प्रशंसा करे करावे करता ने भलो जाने तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ११, बो० ८१.

(२७) बालमरण री प्रशंसा करे करावे करताने भलो जाने तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ११, बो० ६१.

(२८) ग्रहस्थी ने असंजती ने असण, पाण, खादम, स्वादम, वत्थ, पडिग्गह, कम्मल, पायपुञ्छण, ए ८ बोल देवे, दिरावे, देवतां ने भलो जाने तिणने चोमासी प्रायश्चित आवे। सा० सू० निशीथ, उ० १५, बो० ७४–७५.

(२९) वोसराया ने अणवोसराया कहे अणवोसराया ने वोसराया कहे तिण ने प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० १६, बो० १३–१४.

(३०) सरीषा साधु होकर के सरीषा साधुवां ने थानक देवे नहीं दिरावे नहीं देवतां ने भलो जाने नहीं तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० १७, बो० २२३.

(३१) ग्रहस्थ री व्यावच्छ करे करावे करता ने भलो जाने तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ११, बो० ११.

(३२) सरीषी साध्वियां ने थानक देवे नहीं दिरावे नहीं देवतां ने भलो जाने नहीं तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० १७, बो० २२४.

(३३) साधु बसे तिण थानक में न्याति, अन्य न्याति, श्रावक अथवा श्राविका आधी रात वा सारी रात राखे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ८, बो० १२.

(३४) बसे तिणने तीन करण, तीन जोग सुं नहीं निषेधे तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ८, बो० १३.

(३५) ग्रहस्थी प्रते दान देवे तिणरी प्रशंसा करे तो छवकाया री हिंसा लागे। सा० सू० श्र० सुयगडांग, अ० ११, गा० २०.

(३६) विषे सहित धर्म परूपे ते बुरो ज्यूं तालपुट विष खायां बुरो। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २०, गा० ४४.

(३७) भाषा दोय कही—१ अराधक भाषा, २ विराधक भाषा। विराधक-भाषा में ४ औगुण—असंजम, अव्रत, अपडियाई, अपच्चक्खिया पाप कर्म। सा० सू० पन्नवणा, पद ११.

(३८) मिश्र भाषा बोल्यां महा मोहनी कर्म बंधे। सा० सू० दशाश्रुत स्कंध, अ० ६, बो० ६.

(३६) मिश्र भाषा छोड़े छुडावे तिणने सम्माधि कही। सा० सू० प्र० सुयगडांग, अ० १०, गा० १५.

(४०) मिश्र भाषा सर्व थकी छोडनी कही। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ७, गा० १.

(४१) मिश्र भाषारे धनीरी वचन अवक्तव्य अणविमासियेरो बोलणहार कह्यो, अज्ञानवादी कह्यो, पूछयां रो जवाब देवां असमर्थ कह्यो, मिश्र धर्म परूपणेवालो आपरो मत थापवा भणी छल बल मांडी छे। सा० सू० प्र० सुयगडांग, अ० १२, गा० ५.

(४२) साधुरी आज्ञा बारे धर्म सरदे तिणने काम भोग में खूथो कह्यो, हिंसा रो करणेवालो कह्यो। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ६, उ० ४.

(४३) साधु री आज्ञा बारे धर्म कहेसी तिणरा तप ने नेम भ्रष्ट कह्या, ने मुर्ख कह्या। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० २, उ० २.

(४४) आज्ञा बारे धर्म कहे आज्ञा मांहि पाप कहे, ए दो बोल कोई जीव ने होजो मती। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ५, उ० ६.

(४५) परवचन सुं विरुद्ध परूपणेवाले ने भगवान् निन्हव कह्यो, निन्हवांरो आचार छे। सा० सू० उव्वाई, प्र० १६.

(४६) राग द्वेष ने पाप कह्यो। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० ३१, गा० ३.

(४७) कोई कोई इम कहे साता दियां साता होवे तिवांरे श्री भगवान् छव बोल परूप्या—१ आरज मार्ग सूं वेगलो, २ सम्माधि मार्ग सूं न्यारो, ३ जैन धर्म रो हेलणा करणहार कह्यो, ४ थोड़ा सुखांरे कारणे घणा सुखां रो हारणहार कह्यो, ५ अमोक्ष रो कारण कह्यो, ६ लोहवाणियां नीपरे घणो झुरसी। सा० सू० प्र० सुयगडांग, अ० ३, उ० ४, गा० ६-७.

(४८) साधु होकर के अणुकम्पारे वास्ते त्रसजीव ने बांधे बंधावे बांधतां ने भलो जाने, छोडे छुडावे छोडतां ने भलो जाने तिणने चोमासी प्रायश्चित आवे। सा० सू० निशीथ, उ० १२, बो० १-२.

(४९) मोक्ष रो मार्ग जाने नहीं तिणने श्री भगवान् री आज्ञा रो लाभ नहीं। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ४, उ० ४.

(५०) ब्राह्मणां ने जिमायां तमतमा पहुंचे। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० १४, गा० १२.

(५१) साधुरे अठारह पाप रा सर्व थकी त्याग छे, देश थकी नहीं। सा० सू० उव्वाई, प्र० २१.

(५२) साधु रा भण्ड उपगरण परिग्रह में कह्या नहीं मुरच्छा राखे तो परिग्रह लागे। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ६, गा० २१.

(५३) साधुरे नवकोटि पचक्खाण कह्या। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ४.

(५४) आचारजां री आज्ञा विना आहार करे करतां ने भलो जाने तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० ४, बो० २२.

(५५) पुण्य पाप सूं जीव ने पचतो दीठो। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० १०, गा० १५.

(५६) पुण्य पाप ने खपावनो कह्यो। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २१, गा० छेली.

(५७) उसन्ना पासत्था ढीला ने वंदना प्रशंसा करे करावे करतां ने भलो जाने तो चोमासी प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० १३, बो० ४२–४३–४४–४५.

(५८) साधु ग्रहस्थी की औषधि करे करावे करतां ने भलो जाने तो प्रायश्चित। सा० सू० निशीथ, उ० १२, बो० १७.

(५९) समायक दोय कही—१ आगार समायक, २ अणागार समायक। सा० सू० ठाणांग, ठा० २, उ० ३, बो० ६.

(६०) चारित्र दोय कह्या—१ आगार चारित्र, २ अणागार चारित्र। सा० सू० ठाणांग, ठा० २, उ० १, बो० २५.

(६१) धर्म दोय कह्या—१ सूत्र धर्म, २ चारित्र धर्म। सा० सू० ठाणांग, ठा० २, उ० १, बो० २५.

(६२) कर्म खपावा री करणी दोय कही—१ संजम, २ तप। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २८, गा० ३६.

(६३) मार्ग दोय परूप्या—१ भगवान रो परूप्यो मार्ग, २ पाखण्डियांरो मार्ग। सा० सू० उत्तराध्ययन, अ० २३, गा० ६३.

(६४) संवर गुणने आश्रव गुण जुदा जुदा कह्या छै। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० ४, उ० २.

(६५) करणी ४ कही—१ इहलोक ने हित, २ परलोक ने हित, ३ कीर्ति श्लाघा हित, ४ निर्जरा ने हित। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ६, उ० ४.

(६६) प्रज्ञा दोय कही—१ ज्ञान प्रज्ञा, २ पचक्खाण प्रज्ञा। सा० सू० प्र० आचारांग, अ० २, उ० ४.

(६७) धर्म दोय कह्या—१ आगार धर्म, २ अणागार धर्म। सा० सू० उव्वाई, भगवान ने कोणिक राजा वन्दना करने गया जठे.

(६८) ध्यान चार कह्या—१ आर्त ध्यान, २ रुद्र ध्यान, ३ धर्म ध्यान, ४ शुक्ल ध्यान। सा० सू० उव्वाई तथा भगवती.

(६९) साधु असंजती ने ऊभो रह, बैठ, सो, आव, जाव, काम कर। ए ६ बोल साधु ने केहणा नहीं। सा० सू० दशवैकालिक, अ० ७, गा० ४७.

श्री श्री १०८ श्री जीतमलजी स्वामी कृत उपदेश की ढाल लिख्यते ।

॥ दोहा ॥

अरिहन्त देव अराधीये, निर्मल गुरु निग्रन्थ ।
धर्म जिन आज्ञा चितधरो, तत्व अमोलक तन्त ॥ १ ॥
मुढ मिथ्यात मन मोहिया, थापे हिन्सा धर्म ।
बान्दे निर्गुण देव गुरु, ते भूल्या अज्ञानी भर्म ॥ २ ॥
कहे धर्म ने कारणे, प्राण हण्यां नहीं पाप ।
देव गुरु कारणे हण्या, आज्ञा दे जिन आप ॥ ३ ॥
इम कही विरुद्ध प्ररूपता, नहीं आणे मन लाज ।
देवल प्रतिमा कारणे, करे अनेक अकाज ॥ ४ ॥
हिंसा धर्मी जीव ना, भाख्या फल भगवन्त ।
ठाम ठाम सूत्र मध्ये, ते सुणजो करि खंत ॥ ५ ॥

ढाल ।

(भवियण जोवोरे हृदय वीमासी—ए देशी)

पृथ्वी हणि देवल प्रतिमा करावे, धर्म हेते जीव मारे । त्यांने मन्द बुद्धि कह्या दसमें अंगे, वले पहले ही आश्रव द्वारेरे । कुमत्यां थे हिंसाधर्म कांई थापो ॥ ए आंकड़ी ॥ समण माहण कोई हिंसा प्ररूपे, छेदन भेदन सोग । सूयगडांग अठारमें

आख्यो, बालारा पड़सी जोगरे ॥ कु० ॥ २ ॥ आचारंगरे चौथे अध्येन, दूजे उदेसे प्रमाण। धर्म हेत हण्या दोष नहीं छे, आ अनारजरो वाणोरे ॥ कु० ॥ ३ ॥ आचारंगरे चौथे अध्येन, दूजे उदेसे जाणो। धर्म हेत कोई जीव नहीं हणनो, ओ आरज वचन प्रमाणोरे ॥ कु० ॥ ४ ॥ जीव हणे जन्म मरण मुकाण्या, पामे अहेत अबोध। आचारंगरे पहले अध्येन, पहले उदेसे सोधरे ॥ कु० ॥ ५ ॥ आचारंगरे चौथे अध्येन, पहलो उदेसो पिछाणो। धर्म हेत जीव नहीं हणनो, तीन काल जिन वाणोर ॥ कु० ॥ ६ ॥ प्रश्न व्याकरणरे पांचमें अध्येन, प्रतिमा परिग्रह में चाली। परिग्रह सेवी धर्म कहीने, कुमति हिये कांई घाली ॥ कु० ॥ ७ ॥ तीन मनोरथ श्रावक ना चाल्या, ठाणांग तीजे ठाणे। आरम्भ परिग्रह छोडण री भावना, ते सेव्यां धर्म किम जाणेरे ॥ कु० ॥ ८ ॥ दशवैकालिक धर्म अहिंसा, दया ज्ञान रो सारो। सूयगडांग पहले अध्येन, चौथे उदेसे मंझारो ॥ कु० ॥ ९ ॥ अठाईसमें उतराध्ययन में, मोक्ष ना मारग अमोल। थे देवगुरु धर्म मोलरा थापो, आहीज मोटी पोलरे ॥ कु० ॥ १० ॥ धर्म ठिकाणे जीव हणो तो, दया किसी ठौड़ पालो। कुगुरां ना बहकाया आतमने, कांय लगावो कालोर ॥ कु० ॥ ११ ॥ उतराध्ययनरे बारमें अध्येन, तीर्थ शील बतायो। थे शत्रुंज्यादिक तीरथ थापो, ओई पिण झूठ चलायोरे ॥ कु० ॥ १२ ॥ ज्ञान दरसण रा जतन करेते, यात्रा कही सुखदायो। ग्याता सूत्र पांचमें अध्येने तो थाने तो खबर न कायो ॥ कु० ॥ १३ ॥ इम ही महावीर सोमल ने, यात्रा भगवती में भाखी। शतक अठारमें दसमें उदेसे, चारित्र जतन

ते यात्रा दाखीरे ॥ कु० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम तीर्थयात्रा अमोलक जिन कह्यो आगम माहिं । ते तीर्थयात्रा थांसूं करनी न आवे, तिण सूं मांडी वीकलाईरे ॥ कु० ॥ १५ ॥ शत्रुंजय ने पर्वत कह्यो जिनेश्वर, पिण तीर्थ न कह्यो लिगारो । अन्तगढ़ ज्ञाता सूत्र माहीं, देखो पाठ उघाड़ोरे ॥ कु० ॥ १६ ॥ तीर्थ कहे तिण माथे पग देवो, तिण पर चढ़ो जूती सुधा । वले मल मूत्र तिण ऊपर नाखो, त्यांरे लेखे ते पूरा ऊंधारे ॥ कु० ॥ १७ ॥ मुख सूं कहे मैं चूर्णी टीका मानां, वले माना आगम पेंताली । तेपिण बोल्यां रो नहीं ठिकाणो, त्यांरे कर्म तणी रेख कालीरे ॥ कु० ॥१८॥ महानिशीथरे अध्येन पांच में, कमलप्रभा कह्यो सोय । सावज पाप ना सर्व जिनालय, त्याने शुद्ध न माने कोयरे ॥ कु० ॥ १९ ॥ मिथ्यातपणे द्रौपदी प्रतिमा पूजी, एक थया समयक्त पाई । गन्ध हस्त आचारज कह्यो छे, ओघ निर्युक्ति वृत्ति माईरे ॥ कु० ॥ २० ॥ अभवी संगमादिक प्रतिमा पूजे, तेहिज प्रतिमा सुर्याभ पूजे ते । जीत व्यवहार लौकिक रीत छे, ओघ निर्युक्ति वृत्ति न सूझे ॥ कु० ॥ २१ ॥ भगवन्त ने वंदवां तथा दीक्षा लेतां, कह्यो पेच्चा हियाए सुहाए ताय । तथा परलोक हियाए सुहाए, राय प्रसेणि भगवती मायोंरे ॥ कु० ॥ २२ ॥ प्रतिमा पूज तथा लाय सूं धन काढतां कह्यो पछा हियाए सुहाए । राय प्रसेणि भगवती माहिं, तिहां पेच्चा पाठ कह्यो नाहींरे ॥ कु० ॥ २३ ॥ प्रतिमा पूजे लाय सूं धन काढे, तिहां पेच्चा हियाए नहीं कांहीं । भगवन्त ने वान्दतां दीक्षा लेतां, किहांई पछा पाठ छे नाहीं ॥ कु० ॥ २४ ॥ पछा हियाए ते इणभव मांही, लौकिक खाते मंगलीक । पेच्चा हियाए ते परभव

मांही, लोकोत्तर खातो तहतीक ॥ कु० ॥ २५ ॥ कोई कहे जिन प्रतिमा पूजे, तेतो निसेस्साय पाठ मोच्च जाणे । तो खंधक नों अधिकारे लाय सूं धन काढे, त्यां पिण निसेस्साय पाठ पिछाणोंरे ॥ कु० ॥ २६ ॥ पछा पाठ लारे निसेस्साय कह्यो छे, ते इण भव मांहे द्रव्य मोच्च जोय । लाय थकी धन बारे काढ्यां, दरिद्र ते मुकावो होयरे ॥ कु० ॥ २७ ॥ राज वेसतां सुर्याभ प्रतिमा पूजी, त्यां पिण पछा पाठ लारे निसेस्साय । ते पिण इण भव में, विघ्न मेटन ने मोच्च सुहाएरे ॥ कु० ॥ २८ ॥ तुंगीया नगरी ना श्रावकां पिण, किय विघ्न मेटन ने द्रव्य मंगलीक । सरसव द्रोब दही ने अच्चत, तिम सुर्याभ कियो लोकीक ॥कु०॥२९॥ भगवन्त ने वांदतां दिच्चा लेतां, पेच्चा परलोए लारे निसेस्साय । तो लोकोत्तर खाते परलोक नी मोच्च, यो जाणो कर्म थकी मुकायरे ॥ कु० ॥ ३० ॥ भसम ग्रह उतरिया पाछे समण, निग्रन्थ नी उदे २ पूजा थाय । ए प्रतच्च पाठ कह्यो सूत्र में, ते पिण विकलाने खबर न कायोरे ॥ कु० ॥ ३१ ॥ संघपट्टो कियो जिन वल्लभ खरतरो, तिणतीर्थ यात्रा उडाई । जिन प्रतिमा थापे करि पेट भराई, भसम ग्रह प्रताप बताईरे ॥ कु० ॥ ३२ ॥ इत्यादिक प्रकरण टीका में, बोल कह्या छे अनेक । थे कहो प्रकरण टीका म्हे मानां, पिण बोल नहीं मानो एकरे ॥ कु० ॥ ३३ ॥ जद कहे प्रकरण टीका नहीं मानो, तो आंरो नाम लेवों किणन्याय । सूत्र नो उत्तर कहूं इण ऊपरी, ते सुणजों चितलायरे ॥ कु० ॥ ३४ ॥ सुखदेव ने कह्यो थावरचा पुत्र, सोमल ने कह्यो महावीर । थांरे ब्राह्मण सम्बन्धिया शास्त्र में कह्यो छे, कुलथा मास मां भेद उदाररे ॥ कु० ॥ ३५ ॥ ब्राह्मण

रा मत महावीर न माने, पिण त्यांरे मतरी साख दिखाई। ज्यूं थाने प्रकरण री पिण साख बताई, भव जीव समझावण ताई॥ कु० ॥३६॥ मुख सूं कहे प्रकरण सहु मानां, तो इतरा बोल न मानो किण लेखे। अभिन्तर आंख हिया री फूटी, आप भाख्यो सामो नहीं देखरे ॥कु०॥३७॥ वले मुख सूं कहे जिन आज्ञा मानां, पिण आज्ञा री नहीं ठीक। आज्ञा रो नाम लेई झूठ बोले, ओ प्रतक्ष पाषंडीकरे ॥कु०॥३८॥ सुर्याभ ने वांदन री आज्ञा, पिण नाटकरी आज्ञा नहीं दीध। मन माहिं नाटक ने नहीं अनुमोद्यो, रायप्रसेणि प्रसिद्धरे ॥कु०॥३९॥ व्रद्धमान जिन आगे नाटकरी, आज्ञा न दीधी तहतीक। तो प्रतिमा आगे आज्ञा किम देसी, ओ तो पिण आंवां ने नहीं छे ठीकरे ॥कु०॥४०॥ आज्ञा आज्ञा कर रह्या ए मूर्ख, आज्ञा रा मुढ अजाण। भोलां ने भरम में पाड विगोया, ते पिण डूबै कर कर ताणरे ॥ कु० ॥ ४१ ॥ जिन आज्ञा मांहि धर्म कह्यो, जिन आज्ञा बारे नहीं अंस। ए समयक्त रा मूल मुढ अजाण, हण रह्या जीव निधंसरे ॥ कु० ॥ ४२ ॥ कही कही ने कितरोयक कहूं, आज्ञा दया एक जाणो। पिण आज्ञा रो निरणो करे न्याय वादी, तो पामें पद निरवाणोरे ॥ कु० ॥ ४३ ॥ आज्ञा बारे कहे धर्म अज्ञानी, आज्ञा मांही पाप मन भ्रान्त। द्रव्य लिंगी साधां री भेष माहीं, ते पिण हिंसा धर्मी री पांतरे ॥ कु० ॥ ४४ ॥ मुख सूं कहे म्हे दया धर्मी छां, चाले हिंसा धर्म री चाल। जीव खवायां में धर्म प्ररूपे, तो मोह मिथ्यात में लालरे ॥कु०॥४५॥

इव्रत सेवायां में धर्म प्ररूपे, पाप सेव्यां कहे पुण्य। त्यां ने ही हिंसा धर्मी जानो, त्यांरी सरधा आचार जबूनरे ॥ कु० ॥ ४६ ॥ इम सांभल उत्तम नर नारी, हिंसाधर्मी नो संग न कीजे। दया धर्मी जिन आज्ञा में चाले, त्यांरो सिक्को सिर पर धर लीजेरे ॥ कु० ॥ ४७ ॥ सम्वत अठारह से नव्वे वर्षे, द्वितीय भाद्रवा सुद पांचम बुधवारो। हिंसा धर्मी उलखावण काजे, जोड कीधी वालोतरे शहर मंझारो ॥ कु० ॥ ४८ ॥

श्री कालू गणि स्तवन।

ढाल।

पूज गुन सुमरित विघन टरे विघन टरे अन्दाता आनन्द तो करे ॥ पूज० ॥ ए आंकड़ी ॥ आनन चंदा क्रांति सो इंदा गोविंद नंन्दा जेमहि परे ॥ पूज० ॥ १ ॥ गीरा वाहान कीरं मीनज नीरं पोतज चीरं चितहि धरे ॥ पूज० ॥ २ ॥ पृभ्रत आमं गोपीसामं चितलोलुपदामं नितही करे ॥ पूज० ॥ ३ ॥ चातुरमास निवास खास वीदाण दासनी आस पुर्ण तो करे ॥ पूज० ॥ ४ ॥ ईन्दु पीता मुनि निधि महि आयने कुन्दन अरजी पे मरजी तो करे ॥ पूज० ॥ ५ ॥

गणी गुण महिमा।

(स्वामीजी श्री सक्तमलजी कृत)

कवित्त।

सावण की घटा जैसी मनोहर तटा जैसी।
चक्री चक्र अटा जैसी छटाया सुहानी है॥
अमृत के कन्द जैसी सुकृत समंद जैसी।
सर्दरा का चन्द जैसी दिव्य सरसानी है॥
दिप्त मणि हीर जैसी नव्य कीर नीर जैसी।
देत भव तीर सहु भव्य मन मानी है॥
कहे मुनि सक्त आज रतगढ बीच मानो।
पुरंदर प्रभा जैसी सभा दरसानी है॥

ढाल।

(हांक जिनवर पास पियारो—ए देशी)

हां क छोगानन्द तिहारी, मोच्छव छबी मोय लागत प्यारी। नन्दनवन सम आज एह फूली, फुलवारीरे क॥ छोगानन्द तिहारी॥ ए आंकड़ी॥ श्री भिच्छू पट अष्टम सारी, गणिवर कालू गण रखवारी। मिथ्याध्वांत बिडार बास प्रगट्यो दिन कारीरे क॥ छो०॥ १॥ बरसित वाक्य सुधारसधारी, श्रमण

करत जन हरषित भारी। चात्रक दादुर मोद लहे मन, मेघ निहारीरे क ॥ छो० ॥ २ ॥ प्रभुता पूरण पेख तिहारी, संशय युत् रंभा त्रिपुरारी। ए कुण देव हरि हर ब्रह्म भयो, अवतारीरे क ॥ छो० ॥ ३ ॥ ततच्छिण वज्री अवधि डारी, जाण्यो गणपति स्तवन उचारी। अहो मम नाथ ख्यात अचल छई, किरति क्यारीरे क॥ छो० ॥ ४ ॥ चिन्ता चूर्ण मणि अनुहारी, आसा पूरन जेम मंदारी। पूर्ण चन्द गणिंद धनिंद, समी निहारीरे क॥ छो० ॥ ५ ॥गाड़ी नाथ सदारी अविचल, धरा व्योम ध्रुव तारी। कोड दिवाली तपो स्वाम, अरदास हमारीरे क ॥ छो० ॥ ६ ॥ अहि मुनि भाद्रवा सित सुखकारी, पुनम दिन गढरत्न मंझारी। पट उच्छव दिन सक्तमल सुख, लहत अपारीरे क ॥ छो० ॥ ७ ॥

कवित।

सोहनी सभा में यो मोहन सो मुखारविंद।
राजत सुरेंद चन्द पुष्प जिम लत्ता के॥
धीर वर धरणीवंत् वीर सो जिनेंद्र महि।
प्रत्यच्च पिछान भान कर्ण सुख सत्ता के॥
दर्शन के काज आज आए जन वृंद इत।
हर्ष चित गाय रहे गुण गणपत्ता के॥
मरुधर मेवाड रु मालव ढुंढाड थली।
हरियाणा पंजाब बंबे हत्ता कलकत्ता के॥१॥

सोहत श्रेष्ठ अति गुलाब खस बागन में।
दामनी दमक रही सावन सुवट्टा में॥
तारन बिच चंदरु इंद निज कल्प विच।
सभा स्थित बिज्ञवर चक्री चक्र अट्टा में॥
शची उर राजत है हार वर मोतिन को।
राम लघु भ्रात जेम सोहत सुभद्रा में॥
ऐसे ही सोहत अहो कालु गणिराज आज।
बीकानेर नग्रहु के मोछव की छट्टा में॥२॥

फिरत है शृगाल अति वन में निसंक धर।
भाजत है शिघ्र तब देखत मृगेंद को॥
करत है चोरी नित तसकरहु हर्षयुत।
जहांलों पहुंचे नाह सिपाह नरेंद को॥
भूसत है स्वान अति करत है ध्वनि हू हू।
पडत है लट्ठ तब दौडे तजि द्वंध को॥
ऐसे ही पाखंड सब पुलिंद पुलात जात।
देखत दीदार एक मूलचन्द नन्द को॥३॥

स्रगधरा छन्द।

दृष्ट्वाकालुं वसंतं, भवि जन विटपाः, फुल्लिताश्चं पकाद्याः। निष्पत्रा निर्गतांशा, खलकुलमुकटा, धौर्त्ये वीराः करीराः॥ लब्धां कालुं दिनेशं विलषति कमलं बुद्धि भाजां कदंबं ध्वांतं मिथ्यात्व वृंदं, व्रजति च शरणं, वेष धृद् वाग्गुहा सु॥ १॥

ढाल ।

श्री भिक्षु पट अष्टम सोहत, कालू गण रखवारी। धीर धरा विच धरणीधर सम, साहस जिन अवतारी ॥ जी भवि देखो देखो देखोरे, मोय स्वाम छटा सुखकारी। स्वाम छटा सुखकारी सांप्रत, खुल रही केसर क्यारी ॥ जी भवि० ॥ ए आंकडी ॥ सरस्वति कंठाभरण विराजे, कर कमला श्रीकारी । तनु तुज क्रांति सोहत सखरी, जाहिर नन्द मुरारी ॥ जी भवि ० ॥ २ ॥ चिन्ताचूरण आसापूरण, काम कुंभ अनुहारी । इष्ट मिष्ट अति श्रेष्ठ सुणी वच, हर्ष भये नर नारी ॥ जी भवि० ॥ ३ ॥ तुं प्रभु दाता त्राता ज्ञाता, कहां लग कहुं विस्तारी । कोटि अनंत विधि गुण गावे, तदपि नहीं लहे पारी ॥ जी भवि० ॥ ४ ॥ संवत उगणीसे गुणयासी वर्षे, भाद्रव पुनम भारी । सक्तमल गणि गुण गाया, बीकानेर मंझारी ॥ जी भवि० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

मूर्ख पच्चीसी ।

॥ दोहा ॥

ऊँनतु जिन चिन्ता मणि, जय चौबीस जिणन्द ।
त्रिभवन तरि तारण तिरण, शिव देसे तुस मन्द ॥ १ ॥

पीवत शुजश पदांबुजे, मन मलिन्द मकरन्द ।
हरि हरचन्द मुकन्द अज, सेवत सुर नर इन्द ॥ २ ॥

प्रगटे अर्के पंच में, तास परं पर तंत ।
भिक्षु भवाब्धि यान भल, महो भाण मति वन्त ॥ ३ ॥

भारमल रायचन्द जय, मघवा मघव मुनिन्द ।
माणक पट डालम शशी, नग पट कालु मुनिन्द ॥ ४ ॥

नन्दन बन शोभा लसे, वृक्ष वेल मुनि वृन्द ।
चाओ गन चंगा चमन, चुने पुष्प गुणचन्द ॥ ५ ॥

बन माली झाली तली, कालु कीर्ति करण्ड ।
रची समस्या पुरवा, मुर्ख पचीसी मण्ड ॥ ६ ॥

॥ कवित ॥

कूकर कूकर अन्य गलि मिल कोपहु कूक मचावत है ।
सम्प नहीं सुपने कबहु घर द्रोह जु रोल मचावत है ॥
काम पड़े गजराज लखि मिल के निज मेल दिखावत है ।
बात विचार कच्छु न करे मिल मुर्ख धन्ध मचावत है ॥१॥

गोलन गोलन टोल मिलो गल्ल गालहु गोल चलावत है।
गोलन का मत नाहीं मीले जब जूतम जूत जु आवत है॥
जाय कचेरी पुकार करे जु अन्यो अन्य दोष दिखावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २ ॥

बोध कृतान्त सुधा घट पान कीयो नहीं पर जावत है।
दीपक ग्यान जग्यो न भग्यो भ्रम ध्वान्त मिथ्या घन छावत है॥
सुरी घमन्ड वृथा मन राखत पोल का ढ़ोल बजावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ ३ ॥

शास्त्र तणो नहीं बोध जरा कुल कान के फन्द फसावत है।
साध असाध व्रताव्रत दान दया धर्म ना गम गावत है॥
निन्दक निन्दक मेल मिले तब ओछ किसी न रखावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ ४ ॥

ग्यान तणी चरचां जु चले सुण बालिश मूं मचकावत है।
कंठ तबे कग गंठ उठे मधु बाग न दाख पकावत है॥
चीर जलोक तजो खल खुन खराबहु पान करावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ ५ ॥

प्राण हरे खर खात सिता उर चीर सुनी न खटावत है।
पात्र शहि अध सेर बीषे शशी अन न सेर समावत है॥
पाषंड सूत्र सुणि कन कुकर जू हडक्या हडकावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ ६ ॥

सूत्र सुणि सठैरसी अचंभित रंग में भंग मचावत है।
बाघ सु नाद सुणि श्रवणे जिम भैंस भदी भडकावत है॥
अंग न रंग लग्यो सत संग जु खीर म मुषल बावत है।
वात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ ७ ॥

ग्यान तणी चरचा करचा करके भक्त डंड मचावत है।
वाद विवाद में काम पडे श्रुति माफक जाब न आवत हैं॥
बारव बैन भरे विष बद्दल घोर घटा घन छावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ ८ ॥

वारि मिथ्यात भरे मंद मान गिरेश अग्यान द्रु छावत है।
दम्भ नदी खलकात दिगोदिग मोह अंकुर बढावत है॥
भूमि हिये ममता जुलता कुमता जु पताड हुडावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ ९ ॥

फूल प्रचण्ड कलेश लगे कुमति फल दोजख पावत है।
पूंछ विषाण बिना पशु है शठ गैब की बात उठावत है॥
कूर लंगूर कलंक मसी अपकीरत तुण्ड लगावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १० ॥

नाग अनीत डसे विष तामस नीति की नाव डुबावत है।
आल पंपाल वेद मुखते शठ लोकिक लाज गमावत है॥
कूकर सूकर ऊंठ गधा रव सांडहु तांड सुनावत है।
वात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ ११ ॥

रीसहु खीस बडे घट में तन फाग फजीती फैलावत है ।
गेर गुणेघ गुलाल गधा बदबोह की राख उडावत है ॥
डोलचियां पिचकार मीजाज कु किरत चंग बजावत है ।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १२ ॥

जिन्दपुरी जडता अडता लडता रडता खडकावत है ।
कीच कले मतिमन्द मदान्ध बुलिन्द खलिन्द बहकावत है ॥
पाप की गांठ धरि सीरपे कर्म कंशहु वंश बढ़ावत है ।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १३ ॥

आण तजी जिन राज तणी शठ एकल ढोर फिरावत है ।
भार गयंद लदे खर पीठहु पार किमे पोहचावत है ॥
कोड अकाज करे न डरे मुनि भेष न टेक निभावत है ।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १४ ॥

एकल भेष लजांवत भागल कामण संग लुभावत है ।
जीभ तणे वश होय रशान्ध घरोघर ओतु घुमावत है ॥
सिंह गुफा कुल वालु डिग्यो गति कुकड धम दिखावत है ।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १५ ॥

डाकण डाढ लगे कुमता गुण प्राण घणा गटकावत है ।
वैर कुबोल विवाद वदि बध बारव व्याध बधावत है ॥
क्लेश कुसंग कुमार्ग कुनीति कुन्याय कपोल कु छावत है ।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १६ ॥

जालम जर्ब न पर्ब गउ पय अर्क कुतर्क फँसावत है।
गर्क फिरे मग नर्क सदा मन हरष सिला अघटाव्रत है॥
काचन पाचन जाच जरा नहीं साच असाच लखावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १७ ॥

ऊंठन के जब ब्याह मंड्यो तब रासभ रास रचावत है।
ऊंच सुरे मधुराग अलापत बानहु गीत गवाव्रत है॥
ऊंठ सुणि हरखात हिये खर बारम्बार सरावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १८ ॥

गान प्रधान विद्या तब तंत कहां लग कीर्ति कहावत है।
शम्भु सुरासुर गन्धर्व नारद गोकलनाथ कहावत है॥
किन्नर सारद बेणु पितामह मानव कौण गिणावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ १९ ॥

ऊंठन के सुण साद गधा अति घोर गर्भे गरजावत है।
बींद घणे हम देख चुके तब रूप अनूप सजावत है॥
काम कुबेर सुरिन्द शचि लछ तो तुल एक न आवत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २० ॥

भूत भयंकर भागल भेष भदाभण ते भभकावत है।
बोध विवेक विद्या बल बालक ग्यान अजा गटकावत है॥
मोह कियो मद पान अग्यान निद्रा छल छाक छकावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २१ ॥

भेष न टेक निभे भव भाड सीके घन जीव चिणावत है।
पावक प्रेम परालदहे गुण पात्र कुबोध तपावत है॥
दम्भपल सिकता कुमता भडभुंज पापण्ड ड्डुलावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २२ ॥
लापर नार तजि लजिया कजिया करती न डरावत है।
दुष्ट मसंण्ड घमन्ड छकी छकछोल छटेल छकावत है॥
बोल कुबोल न तोल जरा डमडोल जु कोल कहावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २३ ॥
राह गली इकली जु चली नहीं संग अली शरमावत है।
बेठ बाजार खरीद करे जन फन्द फरेब फसावत है॥
चित चरित्र विचित्र रचे चख चोज चराक चसावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २४ ॥
नर्क तटी जु छंटेल छंटी अगराशपटी कहलावत है।
बोलत बोल फटी चट माहि ठटी कुलटी जु कुकावत है॥
गाँन अटी भव बन्धवटी लपटी कपटी दपटावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २५ ॥
भेंस कटी फुन कीट हटी जिनराज कदे न रटावत है।
कोप कुटी मृग मेंण अटी नग नार नटी पट पावत है॥
ग्यान घटी मति जात डटी शुचि ज्वाल भटी गुण जालत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २६ ॥
कालु गणिन्द जिणन्द दिनन्द समन्द सुरिन्द सजावत है।
चन्द मलिन्द पदं अरविन्द जशं मकरन्द लुभावत है॥
वण्ड बुलिन्द पुलिन्द खलिन्द मदान्ध लखि मुरझावत है।
बात विचार कछु न करे मिल मूर्ख० ॥ २७ ॥

अथ दश दान नी ढाल।

कृपण दीन अनाथ ए, म्लेच्छादिक त्यांरी जात ए। रोग शोक ने आरत ध्यान ए, त्यांने दे अनुकम्पा दान ए॥ १॥ त्यांने दिया मूलादिक जमीकन्द ए, तिण में अनंत जीवरा फंद ए। तिण दियां केवे मिश्र धर्म ए, तिणरें उदे आया मोह कर्म ए॥ २॥ लूणादिक पृथवी काय ए, आपे अग्नि पानी ढोले वाय ए। देवे शस्त्र विविध प्रकार ए, इण दान सूं रुले संसार ए॥ ३॥ बंधीवानादिक ने काज ए, त्यांने कष्ट पड्यां देवे साज ए। थोरी बावरी भील कसाई ने ए, सचितादिक द्रव्य खवाई ने ए॥ ४॥ छोडावे दे ग्रथ ताम ए, संग्रहदान छे तिण रो नाम ए। ए तो संसार रो उपगार ए, अरिहन्त नी आज्ञा बार ए॥ ५॥ ग्रह करड़ा लागा जाण ए, सुणी लागी पनोती आण ए। फिकर घणी मरवा तणी ए, फेर कुटुम्ब तणी जतना भणी ए॥ ६॥ भयरे घालियो देवे आम ए, भय दान छे तिण रो नाम ए। ते लेवे छे कुपात्र आय ए, तिण में मिश्र किहां-थी थाय ए॥ ७॥ खर्च करे मुवारे केड ए, जिमावे न्यात ने तेड ए। तीन बारा दिन अनुमान ए, चोथो कालुणी दान ए॥ ८॥ वले वरस छ मासी आध ए, जिम जिम छे करे कुल मरयाद ए। मुवा पहिली खर्च करे कोय ए, घणा ने तृप्त करे सोय ए॥ ९॥ आरम्भ कियां नहीं धर्म ए, जिमायां पिण बंधसी कर्म ए। बुद्धिवन्तां करजो विचार ए, ए में संवर निर्जरा नहीं लिगार ए॥ १०॥ घणा री लज्जावश थाय ए, सांकडे

पञ्यां देवे ताय ए। देवे सचितादिक धन धान्य ए, तो पांचमों लज्जा दान ए ॥ ११ ॥ ए तो सावद्य दान साचात ए, ते दियो कुपात्र हाथ ए। तिण में केवे मिश्र धर्म ए, तिणथी निश्चे बंधसी कर्म ए ॥ १२ ॥ मुकलावो पहरावणी मुशाल ए, सगां ने जुवा जुवा संभाल ए। त्यांने द्रव्य देवे जश ने काम ए, गर्वदान छे तिणरो नाम ए ॥ १३ ॥ कीरतीया बादीमल्ल ए, रावलीयां रामत चल ए। नट भोपा आद विशेष ए, दान दे त्यांने द्रव्य अनेक ए ॥ १४ ॥ इण दान थी बंधे कर्म ए, मूर्ख कहवे मिश्र धर्म ए। जेनी प्रत्यच खोटी बात ए, खोटी श्रद्धा ने मूल मिथ्यात ए ॥ १५ ॥ गणिकादिक सेवे कुशील ए, दान दे त्यांने करावे केल ए। ओ तो प्रत्यच खोटो काम ए, अधर्म दान छे तिण रो नाम ए ॥ १६ ॥ सूत्र अर्थ सिखाय ए, शुद्ध मार्ग आणे ठाय ए। आपे समकित चारित्र एह ए, धर्म दान छे आठमों तेह ए ॥ १७ ॥ वली मिले सुपात्र आण ए, देवे निर्दोषण द्रव्य जाण ए। ए तो दान मुक्त रो माग ए, तिण दीयां दारिद्र जावे भाग ए ॥ १८ ॥ छक्काय मारण रा त्याग ए, कोई पचखे आंणी वैराग ए। अभयदान कह्यो जिन राय ए, धर्म दान में भलियो आय ए ॥ १९ ॥ सचितादिक द्रव्य अनेक ए, उधारा जेम दिया विशेष ए। पाछा लेवा रो मन में ध्यान ए, नवमों कायन्ती दान ए ॥ २० ॥ लेहनायत ने देवे

जेह ए, हांती नेहतादिक तेह ए। पाछो लेवण रो एकन्त काम ए, कतंती दान छे तिण रो नाम ए ॥२१॥ नवमें दशमें दान नी चाल ए, धुर वोहरा वालो ख्याल ए। ज्ञानी जाने सावद्य मांय ए, तिणमें मिश्र किहांथी थाय ए॥ २२ ॥ ए दस दान तणो विचार ए, संक्षेप कह्यो विस्तार ए। वीर नी आज्ञा में दान एक ए, आज्ञा बारे दान अनेक ए ॥ २३ ॥ असंयती घरे आवियो ए, निर्दोषण आहार वेहरावियो ए। तिण ने दियां एकन्त पाप ए, भगवती में कह्यो जिन आप ए ॥ २४ ॥ एम जाणी ने करो विचार ए, आठ अधर्म तणो परिवार ए। घणा सूत्र नी साख ए, श्री वीर गया छे भाष ए ॥ २५ ॥ धर्म अधर्म दान दोय ए, मिश्र म जाणो कोय ए। केम जाणो मिथ्यात्वी जीव ए, मूल में नहीं सम्यक्त नींव ए ॥ २६ ॥

॥ इति ॥

३२ सूत्रों के नाम।

तिण में ११ अंग सूत्र, १२ उपांग सूत्र, ४ मूल सूत्र, ४ छेद सूत्र, १ आवश्यक सूत्र।

११ अंग सूत्र का नाम।

१ आचारांग, २ सूयगडांग, ३ ठाणांग, ४ समवायांग, ५ भगवती, ६ ज्ञाता धर्म कथा, ७ उपासकदसांग, ८ अंतगडदसांग, ९ अनुत्तरोववाई, १० प्रश्न व्याकरण, ११ विपाक।

१२ उपांग सूत्र का नाम।

१ उववाई, २ रायप्रसेणि, ३ जीवाभिगम, ४ पन्नवणा, ५ जम्बूद्वीप पन्नत्ती, ६ चंद पन्नत्ती, ७ सूर पन्नत्ती, ८ निरयावलिया, ९ कप्पवडंसिया, १० पुप्फिया, ११ पुप्फचूलिया, १२ वन्हिदिशा।

४ मूल सूत्र का नाम ।

१ दशवैकालिक, २ उत्तराध्ययन, ३ नन्दी, ४ अनुयोगद्वार ।

४ छेद सूत्र का नाम ।

१ व्यवहार, २ वृहत्कल्प (वेद् कल्प), ३ निशीथ, ४ दशाश्रुतस्कंध ।

३२वां एक आवश्यक ।

ए वत्तीस सूत्र तथा इणसे मिलती वात वर्तमान काल में मानवा जोग छे ।

जीव के १४ भेदों की अल्पाबोहत।

१ जीवके तेरहमें भेदवाला सर्व सूं थोड़ा।

२ तेहथी जीव के १४में भेदवाला असंख्यातगुणां।

३ ,, ,, १०में भेदवाला संख्यातगुणां।

४ ,, ,, १२में भेदवाला विशेसाईया।

५ ,, ,, ६ट्ठे भेदवाला विशेसाईया।

६ ,, ,, ८में भेदवाला विशेसाईया।

७ ,, ,, ११में भेदवाला असंख्यातगुणां।

८ ,, ,, ९में भेदवाला विशेसाईया।

९ ,, ,, ७में भेदवाला विशेसाईया।

१० ,, ,, ५में भेदवाला विशेसाईया।

११ ,, ,, ४थे भेदवाला अनन्तगुणां।

१२ ,, ,, ३जे भेदवाला असंख्यातगुणां।

१३ ,, ,, १ले भेदवाला असंख्यातगुणां।

१४ ,, ,, २जे भेदवाला संख्यातगुणां।

पच्चीस बोल की चरचा।

१ पहले बोले गति चार ४—

१ एक गति किण में पावे ? मनुष्य में पावे।

२ दोय गति किण में पावे ? श्रावक में—मनुष्य, तिर्यंच।

३ तीन गति किण में पावे ? नपुंसक वेद में पावे, (देवता टल्यो)।

४ चार गति किण में पावे ? समचै जीव में।

२ दूजे बोले जात पांच ५—

१ एक जात किण में पावे ? एकेन्द्री में।

२ दोय जात किण में पावे ? बैक्रिय शरीर में--एकेन्द्री, पंचेन्द्री।

३ तीन जात किण में पावे ? तीन विकलेन्द्री में।

४ चार जात किण में पावे ? त्रसकाय में (एकेन्द्री टल्यो)।

५ पांच जात किण में पावे ? समचै जीव में।

३ तीजे बोले काय छव ६—

१ एक काय किण में पावे ? साधु में—त्रसकाय।

२ दोय काय किण में पावे ? बैक्रिय शरीर में—वायुकाय, त्रसकाय।

३ तीन काय किण में पावे ? तेजूलेश्या एकेन्द्री में—
पृथ्वी, पानी, बनास्पति।

४ चार काय किण में पावे ? तेजूलेश्या में पावे
(तेऊ, वाऊ टल्या)।

५ पांच काय किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे
(त्रस टल्यो)।

६ छव काय किण में पावे ? समचै जीव में।

४ चौथे बोले इन्द्री पांच ५—

१ एक इन्द्री किण में पावे ? पृथ्वीकाय में—स्पर्श।

२ दोय इन्द्री किण में पावे ? लट, गिंडाला में—रस,
स्पर्श।

३ तीन इन्द्री किण में पावे ? कीड़ी, मकोड़ा में—
घ्राण, रस, स्पर्श।

४ चार इन्द्री किण में पावे ? मांखी, मच्छर में(श्रुत-
इन्द्री टली)।

५ पांच इन्द्री किण में पावे ? समचै जीव में।

५ पांचवें बोले प्रजा छव ६—

१ एक प्रजा किण में पावे ? शरीर प्रजारे अलधिया में—
आहारप्रजा।

२ दोय प्रजा किण में पावे ? इन्द्री प्रजारे अलधिया में-
आहार, शरीर।

३ तीन प्रजा किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता में—
आहार, शरीर, इन्द्री।

४ चार प्रजा किण में पावे ? एकेन्द्री में (मन, भाषा टल्या)।

५ पांच प्रजा किण में पावे ? मांखी में पावे (मन प्रजा टल्यो)।

६ छव प्रजा किण में पावे ? समचै जीव में।

६ छठ्ठे बोले प्राण दस १०—

१ एक प्राण किण में पावे ? चउदमें गुणस्थान में–आयुष बल प्राण।

२ दोय प्राण किण में पावे ? वाटे वहता जीव में–काया, आयुष।

३ तीन प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री अपर्याप्ता में–स्पर्श, काया, आयुष।

४ चार प्राण किण में पावे ? एकेन्द्री में–स्पर्श, काया, स्वासोस्वास, आयुष।

५ पांच प्राण किण में पावे ? तेरहवें गुणस्थान में (पांच इन्द्रियां का टल्या)।

६ छव प्राण किण में पावे ? बेइन्द्री में–रस, स्पर्श, वचन, काया, स्वासोस्वास, आयुष।

७ सात प्राण किण में पावे ? तेइन्द्री में (श्रुत, चक्षु, मन टल्या)।

८ आठ प्राण किण में पावे ? चौइन्द्री में (श्रुत, मन टल्या)।

९ नव प्राण किण में पावे ? असन्नी पंचेन्द्री में (मन टल्यो)।

१० दस प्राण किण में पावे ? समचै जीव में।

७ सातवें बोले शरीर पांच ५—

१ एक शरीर किण में पावे ? एक शरीर किण ही में नहीं पावे।

२ दोय शरीर किण में पावे ? बाटे बहता जीव में—तैजस, कार्मण।

३ तीन शरीर किण में पावे ? पृथ्वीकाय में—औदारिक, तैजस, कार्मण।

४ चार शरीर किण में पावे ? वायुकाय में (आहारिक टल्यो)।

५ पांच शरीर किण में पावे ? समचै जीव में।

८ आठवें बोले योग पन्द्रह १५—

१ एक योग किण में पावे ? दीसता धान के दाणा में—औदारिक।

२ दोय योग किण में पावे ? उड़ती माखी में—औदारिक, व्यवहार भाषा।

३ तीन योग किण में पावे ? तेउकाय में—औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण।

४ चार योग किण में पावे ? बेइन्द्री में—औदारिक, औदारिक मिश्र, व्यवहार भाषा, कार्मण।

५ पांच योग किण में पावे ? वायुकाय में—औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण।

६ छव योग किण में पावे ? असन्नी में—औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, व्यवहार भापा, कार्मण।

७ सात योग किण में पावे ? केवल्यां में—सत्यमन, व्यवहार मन, सत्यभाषा, व्यवहार भापा, औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण।

८ आठ योग किण में पावे ? तीजे गुणस्थान में—नेमां ४ मन, ४ वचन की।

९ नव योग किण में पावे ? परिहार विशुद्ध चारित्र में—४ मन का, ४ वचन का, १ औदारिक।

१० दस योग किण में पावे ? तीजे गुणस्थान में—४ मन का, ४ वचन का, औदारिक, वैक्रिय।

११ इग्यारह योग किण में पावे ? नारकी में—४ मन का, ४ वचन का, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण।

१२ बारह योग किण में पावे ? श्रावक में (आहारिक, आहारिक मिश्र, कार्मण टल्या)।

१३ तेरह योग किण में पावे ? तिर्यन्च में (आहारिक, आहारिक मिश्र, टल्यां)।

१४ चउदह योग किण में पावे ? मन योगी में (कार्मण टल्यो)।

१५ पन्द्रह योग किण में पावे ? समचै जीव में।

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२—

१ एक उपयोग किण में पावे ? बाटे वहता सिद्धां में—केवल ज्ञान।

२ दोय उपयोग किण में पावे ? सिद्धां में—केवल ज्ञान, केवल दर्शन।

३ तीन उपयोग किण में पावे ? एकेन्द्री में—मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन।

४ चार उपयोग किण में पावे ? दसवें गुणस्थान में—४ ज्ञान (केवल बरजीने)।

५ पांच उपयोग किण में पावे ? बेइन्द्री में—मति, श्रुति ज्ञान, मति, श्रुति अज्ञान, अचक्षु दर्शन।

६ छव उपयोग किण में पावे ? मित्थ्याती में—३ अज्ञान, ३ दर्शन (केवल बरजीने)।

७ सात उपयोग किण में पावे ? छट्ठे गुणस्थान में—केवल बरजीने ४ ज्ञान ने ३ दर्शन।

८ आठ उपयोग किण में पावे ? अचर्म में—३ अज्ञान, ४ दर्शन, १ केवल ज्ञान।

९ नव उपयोग किण में पावे ? देवता में (मनपर्यव, केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या)।

१० दस उपयोग किण में पावे ? स्त्रीवेद में (केवल ज्ञान, केवल दर्शन टल्या)।

११ इग्यारह उपयोग किण में पावे ? अभापक में (मन पर्यव टल्यो)।

१२ बारह उपयोग किण में पावे ? समचै जीव में।

१० दसवें बोले कर्म आठ ८—

१, २, ३ कर्म किण में पावे ? किणही में नहीं पावे।

४ चार कर्म किण में पावे ? केवल्यां में—वेदनी, आयुष्य, नाम, गोत्र।

५, ६ कर्म किण में पावे ? किणही में नहीं पावे।

७ सात कर्म किण में पावे ? बारवें गुणस्थान में (मोहनी टल्यो)।

८ आठ कर्म किण में पावे ? समचै जीव में।

११ इग्यारवें बोले गुणस्थान चउदह १४—

१ एक गुणस्थान किण में पावे ? एकेन्द्री में—पहलो।

२ दोय गुणस्थान किण में पावे ? बेइन्द्री में—पहलो, दूजो।

३ तीन गुणस्थान किण में पावे ? अपर्याप्ता में—१, २, ४.

४ चार गुणस्थान किण में पावे ? देवता में—४ प्रथम।

५ पांच गुणस्थान किण में पावे ? तिर्यंच सन्नी पंचेन्द्री में—५ प्रथम।

६ छव गुणस्थान किण में पावे ? कृष्ण लेश्या में—६ प्रथम।

७ सात गुणस्थान किण में पावे ? तेजू लेश्या में—सात प्रथम।

८ आठ गुणस्थान किण में पावे ? अप्रमादी में—आठ छेला।

९ नव गुणस्थान किण में पावे ? स्त्रीवेद में—नव प्रथम।

१० दस गुणस्थान किण में पावे ? लोभ कषाय में—
दस प्रथम।

११ इग्यारह गुणस्थान किण में पावे ? चक्षु दर्शन में
(१०, १३, १४ टल्या)।

१२ बारह गुणस्थान किण में पावे ? सम्यक्ती में—
(१, ३ टल्या)।

१३ तेरह गुणस्थान किण में पावे ? संयोगी में—
(चउदमों टल्यो)।

१४ चउदह गुणस्थान किण में पावे ? समचै जीव में।

१२ बारहवें बोले पांच इन्द्री का २३ विषय—

८ विषय एकेन्द्री में—८ स्पर्श इन्द्री का।

१३ विषय बेइन्द्री में—५ रस, ८ स्पर्श इन्द्री का।

१५ विषय तेइन्द्री में—२ घ्राण, ५ रस, ८ स्पर्श इन्द्री का।

२० विषय चौइन्द्री में—(श्रुत इन्द्री का तीन टल्या)।

२३ विषय पंचेन्द्री में।

१३ तेरहवें बोले १० प्रकार की मित्थ्यात किण में पावे ?
मित्थ्याती में पावे।

१४ चउदवें बोले नवतत्व ना ११५ भेद तिणमें जीवना १४—

१ एक भेद किण में पावे ? केवल ज्ञानी में पावे चउदमों।

२ दोय भेद किण में पावे ? देवतां में पावे—१३, १४.

३ तीन भेद किण में पावे ? मनुष्य में पावे—११, १३, १४.

४ चार भेद किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे—४ प्रथम।

५ पांच भेद किण में पावे ? भापक में पावे– ६, ८, १०, १२, १४.

६ छव भेद किण में पावे ? सम्यक्ती में पावे–५, ७, ९, ११, १३, १४.

७ सात भेद किण में पावे ? पर्याप्ता में पावे– ७ पर्याप्ता का।

८ आठ भेद किण में पावे ? अनाहारिक में पावे– ७ अपर्याप्ता, १ चउदमों।

९ नव भेद किण में पावे ? औदारिक मिश्र में पावे (२, ६, ८, १०, १२ टल्या)।

१० दस भेद किण में पावे ? त्रसकाय में पावे (एकेन्द्री का ४ टल्या)।

११ इग्यारह भेद किण में पावे ? कोरा तिर्यंचरे भेदां में (११, १३, १४ टल्या)।

१२ बारह भेद किण में पावे ? असन्नी में पावे (१३, १४ टल्या)।

१३ तेरह भेद किण में पावे ? कोरा असंयती में पावे (चउदमों टल्यो)।

१४ चउदह भेद किण में पावे ? समचै जीव में।

१५ पन्द्रवें बोले आत्मा आठ ८—

१ एक आत्मा किण में पावे ? द्रव्य जीव में पावे– द्रव्य आत्मा।

२ दोय आत्मा किण में पावे ? उपसम भाव में पावे– दर्शन, चारित्र।

३ तीन आत्मा किण में पावे ? उदय भाव में पावे-
कषाय, योग, दर्शन ।

४ चार आत्मा किण में पावे ? सिद्धां में पावे-द्रव्य,
उपयोग, ज्ञान, दर्शन ।

५ पांच आत्मा किण में पावे ? निर्जरा में पावे (द्रव्य,
कषाय, चारित्र टल्या)।

६ छव आत्मा किण में पावे ? मिथ्याती में पावे
(ज्ञान, चारित्र टल्या)।

७ सात आत्मा किण में पावे ? श्रावक में पावे
(चारित्र टल्यो)।

८ आठ आत्मा किण में पावे ? साधु में पावे ।

१६ सोलहवें बोले दण्डक चौवीस २४—

१ एक दण्डक किण में पावे ? सात नारकी में पावे-
१ प्रथम ।

२ दोय दण्डक किण में पावे ? श्रावक में पावे--२०, २१.

३ तीन दण्डक किण में पावे ? शुक्ल लेश्या में पावे-
२०, २१, २४.

४ चार दण्डक किण में पावे ? तिर्यंच त्रसकाय में
पावे-१७, १८, १६, २०.

५ पांच दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री में पावे-
१२, १३, १४, १५, १६.

६ छव दण्डक किण में पावे ? त्रसकाय नपुंसक में पावे-
१, १७, १८, १६, २०, २१.

७ सात दण्डक किण में पावे ? कोरा अचक्षु दर्शन में पावे--१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८.

८ आठ दण्डक किण में पावे ? कोरा असन्नी में पावे-१२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९.

९ नव दण्डक किण में पावे ? तिर्यंच मे पावे--१२ से २० तांई।

१० दस दण्डक किण में पावे ? असन्नी में पावे--१२ से २१ तांई।

११ इग्यारह दण्डक किण में पावे ? नपुंसक वेद में पावे (१३ देवता का टल्या)।

१२ बारह दण्डक किण में पावे ? गर्भ बिना सन्नी कृष्ण लेश्या में पावे--१ से ११ तांई, बाईसमों।

१३ तेरह दण्डक किण में पावे ? सर्व देवतां में पावे--२ से ११ तांई, २२, २३, २४.

१४ चउदह दण्डक किण में पावे ? कोरा सन्नी में पावे--१३ देवतांरा, १ नारकी रो।

१५ पन्द्रह दण्डक किण में पावे ? स्त्रीवेद में पावे-१३ देवतांरा, २०, २१.

१६ सोलह दण्डक किण में पावे ? सन्नी में पावे (५ थावर, ३ विकलेन्द्री टल्या)।

१७ सतरह दण्डक किण में पावे ? चक्षु दर्शन में पावे (५ थावर, बेइन्द्री तेइन्द्री का टल्या)।

१८ अट्ठारह दण्डक किण में पावे ? तेजू लेश्या में पावे (३ विकलेन्द्री, नारकी, तेउ, वाउ का टल्या)।

१६ उगणीस दण्डक किण में पावे ? सम्यक्त्री में पावे (५ थावर का टल्या)।

२० बीस दण्डक किण में पावे ? अढाई द्वीप बारे नीचा लोक में (२१, २२, २३, २४ टल्या)।

२१ इकवीस दण्डक किण में पावे ? नीचालोक में पावे (२२, २३, २४ टल्या)।

२२ बाईस दण्डक किण में पावे ? कृष्ण लेश्या में पावे (२३, २४ टल्या)।

२३ तेईस दण्डक किण में पावे ? एकेन्द्री की आगत में (नारकी रो एक दण्डक पहलो टल्यो)।

२४ चौवीस दण्डक किण में पावे ? अव्रती में पावे।

१७ सतरहवें बोले लेश्या छव—

१ एक लेश्या किण में पावे ? तेरहवें गुणस्थान में पावे--१ शुक्ल।

२ दोय लेश्या किण में पावे ? तीजी नारकी में पावे— कापोत, नील।

३ तीन लेश्या किण में पावे ? तेउकाय में पावे--कृष्ण, नील, कापोत।

४ चार लेश्या किण में पावे ? पृथ्वी काय में पावे (पद्म, शुक्ल टल्या)।

५ पांच लेश्या किण में पावे ? सन्यासी री गत देवता में पावे (शुक्ल टल्यो)।

६ छव लेश्या किण में पावे ? समचै जीव में।

१८ अट्ठारवें बोले दृष्टी तीन ३—

१ एक दृष्टी किण में पावे ? चौथे गुणस्थान में पावे सम्यक दृष्टी।

२ दोय दृष्टी किण में पावे ? बेइन्द्री में पावे--सम्यक, मित्थ्या।

३ तीन दृष्टी किण में पावे ? समचै जीव में।

१६ उगणीसवें बोले ध्यान चार ४—

१ एक ध्यान किण में पावे ? केवल्यां में पावे—१ शुक्ल।

२ दोय ध्यान किण में पावे ? सातवें गुणस्थान में पावे—धर्म, शुक्ल।

३ तीन ध्यान किण में पावे ? श्रावक में पावे (शुक्ल टल्यो)

४ चार ध्यान किण में पावे ? समचै जीव में।

२० बीसवें बोलें ६ द्रव्य रा ३० बोल।

१ एक द्रव्य अलोक में पावे—आकाशास्तिकाय।

६ छव द्रव्य लोक में पावे।

२१ इकवीसवें बोले रास दोय २—

१ एक रास किण में पावे ? जीव में पावे—१ जीव रास।

२ दोय रास किण में पावे ? लोक में पावे।

२२ बाईसवें बोले श्रावकरा १२ व्रत—ते श्रावक में पावे।

२३ तेईसवें बोले साधुजी ना पांच महाव्रत—साधु में पावे।

२४ चौबीसवें बोले भांगा ४६—श्रावक में पावे ।

२५ पच्चीसवें बोले चारित्र पांच ५—

१ एक चारित्र किणमें पावे ? केवल्यांमें पावे—यथाख्यात ।

२ दोय चारित्र किण में पावे ? पुलाकनियंठा में पावे—सामायक, छेदोस्थापनीय ।

३ तीन चारित्र किण में पावे ? छट्ठे गुणस्थान में पावे—सामायक, छेदोस्थापनीय, परिहार विशुद्ध ।

४ चार चारित्र किण में पावे ? लोभकषाय में पावे (१ यथाख्यात टल्यो) ।

५ पांच चारित्र किण में पावे ? साधु में पावे ।

निवेदनम्।

प्रिय पाठकवृन्द !

आप लोगों से निवेदन करने में आता है, कि इस पुस्तक के छपवाने का मुख्य कारण यह है कि आप लोग इसको जयणायुत पढ़ेंगे तो सम्यक्त्व चारित्रादि का बहुधा लाभ उठावेंगे। श्रीवीतरागदेव का निर्मल मार्ग रागद्वेप रहित है, संसार का रस्ता अलग और मुक्ति का रस्ता अलग है। असंयती जीवों का जीवना वान्छे सो राग, मरणा वान्छै वो द्वेष, और संसारमयी समुद्र से तिरना वान्छे सो श्रीवीतरागदेव का धर्म है। जिन आज्ञा में धर्म आज्ञा वाहर अधर्म है ऐसा सरधना उसका नाम सम्यक्त्व है, जिस कर्त्तव्य में जिन आज्ञा नहीं है उस कर्त्तव्य से कदापि धर्म नहीं हो सकता है।

जब कोई कहे, ऐसा समझते हो तो फिर द्रव्य खर्च कर पुस्तकें क्यों छपाई ? उसका जवाब यह है कि हम श्रावक लोग देसव्रती हैं, सर्वव्रती नहीं हैं, हमारे जो सावद्य कार्य के त्याग हैं वे व्रत हैं जिसके त्याग नहीं वे आव्रत हैं, श्रावक तो अनेक कुकर्म, हिंसा, झूंठ, चोरी, स्त्री संग, परिग्रहादि अनेक तरह के सावद्य कार्य करता है लेकिन धर्म कदापि नहीं समझता है। पुस्तक छापना, छपवाना, द्रव्य खर्च करना आदि जो जो जिन आज्ञा बाहर के कार्य हैं वे सब सावद्य हैं, उससे एकान्त पाप कर्म ही उपार्जन होता है, इसलिये ये सब सांसारिक व्यवहार हैं, धर्म तो जयणायुत ज्ञान चरचा सीखने, सिखलाने और अनुमोदना करने से होता है। इसलिए पाठकों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक में कोई गलती किसी जगह रही हो तो उसे गुणीजन शुद्ध रीति से जयणायुत पढ़ें पढ़ावेंगे।

विशेष विनय यह है कि कृपाकर इस पुस्तक को उघाड़े मुख तथा दीपक के चान्दने में न बांचें।

आपका हितेच्छू

श्रावक धनसुखदास हीरालाल आंचालिया।